09.08.2017

षोडश माला, खंड 26, अंक 17 **बुधवार, 9 अगस्त, 2017**
18 श्रावण, 1939 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद

(हिन्दी संस्करण)

बारहवां सत्र

(सोलहवीं लोक सभा)

(खंड 26 में अंक 11 से 19 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

09.08.2017

सम्पादक मंडल

उत्पल कुमार सिंह
महासचिव
लोक सभा

ममता केमवाल
संयुक्त सचिव

अमर सिंह
निदेशक

इन्दु बक्शी
संयुक्त निदेशक

उमा कालरा
संपादक

© 2017 प्रतिलिप्यधिकार लोक सभा सचिवालय

लोक सभा सचिवालय की पूर्व स्वीकृति के बिना किसी भी सामग्री की न तो नकल की जाए और न ही पुन: प्रतिलिपि तैयार की जाए, साथ ही उसका वितरण, पुन: प्रकाशन, डाउनलोड, प्रदर्शन तथा किसी अन्य कार्य के लिए इस्तेमाल अथवा किसी अन्य रूप या साधन द्वारा प्रेषण न किया जाए, यह प्रतिबंध केवल इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोप्रति, रिकॉर्डिंग आदि तक ही सीमित नहीं है। तथापि, इस सामग्री का केवल निजी, गैर-वाणिज्यिक प्रयोग हेतु प्रदर्शन, नकल और वितरण किया जा सकता है बशर्ते कि सामग्री में किसी प्रकार का परिवर्तन न किया जाए और सभी प्रतिलिप्यधिकार (कॉपीराइट) तथा सामग्री में अंतर्विष्ट अन्य स्वामित्व संबंधी सूचनाएं सुरक्षित रहें।

लोक सभा वाद-विवाद के हिन्दी संस्करण का अनुवाद कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence**) आधारित सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन की सहायता से किया गया है और सटीक अनुवाद उपलब्ध कराने के लिए यथोचित प्रयास किए गए हैं। तथापि,** हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जाएगी। इसमें सम्मिलित मूलत: अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में दिए गए भाषणों का हिन्दी अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जाएगा। पूर्ण प्रामाणिक संस्करण के लिए कृपया लोक सभा वाद-विवाद का मूल संस्करण देखें।

09.08.2017

विषय-सूची

षोडश माला, खंड 26, बारहवां सत्र, 2017 / 1939 (शक)

अंक 17, बुधवार, 9 अगस्त, 2017 / 18 श्रावण, 1939 (शक)

विषय	पृष्ठ संख्या
सेशेल्स के संसदीय शिष्टमंडल का स्वागत	7
अध्यक्ष द्वारा उल्लेख	
राष्ट्रपिता और भारत छोड़ो आंदोलन के शहीदों को श्रद्धांजलि	8
अध्यक्ष द्वारा टिप्पणी	
भारत छोड़ो आंदोलन की 75 वीं वर्षगांठ का स्मरणोत्सव	9
अध्यक्ष द्वारा संबोधन	9-15
भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ के स्मरणोत्सव के अवसर विशेष चर्चा	16-110
श्री नरेन्द्र मोदी	16-26
श्रीमती सोनिया गांधी	27-29
डॉ.एम. तंबिदुरै	30-35
प्रो. सुगत बोस	36-43

श्री आनंदराव अडसुल	43-48
श्री थोटा नरसिम्हम	49-50
श्री ए.पी. जितेन्द्र रेड्डी	51-53
श्रीमती रमा देवी	54-55
श्री प्रेम दास राई	56
श्री कौशलेन्द्र कुमार	57-58
श्री विजय कुमार हांसदाक	59
श्री अजय मिश्रा टेनी	60
श्री एन. के. प्रेमचन्द्रन	61-65
श्री भैरों प्रसाद मिश्र	66
श्री जोस के. मणि	67
श्री पी. करूणाकरन	68-72
श्री तथागत सत्पथी	73-75
कुँवर हरिवंश सिंह	76
श्री एच.डी. देवगौडा	77-78
श्री जय प्रकाश नारायण यादव	79-80
श्री प्रेम सिंह चन्दूमाजरा	81
डॉ. अरुण कुमार	82-83
श्री पी.आर. सुन्दरम	84
श्री ई.टी. मोहम्मद बशीर	85
श्री बलभद्र माझी	86-87
श्री मेकापति राजा मोहन रेड्डी	88
डॉ. ममताज संघमिता	89
श्री मल्लिकार्जुन खड़गे	90-94

श्री कपिल मोरेश्वर पाटील 95-96
श्री अश्विनी कुमार चौबे 97-100
श्री भर्तृहरि महताब 101-108
संकल्प – स्वीकृत हुआ 109-110

निधन संबंधी उल्लेख 111

प्रश्नों के लिखित उत्तर 112

तारांकित प्रश्न संख्या 321 से 340

अतारांकित प्रश्न संख्या 3681 से 3910

09.08.2017

लोक सभा के पदाधिकारी

अध्यक्ष

श्रीमती सुमित्रा महाजन

माननीय उपाध्यक्ष

डॉ. एम. तंबिदुरै

सभापति तालिका

श्री अर्जुन चरण सेठी

श्री हुक्मदेव नारायण यादव

श्री आनंदराव अडसुल

श्री प्रहलाद जोशी

डॉ. रत्ना डे (नाग)

श्री रमेन डेका

श्री कोनाकल्ला नारायण राव

श्री हुकुम सिंह

श्री के.एच. मुनियप्पा

डॉ. पी. वेणुगोपाल

महासचिव

श्री अनूप मिश्र

लोक सभा वाद-विवाद

लोक सभा

बुधवार, 9 अगस्त, 2017 / 18 श्रावण, 1939 (शक)

लोक सभा पूर्वाह्न ग्यारह बजे समवेत हुई।

[**माननीय अध्यक्ष** *पीठासीन हुईं*]

09.08.2017

सेशेल्स के संसदीय शिष्टमंडल का स्वागत

[अनुवाद]

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, सर्वप्रथम मुझे एक घोषणा करनी है। मुझे अपनी ओर से तथा सभा के माननीय सदस्यों की ओर से सम्मानित अतिथि के रूप में हमारे देश की यात्रा पर आए नेशनल असेम्बली ऑफ सेशेल्श के स्पीकर माननीय पैट्रिक पिल्ले और सेशेल्श गणतंत्र के संसदीय शिष्टमंडल के सदस्यों का स्वागत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। वे मंगलवार, 8 अगस्त, 2017 को भारत पहुंचे| वे इस समय विशेष प्रकोष्ठ में बैठे हैं। सोमवार, 14 अगस्त, 2017 को भारत से प्रस्थान से पूर्व वे दिल्ली के अतिरिक्त जयपुर का भी भ्रमण करेंगे।

हम अपने देश में उनके सुखद एवं लाभप्रद प्रवास की कामना करते हैं। हम उनके माध्यम से सेशेल्श की नेशनल असेम्बली, सरकार और मैत्रीपूर्ण जनता का अभिनंदन करते हैं और उन्हें अपनी शुभकामनाएं देते हैं।

09.08.2017

पूर्वाह्न 11.03 बजे

अध्यक्ष द्वारा उल्लेख

राष्ट्रपिता और भारत छोड़ो आंदोलन के शहीदों को श्रद्धांजलि

[हिन्दी]

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, आज का दिन स्मरणीय है क्योंकि आज हम 'भारत छोड़ो' आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। 9 अगस्त, 1942 के दिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने 'भारत छोड़ो' आंदोलन का शंखनाद कर पूरे राष्ट्र को साम्राज्यवादी शासन की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए समस्त देशवासियों को एक साथ खड़े होने का आह्वान किया था।

इस अवसर पर हम राष्ट्रपिता और स्वाधीनता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले सभी शहीदों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

अब सभा स्वाधीनता सेनानियों की पुण्य स्मृति में थोड़ी देर मौन खड़ी रहेगी।

पूर्वाह्न 11.03 ¾ बजे

(तत्पश्चात सदस्यगण थोड़ी देर मौन खड़े रहे।)

———————

09.08.2017

<u>पूर्वाह्न 11.04 बजे</u>

<u>अध्यक्ष द्वारा टिप्पणी</u>

भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ का स्मरणोत्सव

[हिन्दी]

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, आज 9 अगस्त है। आज 'भारत छोड़ो' आंदोलन के 75 वर्ष पूरे हो गए हैं। यह हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण अवसर है। इसलिए मुझे लगता है कि जैसे हम साधारणतः पहले प्रश्न काल चलाते हैं, लेकिन इस 75 वर्षों की भावना के कारण आज हम प्रश्न काल न चलाते हुए, इस दिन पर सभी की भावनाओं को व्यक्त करने के लिए इस दिन को एक स्पेशल ओकेज़न के तौर पर इस समय को निर्धारित कर के इस पर चर्चा शुरू करते हैं।

———————

<u>पूर्वाह्न 11.05 बजे</u>

अध्यक्ष द्वारा संबोधन

[हिन्दी]

माननीय अध्यक्ष : भारत की आज़ादी के 70 वर्ष पूर्ण होने पर एवं स्वतंत्रता संघर्ष के सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव "भारत छोड़ो आंदोलन " के 75 वर्ष पूर्ण होने पर उन क्षणों को सभा के सभी सदस्य एवं समस्त देशवासियों के साथ पुनः स्मरण करते हुए मुझे गर्व की अनुभूति हो रही है। हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में सन् 1942 में इसी दिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने ऐतिहासिक "भारत छोड़ो आंदोलन " शुरू करने का आह्वान करते हुए, भारत से अंग्रेजों की सुव्यवस्थित वापसी की मांग की, जिसने विदेशी हुकूमत की नींव हिला दी। जिसके कारण हम विदेशी शासन से अपनी मातृभूमि को आज़ाद करा सके। यद्यपि

09.08.2017

भारत छोड़ो आंदोलन स्वतंत्रता से पूर्व अंतिम आंदोलन था, पर भारत में स्वतंत्रता के लिए किए गए आंदोलनों का इतिहास बहुत लम्बा है। यह सच है, एक समय भारत में ब्रिटिशों की हुकूमत हो गयी थी, पर इससे बड़ा सच यह है कि पहले दिन से ही जहां-जहां भी यानी जैसे ही अंग्रेजों की यह मानसिकता भारतीयों की समझ में आयी वहां-वहां भारत को स्वतंत्र कराने के प्रयास भी तुरन्त आरम्भ हो गए थे। जहां ब्रिटिश अपनी औपनिवेशिक सत्ता का आनंद ले रहे थे, वहीं स्थानीय शासक, किसान, बुद्धिजीवी, आम जनता एवं विभिन्न राज्यों के सैनिकों के मन में स्वराज्य की भावना उमड़ रही थी। जगह-जगह विदेशी शासन के ख़िलाफ़ विभिन्न रूपों में जन आक्रोश झलकता था। इस परचक्र के ख़िलाफ़ सतत आक्रोश फूट रहा था। इसमें ओडिशा का पाइक विद्रोह, वे स्वाधीनता की मशाल बनने के लिए आतुर थे। दक्षिण भारत में धीरन चिन्नमलई, कट्टबोमन और झारखण्ड के संथाल विद्रोह के बारे में भी सभी ने सुना है। रामसिंह कूका भी उन्हीं में से एक स्वतंत्रता आंदोलनकारी थे। महान स्वतंत्रता सेनानियों को सब लोग जानते थे, परन्तु ऐसे अनेक स्वतंत्रता सेनानी हुए हैं, जिनके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। कर्नाटक के किट्टूर की रानी चेन्नमा हो, श्यामजी कृष्ण वर्मा हो, पूर्ववर्ती बंगाल की मतंगिनी हाजरा हो, नागालैण्ड की रानी गैडिनलियू हो और कितने ही ऐसे नाम या मैं कहूं वासुदेव बलवंत फड़के, महाराष्ट्र का एक सामान्य मजदूर बाबू गेनू, ऐसे कई नाम हैं, ऐसे लोग हैं, जिन्होंने स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिए, लेकिन गुमनाम रहे। महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक का घोष वाक्य "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर ही रहूंगा "। वहां से जो शुरूआत होती है तो गांधी जी का जो कथन था- "हर भारतीय को खुद को एक स्वतंत्र व्यक्ति मानना चाहिए।" यह भावना उन्होंने अगस्त क्रांति के समय व्यक्त की थी। इस सब से यह बात समझ में आती है कि किस तरह से जगह-जगह हो रहे छोटे-छोटे आंदोलनों को समेट कर राष्ट्रव्यापी आह्वान सन् 1942 में हुआ। भारत छोड़ो आंदोलन में करेंगे या मरेंगे का नारा देकर स्वतंत्रता की इस लड़ाई को गति दी थी। यह एक ऐसा आंदोलन था, जब अंग्रेजों को यह एहसास हो गया कि अब भारत में राज करना सम्भव नहीं है। मैं पटना के सचिवालय में तिरंगा फहराने

वाले उन वीर शहीदों के साहस, आत्मत्याग और बलिदान का स्मरण करते हुए अत्यंत अभिभूत हूं, जिन्होंने ब्रिटिश पुलिस की गोलियों की परवाह न करते हुए सचिवालय पर तिरंगा फहराकर भारत की स्वतंत्रता की पूर्व उद्घोषणा कर दी। ऐसी ही साहसिक घटनाएं देश के अन्य शहरों मुंगेर हो, मुर्शिदाबाद हो, सतारा हो, बलिया हो, ऐसे अनेक छोटे शहरों और इलाकों ने अपने आपको ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र घोषित कर दिया था।

8 अगस्त, 1942 की देर शाम मुम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान की बैठक में भारत छोड़ो आंदोलन प्रस्ताव पेश हुआ। उसी रात्रि को अंग्रेजों भारत छोड़ो के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से मुहर लग गई। 90 मिनट के अपने भाषण में महात्मा गांधी जी ने स्पष्ट कर दिया था कि करेंगे या मरेंगे। ब्रिटिश सरकार ने आधी रात में एक के बाद एक धरपकड़ शुरू कर दी। व्यापक गिरफ्तारियों से राष्ट्र हतप्रभ जरूर हुआ, लेकिन मृत नहीं हुआ, भावना जीवित थी। भारत छोड़ो आंदोलन की सबसे बड़ी सफलता यह थी कि इस आंदोलन ने देश के बुद्धिजीवी वर्ग के साथ-साथ गाँव-देहात के करोड़ों किसान, मजदूर और नौजवानों की चेतना को झकझोरा एवं उनको प्रत्यक्ष रूप से इस स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा था।

आज हम भारत छोड़ो आंदोलन में शहीद हुए उन बेनाम वीरों को श्रद्धांजलि देते हैं, जिनके हृदय में देशभक्ति, उसकी भावना, सदा सर्वदा प्रज्ज्वलित होने वाली मशाल उनके मन में जलती थी और जिनकी आंखों में स्वतंत्र नवभारत के सपने थे। उन वीरों, महापुरुषों, संत आत्माओं के दृष्टिकोण को समझने, अपनाने एवं उनके प्रचार-प्रसार करने का पुनीत कर्तव्य हम सभी का है, क्योंकि यह जो भाव है, मैं मानती हूं कि कई नाम ऐसे निकलेंगे। आज हम-आप यहां बैठे हैं और चर्चा करेंगे। आप अगर अपने घर में दादी-नानी से कथाएं सुनें, दादा जी से कथा सुनें, ताऊ जी से कुछ पूछें या अपने गांव में जाकर चर्चा करेंगे तो पता चलेगा कि हर घर से कुछ न कुछ बलिदान हुआ है। हो सकता है कि किसी ने क्रांतिकारियों को बचाने के लिए अपना घर बेच दिया हो, बलिदान न दिया हो, मगर अपना घर बेच दिया, सर्वस्व समर्पण कर दिया। गांधी जी की कथा मैंने सुनी है कि उनके प्रवचन जब अंत में झोली घूमती थी

तो महिलाएं तुरंत अपने गले में पड़ी चेन को उतार कर उस झोली में डालती थीं, वे सोचती नहीं थीं। यह भी एक प्रकार से सर्वस्व का दान सामान्य से सामान्य व्यक्ति ने उस समय किया है। एक प्रकार से हर घर में ये भाव उस समय थे। यह होता था। मैं तो कहूंगी कि उस समय ही होता था, ऐसा नहीं है। आज भी है, हमें जगाना पड़ेगा। क्योंकि मैंने अपनी आंखों से देखा है। मैं आपको एक बात बताना चाहूंगी कि यह तो मैंने उस समय सुना कि एक महिला को जब कहा गया कि उस समय केसरी पर प्रतिबंध था। मैं एक भाव बताती हूं। केसरी पर प्रतिबंध था। मेरे गांव में ही चर्चा थी। मुझे ही दादी-नानी ने कहा कि केसरी पर प्रतिबंध लग गया। अब केसरी घर पर कैसे आएगा। महाराष्ट्र के लोगों को भी मालूम है कि केसरी पढ़ना घर-घर में एक ऐसा भाव था। क्योंकि उसमें जो लिखा जाता था, उसमें भाव था। अग्रलेख लिखते समय लोकमान्य तिलक को यह संदेशा आया कि आपके पुत्र की मृत्यु हो गई है। अग्रलेख लिखते समय इधर से उधर न देखते हुए उन्होंने एक ही वाक्य बोला था कि चलो "स्वतंत्रता संग्राम के इस होम में मेरे घर का एक कंडा समर्पित हो गया" गोहरी शब्द का था एक कंडा। यह भाव से लिखा जाता था। इसलिए मुझे मालूम है कि जब ब्रिटिश शासन ने केसरी पर प्रतिबंध लगाया कि उसे कोई नहीं पढ़ेगा, तब एक घर में चर्चा चल रही थी। वह आज के शासकीय नौकरशाहों को भी समझना चाहिए। यह हुआ कि मैं तो शासकीय नौकर हूं, सर्विस करता हूं, मध्यम वर्ग का व्यक्ति हूं और घर में चर्चा शुरू हो गई कि अब क्या करेंगे। कैसे केसरी लगाएंगे, कैसे पढ़ेंगे और लगाना है यह ही नहीं, खरीदना है। क्योंकि वह भी एक प्रकार से मदद है, फ्री में नहीं लेना है। उस वक्त जब यह चर्चा शुरू हो गई तो घर में जो महिला थी, उसने कहा कि इसमें क्या बात है। आप अपने नाम से केसरी मत लीजिए, मेरे नाम से तो केसरी आ ही सकता है। घर में दूसरी बात शुरू हो गई कि आप तो पढ़ी-लिखी नहीं हो। उन्होंने जवाब दिया कि तो क्या हुआ, आप पढ़कर सुना दीजिए। किंतु मेरे नाम से इस घर में केसरी आएगा। घर-घर में यह भाव था। लेकिन आज यह भाव मरा भी नहीं है। मैं दूसरी बात जो आपसे कहना चाहूंगी, थोड़ी विस्तार में जरूर है। यह भाव मरा नहीं है।

मैं आपको अपनी आंखों देखी बताती हूं, स्वातंत्र्य वीर सावरकर, किसी-किसी के द्वारा उन पर भी प्रश्न चिह्न लगते हैं। मगर जो भाव है, उन्होंने एक प्रकार से सर्वस्व होम किया था। परंतु स्वातंत्र्य वीर सावरकर पर जब सिनेमा बन रहा था, सुधीर फड़के का नाम हम बहुत लोग जानते हैं, वह सिनेमा बना रहे थे और उसके लिए वह गांव-गांव जाकर पैसा एकत्रित कर रहे थे। उनके मन में भाव था कि स्वातंत्र्य वीर की कहानी मुझे देश के सामने लानी है। मैं अपनी आंखों देखी बताती हूं, हमारे इंदौर में भी वह आये थे और वहां उन्होंने सभा भी की। उनका कार्यक्रम हुआ और कार्यक्रम के बाद उन्होंने कहा कि मैं वीर सावरकर पर सिनेमा बनाना चाहता हूं, पिक्चर बनाना चाहता हूं। मैं गांव-गांव जा रहा हूं, धन संग्रह कर रहा हूं और आप जो भी कुछ मुझे दे सकें, दे दें। जो दे सकते थे, हरेक ने कुछ न कुछ डिक्लेयर किया, किसी ने चैक दिया, किसी ने कुछ दिया। एक सामान्य घर की महिला उस समय वहां आई, मैं देखती रह गई कि यह क्या करेगी। उसने कहा मेरे यहां बैंक अकाउंट में बहुत कुछ तो नहीं है, मगर यह एक-एक सोने की चूड़ी बस मेरे पास है और वह उन्होंने झोली में डाल दी कि मेरी तरफ से सावरकरजी का सिनेमा बनाइये। क्योंकि मैं मानती हूं और जानती हूं कि वह क्या थे। यह भाव तो आज भी है, बस इसे जाग्रत करने की आवश्यकता है। जिस जोश, साहस, संकल्प, आस्था, दृढ़निश्चय और आत्मविश्वास के साथ हमने आजादी पाई थी, उन्हीं गुणों को पुनः आत्मसात करके हम अपने सपनों का सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम, उत्कृष्ट, सशक्त, समृद्ध एवं विश्वस्तरीय भारत बना सकते हैं।

हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने उस समय कहा था - अंग्रेजों भारत छोड़ो। मेरे मन में आज एक भाव है, आज जब हम सब लोग यहां बैठे हैं, हम एक प्रकार से जन प्रतिनिधि हैं। हम लाख-लाख लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मुझे याद है कि छत्रपति शिवाजी के लिए एक वाक्य बोला गया था, एक सेनानी ने कहा था कि आप लड़ाई पर नहीं जाओगे, क्यों नहीं जाओगे, आप आगे नहीं जाओगे। एक बहुत प्रसिद्ध वाक्य उन्होंने मराठी में कहा था - लाख मेलेतरी चालतील लाखाच्या पोशिंदा मरून चालणार नाहीं। यानी लाखों लोग मरे तो चलेगा, लेकिन महाराज आप लाखों लोगों को पोषण देने वाले हो। वह पोषण

यानी कोई अन्न प्रदान करना नहीं, मगर एक मानसिक पोषण भी होता है। हम सब लोग लाख-लाख लोगों के जन प्रतिनिधि हैं, हमें जाग्रत रहना है। मुझे आज ऐसा लगता है कि तब हमने कहा था - अंग्रेजों भारत छोड़ो, परंतु अब हमें भारत जोड़ो आंदोलन की जरूरत है। एक ऐसा आंदोलन जो कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक देश के सभी हिस्सों में चलाया जाए, ताकि हम एक सबल और संगठित भारत का निर्माण कर सकें। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने एक ऐसे भारत का सपना देखा था, जिसमें समावेशी विकास हो, हमें विकास के लाभों को देश के सभी भागों तक पहुंचाना है और अभाव को दूर करने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। महात्मा गांधी जी ने उस समय कहा था कि निर्धनतम वर्ग की ओर सबसे पहले ध्यान दिया जाना चाहिए। जिसे एक प्रकार से पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने दोहराया था - पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना और विकास पहुंचाना, यह अंत्योदय की कल्पना की थी।

मैं आप सबसे इतना ही कहना चाहूंगी कि आज हम यहां विचार करेंगे, हम यहां अपनी-अपनी बात रखेंगे, परंतु हम सब लोग उसमें यह भाव रखें कि राष्ट्र के लिए कुछ बोल रहे हैं। एक दिन यह सब कुछ उन्नत होकर, हम अपने आपको उन्नत करेंगे, अपने विचारों को उन्नत करेंगे तो ही हम लाखों के प्रतिनिधि कहलाने लायक रहेंगे। इसलिए मैं इतना ही कहूंगी कि आज एक बात ध्यान रखें कि लोकमान्य तिलक ने उस समय कहा था - स्वराज्य माझ्या जन्मसिद्ध अधिकार आहेत, तो मी मिडवीनच। स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर रहूंगा। आज हमें एक बात सोचनी आवश्यक हो गई है और हम सब सोचें कि सुराज मेरा परम कर्तव्य है और मैं उसे पूरा करूंगा ही। इस भावना के साथ मैं आप सबसे निवेदन करूंगी कि हम अपने-अपने विचार इस विषय पर रखें।

उसके बाद सबसे आखिर में, मुझे मालूम है कि कुछ लोगों के मन में भाव है, आज एक ऐसी घटना भी हो गई है, मगर मैं वह महिला गृहिणी के नाते आप को कहती हूँ कि कई बार हमने यह भी देखा है कि घर की गृहिणी कहती है कि सब दुखों को एक साथ बाजू में रखो, अभी बाजू में रखो और उस दुख को बाजू में रख कर के अपने पूरे कुटुम्ब का विचार करो अगर कुछ आवश्यक है। मैं आज वही कहूंगी कि पूरे

राष्ट्र का विचार हमें पहले करना है। अपना दुख अपने पास है, हमारी इस चर्चा के बाद उसको व्यक्त करेंगे ही तो हम आज राष्ट्र के लिए एक प्रकार का एक संकल्प लेंगे। आज हम 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। अंग्रेजों को हमने कहा था कि भारत छोड़ो, मगर किस लिए कहा, स्वतंत्रता तो मिली पांच साल बाद, सन् 1947 में तो आने वाले पांच साल में हम क्या कर रहे हैं। जब स्वतंत्रता की वह 75वीं वर्षगांठ आएगी, इसके लिए संकल्प करना पड़ेगा। मैं चर्चा के लिए आप सबको आमंत्रित करती हूँ।

09.08.2017

<u>पूर्वाह्न 11.21 बजे</u>

भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ के स्मरणोत्सव के अवसर पर विशेष चर्चा

[हिन्दी]

माननीय अध्यक्ष : माननीय प्रधान मंत्री जी।

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी) : आदरणीय अध्यक्ष महोदया, मैं आपका और सदन के सभी आदरणीय सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ और हम सब आज गौरव भी महसूस कर रहे हैं कि अगस्त क्रांति का स्मरण करने का इस सदन के पवित्र स्थान पर हम लोगों को सौभाग्य मिला है। हम में से बहुत से लोग हैं, जिन्हें शायद अगस्त क्रांति, नौ अगस्त और उन घटनाओं का स्मरण होगा, लेकिन उसके बाद भी हम लोगों के लिए भी पुनः स्मरण एक प्रेरणा का कारण बनता है। सामाजिक जीवन में ऐसी महत्वपूर्ण घटनाओं का बार-बार स्मरण, जीवन की भी अच्छी घटनाओं का बार-बार स्मरण, जीवन को एक नई ताकत देता है, राष्ट्र जीवन को भी एक नई ताकत देता है। उसी प्रकार से हमारी जो नई पीढ़ी है, उन तक भी यह बात पहुंचाना हम लोगों का कर्तव्य रहता है। पीढ़ी दर पीढ़ी इतिहास के इन स्वर्णिम पृष्ठों को उस समय के माहौल को, उस समय के हमारे महापुरुषों के बलिदान को, कर्तव्य को, सामर्थ्य को, आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने का भी हर पीढ़ी का दायित्व रहता है। जब अगस्त क्रांति के 25 साल हुए, 50 साल हुए, देश के सभी लोगों ने उन घटनाओं का स्मरण किया था। आज 75 साल हो रहे हैं और मैं इसे बड़ा महत्वपूर्ण मानता हूँ और इसलिए मैं अध्यक्ष महोदया जी का आभारी हूँ कि आज हमें यह अवसर मिला है। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में 09 अगस्त एक ऐसी अवस्था में है, इतने व्यापक और इतने तीव्र आंदोलन की अंग्रेजों ने भी कल्पना नहीं की थी। महात्मा गांधी एवं सभी वरिष्ठ नेता जेल चले गए और वही पल था कि अनेक नए नेतृत्व ने जन्म लिया। लाल बहादुर शास्त्री, राम मनोहर लोहिया, जय प्रकाश

नारायण आदि अनेक वीर युवाओं ने उस समय जो खाली जगह थी, उसको भरा और आंदोलन को आगे बढ़ाया।

इतिहास की ये घटनायें हम लोगों के लिए एक नई प्रेरणा, नया सामर्थ्य, नया संकल्प, नया कर्तव्य जगाने के लिए किस प्रकार से अवसर बनें, यह हम लोगों का निरन्तर प्रयास रहना चाहिए। वर्ष 1947 में देश आजाद हुआ, एक प्रकार से वर्ष 1857 से लेकर वर्ष 1947 तक आजादी के आन्दोलन के अलग-अलग पड़ाव आये, अलग-अलग पराक्रम हुए, अलग-अलग बलिदान हुए। उतार-चढ़ाव भी आये, अलग-अलग मोड़ पर से यह आन्दोलन गुजरा, लेकिन वर्ष 1947 की आजादी के पहले वर्ष 1942 की घटना एक प्रकार से अन्तिम व्यापक आन्दोलन था, अन्तिम व्यापक जन संघर्ष था और उस जन संघर्ष ने आजादी के लिए देशवासियों को सिर्फ समय का ही इन्तजार था, वह स्थिति पैदा कर दी थी। जब हम आजादी के इस आन्दोलन की ओर देखते हैं तो वर्ष 1942 एक ऐसी पीठिका तैयार हुई थी, वर्ष 1857 का स्वतंत्रता संग्राम, एक साथ देश के हर कोने में आजादी का बिगुल बजा था। उसके बाद महात्मा गाँधी का विदेश से लौटना, लोकमान्य तिलक का "पूर्ण स्वराज" और "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है", के भाव को प्रकट करना। वर्ष 1930 में महात्मा गाँधी का दांडी मार्च, नेताजी सुभाष बोस द्वारा आजाद हिन्द फौज की स्थापना, अनेक वीर भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू, चन्द्रशेखर आजाद, चाफेकर बंधु अनगिनत वीर अपने-अपने समय पर बलिदान देते रहे। इन सारों ने एक पीठिका तैयार की और इस पीठिका का परिणाम था कि बयालीस ने देश को एक उस छोर पर लाकर रख दिया कि अब नहीं तो कभी नहीं, आज नहीं होगा तो फिर कभी नहीं होगा, यह मिजाज देशवासियों का बन गया था। इसके कारण उस आन्दोलन में इस देश का छोटा-मोटा हर व्यक्ति जुड़ गया था। कभी लगता था कि आजादी का आन्दोलन एक ऐलीट क्लास के द्वारा चल रहा है, लेकिन बयालीस की घटना, देश का कोई कोना ऐसा नहीं था, देश का कोई वर्ग ऐसा नहीं था, देश की कोई सामाजिक अवस्था ऐसी नहीं थी कि जिसने इसे अपना न माना हो और गाँधी के शब्दों को लेकर वे चल पड़े थे। यही तो आन्दोलन था, जब अन्तिम स्वर

में बात आई कि "भारत छोड़ो" और सबसे बड़ी बात है कि महात्मा गाँधी के पूरे आन्दोलन में जो भाव कभी प्रकट नहीं हो सकता था, पूरे गाँधी के चिन्तन-मनन और विचार-आचार को देखें, उससे हटकर घटना घटी। इस महापुरुष ने कहा कि "करेंगे या मरेंगे।" गाँधी के मुंह से "करेंगे या मरेंगे" शब्द देश के लिए अजूबा था और इसलिए गाँधी को भी उस समय कहना पड़ा था और उन्होंने यह शब्द कहा था कि आज से आपमें हर एक को, स्वयं को एक स्वतंत्र महिला या पुरुष समझना चाहिए और इस प्रकार काम करना चाहिए मानो आप स्वतंत्र हैं। मैं पूर्ण स्वतंत्रता से कम किसी भी चीज पर संतुष्ट होने वाला नहीं हूँ। हम करेंगे या मरेंगे। ये बापू के शब्द थे और बापू ने स्पष्ट भी किया था कि मैंने अपने अहिंसा के मार्ग को छोड़ा नहीं है, लेकिन आज स्थिति ऐसी है और उस समय जन-सामान्य का दबाव ऐसा था कि बापू के लिए भी उसका नेतृत्व संभालते हुए उन जन-भावनाओं के अनुकूल इन शब्दों का प्रयोग करना पड़ा था।

मैं समझता हूँ कि उस समय समाज के जब सभी वर्ग जुड़ गए - गाँव हो, किसान हो, मज़दूर हो, टीचर हो, स्टूडैंट हो, हर कोई इस आंदोलन के साथ जुड़ गए और 'करेंगे या मरेंगे' की बात कहते थे। [अनुवाद] बापू तो यहाँ तक कहते थे कि अंग्रेज़ों की हिंसा के कारण कोई भी शहीद होता है तो उसके शरीर पर एक पट्टी लिखनी चाहिए - 'करेंगे या मरेंगे,' और वह इस आज़ादी के आंदोलन का शहीद है, इस प्रकार की ऊंचाई तक इस आंदोलन को बापू ने ले जाने का प्रयास किया था। उसी का परिणाम था कि भारत गुलामी की जंजीरों से मुक्त हुआ। देश उस मुक्ति के लिए छटपटा रहा था। नेता हो या नागरिक, किसी की इस भावना की तीव्रता में कसू भर भी अंतर नहीं था। मैं समझता हूँ कि देश जब उठ खड़ा होता है, सामूहिकता की शक्ति जब पैदा होती है, लक्ष्य निर्धारित होता है और निर्धारित लक्ष्य पर चलने के लिए लोग कृत-संकल्प होकर चल पड़ते हैं तो 1942 से 1947 - पाँच साल के भीतर बेड़ियाँ चूर-चूर हो जाती हैं और माँ भारती आज़ाद हो जाती है।

रामवृक्ष बेनीपुरी ने एक किताब लिखी है - 'ज़ंज़ीरें और दीवारें।' उस परिस्थिति का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है कि एक अद्भुत वातावरण पूरे देश में बन गया था।

उस पल को उन्होंने शब्दांकित किया था -

> "हर व्यक्ति नेता बन गया और देश का प्रत्येक चौराहा 'करो या मरो' आंदोलन का दफ्तर बन गया। देश ने स्वयं को क्रांति के हवन कुंड में झोंक दिया। क्रांति की ज्वाला देश भर में धू-धू करके जल रही थी। बंबई ने रास्ता दिखा दिया, आवागमन के सारे साधन ठप हो चुके थे, कचहरियाँ वीरान हो चली थीं। भारत के लोगों की वीरता और ब्रिटिश सरकार की नृशंसता की खबरें सब दूर पहुँच रही थीं। जनता ने 'करो या मरो' के गांधीवादी मंत्र को अच्छी तरह दिल में बैठा दिया था। "

उस समय का यह वर्णन उस किताब में जब पढ़ते हैं, तब पता लगता है कि किस प्रकार का माहौल होगा। एक वह समय था, और यह बात सही है कि ब्रिटिश उपनिवेशवाद का आरंभ हिन्दुस्तान में हुआ और इस घटना के बाद उसका अंत भी हिन्दुस्तान से हुआ था। भारत आज़ाद होना सिर्फ भारत की आज़ादी नहीं थी। 1942 के बाद, विश्व के जिन-जिन भूभाग में, अफ्रीका और एशिया में इस उपनिवेशवाद के खिलाफ एक ज्वाला भड़की, उसका प्रेरणा केन्द्र भारत बन गया था। इसलिए भारत सिर्फ भारत की आज़ादी नहीं, आज़ादी की ललक विश्व के कई भागों में फैलाने में भारत के जनसामान्य का संकल्प और कर्तृत्व कारण बन गया था और कोई भी भारतीय इस बात के लिए गर्व कर सकता है। उसको हमने देखा कि एक बार भारत आज़ाद हुआ, तो उसके बाद एक के बाद एक उपनिवेशवाद के सारे लोगों के झंडे ढहते गए और आज़ादी सब दूर पहुँचने लगी। कुछ ही वर्षों में दुनिया के इन सारे देशों को आज़ादी प्राप्त हो गई। यह काम बताता है कि यह भारत की प्रबल इच्छाशक्ति का एक उत्तमोत्तम परिणाम था। हमारे लिए सबक यही है कि जब हम एक बनकर के, संकल्प लेकर के, पूरे सामर्थ्य के साथ निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जुड़ जाते हैं तो यह देश की ताकत है कि हम देश को संकटों से बाहर निकाल देते हैं, देश को गुलामी की ज़ंजीरों से बाहर निकाल सकते हैं, देश को नए लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तैयार कर सकते हैं, यह इतिहास ने बताया है। उस समय इस पूरे आंदोलन को और पूज्य बापू

के व्यक्तित्व को लगते हुए राष्ट्र कवि सोहनलाल द्विवेदी की जो कविता है, बापू का सामर्थ्य क्या है, उसको वह प्रकट करती है। उस कविता में उन्होंने कहा था -

चल पड़े जिधर दो डग, मग में
चल पड़े कोटि पग उसी ओर;
गड़ गयी जिधर भी एक दृष्टि,
गड़ गए कोटि दृग उसी ओर,

जिस तरफ गांधी के दो कदम चल देते थे, उस तरफ अपने आप करोड़ों लोग चल पड़ते थे। जिधर गांधी जी की दृष्टि टिक जाती थी, उधर करोड़ों-करोड़ आंखें देखने लग जाती थीं। इसलिए, आज जब हम वर्ष 2017 में हैं, हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि आज हमारे पास गांधी नहीं हैं, उस समय जो ऊंचाई वाला नेतृत्व था, वह आज हमारे पास नहीं है। लेकिन, सवा सौ करोड़ देशवासियों के विश्वास के साथ बैठे हुए हम सब लोग मिल करके उन सपनों को पूरा करने का प्रयास करें तो मैं मानता हूं कि गांधी के सपनों को, उन स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को पूरा करना मुश्किल काम नहीं है। आज का यह अवसर इसी बात के लिए है। उस समय भी वर्ष 1942 में जो वैश्विक हालात थे, वह भारत की आज़ादी के लिए बड़ा अनुकूल था। जो भी उस इतिहास से परिचित हैं, उन्हें मालूम है। मैं समझता हूं कि आज फिर से एक बार वर्ष 2017 में, जबकि 'क्वीट इंडिया मूवमेंट' के हम 75 साल मना रहे हैं, उस समय विश्व में वह अनुकूलता है, जो भारत के लिए बहुत सहानुकूल है और उस अनुकूल व्यवस्था का फ़ायदा हम जितनी जल्दी उठा लें, जैसे उस समय विश्व के कई देशों के लिए हम प्रेरणा का कारण बने थे, अगर आज हम मौका ले लें, तो आज फिर से एक बार हम विश्व के कई देशों के लिए उपयोगी हो सकते हैं, प्रेरणा का कारण बन सकते हैं, ऐसे मोड़ पर आज हम खड़े हैं। वर्ष 1942 और 2017, इन दोनों के वैश्विक परिवेश में भारत का महात्म्य, भारत के लिए अवसर समान रूप से खड़े हैं और उस समय हम इस बात को कैसे लें, इस जिम्मेदारी को कैसे लें। मैं मानता हूं, इतिहास के इन प्रकरणों से, सामर्थ्य से

प्रेरणा लेकर कि हमारे लिए दल से बड़ा देश होता है, राजनीति से ऊपर राष्ट्र नीति होती है, मेरे अपने से ऊपर सवा सौ करोड़ देशवासी होते हैं, अगर उस भाव को लेकर हम उठ चलें, हम सब मिल कर आगे बढ़ें तो हम इन समस्याओं के खिलाफ सफलतापूर्वक आगे बढ़ सकते हैं। हम इस बात से इनकार कैसे कर सकते हैं कि भ्रष्टाचार रूपी दीमक ने देश को कैसे तबाह करके रखा हुआ है। राजनीतिक भ्रष्टाचार हो या सामाजिक भ्रष्टाचार हो या व्यक्तिगत भ्रष्टाचार हो, कल क्या हुआ, कब किस ने क्या किया, इसके विवाद के लिए समय बहुत होते हैं, लेकिन आज इस पवित्र पल में हम आगे कोई ईमानदारी का उत्सव मना सकते हैं, ईमानदारी का संकल्प लेकर क्या देश का नेतृत्व कर सकते हैं, क्या देश को ले जा सकते हैं, यह समय की मांग है, देश के सामान्य मानवी की मांग है।

गरीबी, कुपोषण, अशिक्षा, ये हमारे सामने चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों को हम सरकार की चुनौतियां न मानें। ये चुनौतियां देश की हैं, देश के गरीब के सामने संकट भरे सवाल खड़े हैं और इसलिए देश के लिए जीने-मरने वाले, देश के लिए संकल्प करने वाले हम सब लोगों का दायित्व बनता है कि इसको पूरा करने के लिए हम कुछ मुद्दों पर एक हों। वर्ष 1942 में भी अलग-अलग धारा के लोग थे, हिंसा में विश्वास करने वाले भी लोग थे। नेताजी सुभाष बाबू की सोच अलग थी, लेकिन '42 में सबने एक स्वर से कह दिया था कि आज तो गांधी के नेतृत्व में 'क्वीट इंडिया', यही हमारा मार्ग है।

हमारा लालन-पालन तथा विचारधारा अलग-अलग रही होंगी, लेकिन यह समय की मांग है कि हम कुछ बिंदुओं से देश को मुक्त कराने के लिए संकल्प का अवसर लेकर चलें; चाहे गरीबी हो, भुखमरी हो, अशिक्षा हो या अंधश्रद्धा हो। महात्मा गांधी जी के ग्राम स्वराज का सपना कितना पीछे छूट गया है। क्या कारण है कि लोग गांवों को छोड़ कर शहरों की ओर बस रहे हैं? गांव की उस चिंता को तथा गांधी जी के मन में जो गांव था, क्या हम अपने भीतर उनको पुनर्जीवित कर सकते हैं? गांव, गरीब, किसान, दलित, पीड़ित, शोषित, वंचितों के जीवन के लिए अगर हम कुछ कर सकते हैं, तो हमें मिलकर करना है। यह सवाल मेरे और तेरे का नहीं है, यह सवाल उस पार या इस पार का नहीं है, बल्कि यह सवाल हम

सभी का है, देश के सवा सौ करोड़ देशवासियों का है और सवा सौ करोड़ देशवासियों के जन प्रतिनिधियों का है। यही वह समय होता है जब हम लोगों को कुछ कर लेने के लिए वह प्रेरणा हमें शक्ति देती है और हम उसको लेकर आगे चल सकते हैं।

हम यह भी जानते हैं कि देश में जाने-अनजाने अधिकार भाव प्रबल होता चला गया और कर्तव्य भाव लुप्त होता गया। राष्ट्र जीवन के अंदर, समाज जीवन के अंदर अधिकार भाव का महात्म्य उतना ही रहते हुए, अगर हम कर्तव्य भाव को थोड़ा सा भी कम आंकने लगेंगे, तो समाज जीवन में कितनी बड़ी मुसीबतें होंगी, दुर्भाग्य से हम लोगों के वे ऑफ लाइफ तथा हमारे चरित्र में कुछ चीजें घुस गई हैं, जिनमें हमें बुराई नहीं लगती कि हम लोग गलत कर रहे हैं। अगर मैं चौराहे पर रेड लाइट को छोड़कर या क्रॉस करके निकल जाता हूं, तो मुझे लगता ही नहीं है कि मैं कानून तोड़ रहा हूं। मैं कहीं पर थूक देता हूं, गंदगी करता हूं, लेकिन हमें लगता ही नहीं है कि मैं गलत कर रहा हूं। हम अपने कर्तव्य भाव से तथा एक प्रकार से हमारे जहन में, हमारे वे ऑफ लाइफ में इस प्रकार के नियमों को तोड़ना, कानूनों को तोड़ना एक स्वभाव बनता चला जा रहा है। छोटी-छोटी घटनाएँ हिंसा की ओर ले जा रही हैं। अस्पताल में किसी डॉक्टर द्वारा अगर किसी पेशेंट का कुछ हुआ, डॉक्टर दोषी है या नहीं है, अस्पताल दोषी है या नहीं है, रिश्तेदार वहां जाते हैं और अस्पताल में आग लगा देते हैं, डॉक्टर को मारते पीटते हैं। हर छोटी-मोटी घटना, अगर कहीं एक्सीडेंट हो गया, तो हम कार को जला देते हैं, ड्राईवर को मार देते हैं। यह जो प्रवृत्ति चली है, लॉ एबाइडिंग सिटिजन के नाते हमारा कर्तव्य होना चाहिए तथा हम मानने लगे हैं कि यह हमारे से छूट गया है। हमारे वे ऑफ लाइफ में ऐसी चीजें घुस गई हैं, जैसे हमें लगता ही नहीं है कि हम कानून तोड़ रहे हैं। इसलिए, यह लीडरशिप की जिम्मेवारी होती है, समाज के अंदर हम सभी की जिम्मेवारी होती है कि समाज के अंदर इन दोषों से मुक्ति दिला करके कर्तव्य भाव को जगाएं।

शौचालय एवं स्वच्छता का विषय मजाक का नहीं है। हम उन माँ बहनों की परेशानी को समझें, तब हमें पता चलता है कि जब शौचालय नहीं होता है और रात के अंधेरे का इंतजार करते समय कैसे

दिन बिताना पड़ता है। शौचालय बनाना एक काम है, लेकिन समाज की मानसिकता बदल करके शौचालय का उपयोग करना, जन सामान्य की शिक्षा के लिए आवश्यक है। हमें इस भाव को जगाना होगा। यह भाव कानूनों से नहीं होता है, कानून बनाने से नहीं होता है। कानून उसमें मदद कर सकता हैं, लेकिन कर्तव्य भाव जगाने से ज्यादा हो सकता है। इसलिए, हम लोगों को यह काम करना होगा। हमारे देश की माताएं-बहनें देश के अंदर तथा कम से कम देश पर जो उनका बोझ है, देश को कम से कम जिनका बोझ सहना पड़ता है। अगर वह कोई वर्ग है, तो इस देश की माताएं, बहनें व महिलाएं हैं। उनकी सामर्थ्य हमें कितनी ताकत दे सकती है, उनकी भागीदारी हमारे विकास के अंदर हमें कितना बल दे सकती है? पूरी आजादी के आंदोलन में देखिए, महात्मा गांधी जी के साथ जहां-जहां भी आंदोलन हुआ, अनेक ऐसी माताएं-बहनें उस आंदोलन का नेतृत्व करती थीं और देश को आजादी दिलाने में हमारी माताओं- बहनों का उस युग में भी उतना ही योगदान था। आज भी राष्ट्र के जीवन में उनका उतना ही योगदान है। उसको आगे बढ़ाने की दिशा में हम लोगों को कर्तव्य से आगे बढ़ना चाहिए।

यह बात सही है कि 1857 से 1942, हमने देखा कि आजादी का आंदोलन अलग-अलग पड़ाव से गुजरा, उतार-चढ़ाव आए, अलग-अलग मोड़ आए, नेतृत्व नये-नये आते गए। कभी क्रांति का पक्ष ऊपर हो गया, कभी अहिंसा का पक्ष ऊपर हो गया, कभी दोनों धाराओं के बीच टकराव का भी माहौल रहा, तो कभी दोनों धारायें एक-दूसरे की पूरक भी हुईं। यह सारा 1857 से 1942 का कालखंड हम देखें, एक प्रकार से इनक्रीमेंटल था, धीरे-धीरे बढ़ रहा था, धीरे-धीरे फैल रहा था, धीरे-धीरे लोग जुड़ रहे थे। लेकिन 1942 टू 1947, वह इनक्रीमेंटल चेंज नहीं था, एक डिसरप्शन का एनवायर्नमेंट था। उसने सारे समीकरणों को खत्म करके आजादी देने के लिए अंग्रेजों को मजबूर कर दिया था, जाने के लिए मजबूर कर दिया था। 1857 से 1942, धीरे-धीरे कुछ होता रहता था, चलता रहता था, लेकिन 1942 टू 1947, वह स्थिति नहीं थी।

09.08.2017

हम समाज, जीवन में देखें, पिछले 100-200 सालों का इतिहास देखें, तो विकास की यात्रा एक इनक्रीमेंटल रही थी। धीरे-धीरे दुनिया आगे बढ़ रही थी, धीरे-धीरे दुनिया अपने आपको बदल रही थी। लेकिन पिछले 30-40 सालों में दुनिया में अचानक बदलाव आया, जीवन में अचानक बदलाव आया और टेक्नोलॉजी ने बहुत बड़ा रोल प्ले किया। कोई कल्पना नहीं कर सकता कि इन 30-40 सालों में दुनिया में जो बदलाव आया है, व्यक्ति के जीवन में, मानव जीवन में, सोच में जो बदलाव आया है, 30-40 साल पहले हमें नजर भी नहीं आता था। हम डिसरप्शन वाला एक पॉजिटिव चेंज अनुभव करते हैं। जिस प्रकार से इनक्रीमेंटल से बाहर निकल करके एकदम से एक हाई जम्प की तरफ चले गए, मैं समझता हूं कि 2017-2022, क्विट इंडिया के 75 साल और आजादी के 75 साल के बीच के 5 साल, 1942 टू 1947 का जो मिजाज था, वही मिजाज अगर हम दोबारा देश में पैदा करें, 2017 टू 2022 आजादी के 75 साल मनायेंगे, तब देश की आजादी के वीरों की जो कामनायें थीं, उन सपनों को पूरा करने के लिए हम अपने आपको खपायेंगे, हम अपने संकल्प को लेकर आगे चलेंगे। मुझे विश्वास है कि न सिर्फ हमारे देश का भला होगा, लेकिन जैसे 1942 टू 1947 की सफलता के कारण दुनिया के अनेक देशों को लाभ मिला, आजादी की ललक पैदा हुई, ताकत मिली, भारत को आज दुनिया के कई देश, एक भाग ऐसा है, जो भारत को उस रूप में देख रहा है। अगर हम 2017 टू 2022 जो कि हम लोगों की जिम्मेदारी का कालखंड है, अगर हम विश्व के सामने भारत को उस ऊंचाई पर लेकर जाते हैं, तो विश्व का एक बहुत बड़ा समुदाय है, जो किसी नेतृत्व की तलाश में, मदद की तलाश में है, किसी के प्रयोगों से सीखना चाहता है, भारत उस पूर्ति के लिए सामर्थ्यवान है, अगर उसको करने के लिए हम कोशिश करें, तो मैं समझता हूं कि देश की बहुत बड़ी सेवा होगी। इसलिए एक सामूहिक इच्छाशक्ति जगाना, देश को संकल्पबद्ध करना, देश के लोगों को साथ जोड़ कर चलना और इन पांच वर्षों के महत्व को हम अगर आगे बढ़ायेंगे, तो मुझे विश्वास है कि हम कुछ मुद्दों पर सहमति बना करके बहुत बड़ा काम कर सकते हैं।

हमने अभी-अभी जीएसटी देखा। यह मैं बार-बार कहता हूं, यह मेरा सिर्फ राजनीतिक स्टेटमेंट नहीं है, यह मेरा कन्विक्शन है। जीएसटी की सफलता किसी सरकार की सफलता नहीं है, जीएसटी की सफलता किसी दल की सफलता नहीं है, जीएसटी की सफलता इस सदन में बैठे हुए लोगों की इच्छाशक्ति का परिणाम है। चाहे यहां बैठे हों, चाहे वहां बैठे हों, यश सब को जाता है, राज्यों को जाता है, देश के सामान्य व्यापारी को जाता है और उसी के कारण यह सम्भव हुआ है। देश का राजनीतिक नेतृत्व अपनी प्रतिबद्धता के कारण इतना बड़ा काम कर लेता है, यह दुनिया के लिए अजूबा है। जीएसटी विश्व के लिए बहुत बड़ा अजूबा है, उसके स्केल को देखते हुए, अगर यह देश इसे कर सकता है, तो और भी सारे निर्णय यह देश मिल-बैठ करके कर सकता है। सवा सौ करोड़ देशवासियों के प्रतिनिधि के रूप में, सवा सौ करोड़ देशवासियों को साथ लेकर, 2022 को संकल्प में लेकर अगर हम चलेंगे, मुझे विश्वास है कि जो परिणाम हमें लाना है, उस परिणाम को हम लाकर रहेंगे। महात्मा गांधी ने नारा दिया था, 'करो या मरो। ' उस समय का सूत्र था, करेंगे या मरेंगे। 2017 में 2022 का भारत कैसा हो, यह संकल्प लेकर चलना है कि हम लोग, हम सब मिलकर देश से भ्रष्टाचार दूर करेंगे और करके रहेंगे। हम सभी मिलकर गरीबों को उनका अधिकार दिलाएंगे और दिलाकर रहेंगे। हम सभी मिलकर नौजवानों को स्वरोजगार के और अवसर देंगे और देकर रहेंगे। हम सभी मिलकर देश से कुपोषण की समस्या को खत्म करेंगे और करके रहेंगे। हम सभी मिलकर महिलाओं को आगे बढ़ने से रोकने वाली बेड़ियों को खत्म करेंगे और करके रहेंगे। हम सभी मिलकर देश से अशिक्षा खत्म करेंगे और करके रहेंगे, और भी कई विषय हो सकते हैं।

उस समय का मंत्र था - करेंगे या मरेंगे। हम आजाद हिन्दुस्तान में 75 साल बाद आजादी का पर्व मनाने की ओर आगे बढ़ रहे हैं तब - करेंगे और करके रहेंगे, के संकल्प को लेकर आगे बढ़ेंगे। यह संकल्प किसी दल का नहीं, यह संकल्प किसी सरकार का नहीं, यह संकल्प सवा सौ करोड़ देशवासियों, सवा सौ करोड़ देशवासियों के जन प्रतिनिधियों, सबका मिलकर संकल्प बनेगा तो मुझे विश्वास है कि संकल्प

से सिद्धि के पांच साल 2017 से 2022, आजादी के 75 साल, आजादी के दीवानों का सपना पूरा करने के सामर्थ्यवान समय को हम प्रेरणा का कारण बनाएंगे। आज अगस्त क्रांति दिवस पर उन महापुरुषों का स्मरण करते हुए, उनके त्याग, तपस्या, बलिदान का स्मरण करते हुए, उस पुण्य स्मरण से आशीर्वाद मांगते हुए, हम सब मिलकर कुछ बातों पर सहमति बनाकर देश को नेतृत्व दें, देश को समस्याओं से मुक्त करें, सपने, सामर्थ्य, शक्ति और लक्ष्य की पूर्ति के लिए आगे बढ़ें।

माननीय अध्यक्ष जी, इसी अपेक्षा के साथ मैं फिर एक बार आपका आभार व्यक्त करता हूं और आजादी के दीवानों को नमन करता हूं।

श्रीमती सोनिया गांधी (रायबरेली) : स्पीकर महोदया, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका शुक्रिया अदा करती हूं। आज हम यहां 75 साल पहले आज ही के दिन 'भारत छोड़ो आंदोलन' की यादों को ताज़ा करने के लिए एकत्रित हुए हैं। मुझे गर्व है कि मैं इस महान सदन में खड़े होकर इंडियन नेशनल कांग्रेस के अनेक बहादुर महिला, पुरुष कार्यकर्ताओं को श्रद्धांजलि दे रही हूं, जिन्होंने इस आंदोलन में भाग लिया और हमारी आजादी के लिए बेमिसाल कुरबानियां दीं। 8 अगस्त, 1942 को मुम्बई में महात्मा गांधी जी के आह्वान पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने जवाहर लाल नेहरू द्वारा प्रस्तावित और सरदार पटेल द्वारा समर्थक संकल्प को स्वीकार किया, जिसमें अंग्रेजी हुकूमत से देश छोड़ने को कहा गया था - 'भारत छोड़ो', 'क्विट इंडिया'। इस संकल्प के पारित होने के बाद महात्मा गांधी जी ने अपने भाषण के अंत में जो कहा, मैं उसे दोहरा रही हूं। उनके शब्दों में- मैंने कांग्रेस को प्रतिज्ञा दिलाई है कि कांग्रेस 'करे या मरे'। इन शब्दों ने पूरे देश को उत्तेजित कर दिया। अंग्रेजी सरकार ने वर्किंग कमेटी के सभी सदस्यों और अनगिनत कांग्रेस कार्यकर्ताओं को तुरंत गिरफ्तार कर लिया। हजारों लोगों को 1945 का दूसरा विश्वयुद्ध खत्म होने तक जेल में बंद रखा गया।

जवाहर लाल नेहरू ने जेल में अपना सबसे लंबा समय बिताया और कुछ कांग्रेसी कार्यकर्ता बीमारी की वजह से जेल से जिंदा भी बाहर नहीं आ सके। इस आंदोलन को जारी रखने के लिए देश भर में अनगिनत महिलाओं और पुरुषों को अंडरग्राउंड होना पड़ा। अंग्रेजी हुकूमत ने क्रूरतापूर्वक दमन किया और कार्यकर्ताओं पर गोलियां बरसायीं। हर हफ्ते दर्जनों लोग मारे गये। उनके आदेशों को नहीं मानने वालों पर कोड़े बरसाये गये। राष्ट्रवादी अखबारों पर पाबंदी लगायी गयी और उन्हें बंद भी कराया गया। सत्यग्राहियों को डराने और धमकाने की कोशिश में पुलिस द्वारा महिलाओं का उत्पीड़न किया गया। कैदियों की बर्बरतापूर्वक पिटाई की गयी या उन्हें बर्फ की सिलियों पर नंगा करके तब तक लोटने को

मजबूर किया गया, जब तक कि वे बेहोश नहीं हो गये। यही नहीं, प्रदर्शनकारी नागरिकों पर हवाई फायरिंग भी की गयी, लेकिन उसके बावजूद भी प्रदर्शनकारी निडर रहे और नहीं झुके।

भारत छोड़ो आंदोलन हमारी आजादी की लड़ाई में क्रांतिकारी परिवर्तन की मिसाल बन गया, लेकिन इसके लिए हमें अनगिनत कुर्बानियां देनी पड़ीं। आज वही कुर्बानियां हमें एक मौका देती हैं, जब हम पुनः आभार के साथ उन्हें याद करें और उनके प्रति सम्मान दिखायें। आज जब हम उन शहीदों को नमन कर रहे हैं, जो स्वाधीनता संग्राम में सबसे अगली कतार में रहे, तो हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उस दौर में ऐसे संगठन और व्यक्ति भी थे, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध किया था। हमारे देश को आजादी दिलाने में इन तत्वों का कोई योगदान नहीं रहा। ...(व्यवधान)

महोदया, मुझे लगता है कि जब हम क्विट इंडिया की 75वीं सालगिरह मना रहे हैं, तब देशवासियों के मन में कई आशंकाएं भी हैं। यह एहसास गहरा होता जा रहा है कि क्या अंधकार की शक्तियां हमारे बीच फिर तेजी से उभर नहीं रहीं? क्या जहां आजादी का माहौल था, वहां भय नहीं फैल रहा है? क्या जनतंत्र की उस बुनियाद को नष्ट करने की कोशिश नहीं हो रही है, जो विचारों, स्वेच्छा, आस्था, समानता, सामाजिक न्याय की आजादी और कानून सम्मत व्यवस्था पर आधारित है?

महोदया, भारत छोड़ो आंदोलन की सालगिरह का समारोह हम सबको इस बात की याद दिलाता है कि हम भारत के विचार को एक संकीर्ण मानसिकता वाले विभाजनकारी और साम्प्रदायिक सोच का कैदी न तो बनने दे सकते हैं और न ही बनने देंगे। महात्मा गांधी के नेतृत्व में हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने एक समावेशी बहुलतावादी, लोकतांत्रिक और न्याय संगत भारत के लिए लड़ाई लड़ी। यह एक ऐसा विचार था, जिसे उन्होंने हमारे संविधान में स्थापित किया। लेकिन ऐसा लगता है कि इस सृष्टि पर आज नफरत और विभाजन की राजनीति के बादल छा गए हैं। ऐसा लगता है कि सेक्युलर, लोकतांत्रिक और उदारवादी मूल्य खतरे में पड़ते जा रहे हैं।

09.08.2017

मध्याह्न 12.00 बजे

पब्लिक स्पेस में असहमति, बहस और विचारों की विभिन्नता की गुंजाइश कम होती जा रही है। कई बार कानून के राज पर भी गैर-कानूनी शक्तियां हावी दिखाई देती हैं।

महोदया, भारत छोड़ो आन्दोलन एक यादगार है, जो हम सबको प्रेरणा देती है कि अगर हमें अपनी आजादी को सुरक्षित रखना है, तो हमें हर तरह की दमनकारी शक्तियों के खिलाफ संघर्ष करना होगा, चाहे वे कितनी भी समर्थ या सक्षम हों। हमें आज भी उस भारत के लिए लड़ना है, जिस भारत में हम विश्वास करते हैं, जो भारत हमें प्यारा है, जिस भारत में जन-जन आजाद है और उसकी आजादी निर्विवाद है। आपको बहुत-बहुत शुक्रिया, धन्यवाद। जय हिन्द।

09.08.2017

[अनुवाद]

डॉ.एम. तंबिदुरै (करूर): [1] माननीय अध्यक्ष महोदया, नमस्कार। हम भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ का आयोजन कर रहे हैं। हमारे राष्ट्रपिता, महात्मा गांधी, ने आजादी का बिगुल बजाया और अंग्रजों को हमारा देश छोड़ने के लिए कहते हुए भारतीयों का नेतृत्व किया। कई नेताओं ने ब्रिटिश के चंगुल से हमारे देश को मुक्त करने के लिए अपनी जानें न्योछावर की थी। हम इस आंदोलन को 'भारत छोड़ो आंदोलन' के नाम से जानते हैं।

कुछ माननीय सदस्य : महोदया अनुवाद नहीं है।

[हिन्दी]

माननीय अध्यक्ष : आपने इंटीमेशन नहीं दी थी।

[अनुवाद]

डॉ.एम. तंबिदुरै: महोदया, अन्य लोग अनुवाद प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। अभी स्थिति क्या है? अगर मैं तमिल में बात करना चाहता हूँ, तो मुझे अनुमति प्राप्त करनी होगी और फिर आप अनुवाद प्राप्त कर सकते हैं। अगर आपको अन्य भाषाओं में बोलना है, तो आपको भी अनुमति लेनी होगी।

माननीय अध्यक्ष: यह अनुमति नहीं है। आपको सिर्फ पहले सूचित करना होगा।

डॉ.एम. तंबिदुरै: मुझे अपनी भाषा का समयानुसार अनुवाद नहीं मिलता। जब अन्य व्यक्ति बोलते हैं, तो मुझे उसे केवल हिन्दी या अंग्रेज़ी में सुनना पड़ता है। मुझे तमिल या अन्य भाषाओं में समयानुसार अनुवाद नहीं मिलता है। अब, मुझे अंग्रेजी में बोलने के लिए मजबूर किया जा रहा है।

[1] मूलतः तमिल में दिए गए भाषण के अंग्रेजी अनुवाद का हिन्दी रूपांतर।

माननीय अध्यक्ष: यदि आपने पहले से सूचित किया होता, तो निश्चित रूप से आपको अनुवाद प्रदान किया गया होता। अनुवादक होते हैं।

डॉ.एम. तंबिदुरै: हमें भाषण केवल हिन्दी या अंग्रेजी में ही सुनना पड़ता है और तमिल में नहीं। अगर कोई बंगाली में बोल रहा है, तो हमें उसे केवल हिन्दी या अंग्रेजी में ही सुनना होगा। यह मैं बोलना चाहता हूं।

[हिन्दी]

माननीय अध्यक्ष : टेक्नोलॉजी से करेंगे।

[अनुवाद]

डॉ.एम. तंबिदुरै: भारत छोड़ो आंदोलन एक सविनय अवज्ञा आंदोलन था, जिसे महात्मा गांधी ने ब्रिटिश शासन को भारत से समाप्त करने की मांग करते हुए 1942 के अगस्त महीने में शुरू किया था, जब द्वितीय विश्व युद्ध चल रहा था, यह महा आंदोलन भारत के अगस्त आंदोलन के रूप में भी जाना जाता था।

क्रिप्स मिशन की असफलता के बाद, महात्मा गांधी ने अपने भारत छोड़ो भाषण में "करो या मरो" का नारा दिया, जो तबकी बॉम्बे में दिया गया था। भारत भर में "व्यवस्थित रूप से ब्रिटिश वापसी" की मांग के साथ जनता के विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए और स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे अधिकांश नेता गांधी के भाषण के कुछ घंटों के भीतर ही गिरफ्तार किए गए।

जब सविनय अवज्ञा का आह्वान किया गया, तो सभी राष्ट्रीय नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। किसी भी नेता के बाहर न होने के कारण, जनसमूह हिंसक हो गए और उन्होंने सरकारी कार्यालयों को जला दिया। सेना को बुलाया गया था और लगभग एक लाख लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया था। नेताओं का जेल के अंदर से किसी से भी संपर्क नहीं था। ब्रिटिश द्वारा नागरिक अधिकार, वाणी की स्वतंत्रता और प्रेस की स्वतंत्रता को समाप्त कर दिया गया।

09.08.2017

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में 'भारत छोड़ो आंदोलन' एक महत्वपूर्ण लैंडमार्क था, जिससे ब्रिटिश शासन से मुक्ति प्राप्त हुई। यह भारतीय जनता में एक नए आत्मविश्वास और पूरी त्याग की भावना को जगाने वाला एक नया संदेश स्थापित करता है। इस आंदोलन में किसानों, श्रमिकों, वकीलों, प्रोफेसरों, शिक्षकों, सैनिकों आदि जैसे विभिन्न व्यवसायों सहित बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी देखी गई।

भारत छोड़ो आंदोलन का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम था कि इससे ब्रिटिश को यह अहसास हुआ कि द्वितीय विश्व युद्ध के प्रभाव से उनके संसाधनों पर पड़े अत्यधिक दबाव और भारत पर अंग्रेजों के शासन के प्रति तीव्र विरोध के संदर्भ में, भारतीयों पर नियमित रूप से शासन करना बहुत मुश्किल हो जाएगा।

महोदया, आपके भाषण में, आपने भारत छोड़ो आंदोलन में हुई कई घटनाओं का उल्लेख किया। उस समय, तमिलनाडु ने भी भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेते हुए बहुत योगदान दिया।

तमिलनाडु ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1857 के महान विद्रोह से पहले ही, पंचालम कुरिची में विद्रोह, 1801 में मारुडु भाइयों का दक्षिण भारतीय विद्रोह और 1806 की वेलूर विद्रोह तमिलनाडु के प्रारंभिक विद्रोह थे। राष्ट्रवादी युग के दौरान, तमिलनाडु ने राष्ट्रीय आंदोलन को जी. सुब्रमण्यम अय्यर, वी. ओ. चिदंबरम पिल्लई, सुब्रमण्यम भारती, सी. राजगोपालाचारी, के. कामराज, थिरू सत्यमूर्ति और थांथाई पेरियार जैसे नेता दिए।

आप अच्छी तरह जानते हैं कि थानथाई पेरियार शुरू में कांग्रेस में थे और फिर उनका राजाजी से मतभेद हो गया था। इसलिए, उन्होंने कांग्रेस छोड़ दिया । जब उन्होंने द्रविड़ पार्टी की स्थापना की, तो उन्होंने ब्रिटिशों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। यह इतिहास है ।

हमारे नेता, अरिग्नार अन्ना ने तमिलनाडु के लोगों से आग्रह किया कि वे 15अगस्त, 1947 को जब ब्रिटिश लोगों ने भारत छोड़ा और सरकार हमें सौंप दी के दिन को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाएं।

मैं इस सम्मानित सभा में एक दिलचस्प बात का उल्लेख करना चाहता हूं। मेरे नेता, पुरैची थलाइवर, एम.जी.आर. महात्मा गांधी के कट्टर अनुयायी थे। एम.जी.आर. हमारी पार्टी यानी डी.एम.के., में 1953 में शामिल हो गए, और फिर उसके बाद ए.आई.ए.डी.एम.के. की स्थापना की। उससे पहले, जब वह महात्मा गांधी के पक्के अनुयायी थे, उन्होंने गांधीवादी सिद्धांतों का प्रचार किया और वे केवल *खादी* के कपड़े पहनते थे । उस समय, उनकी मां *खादी* पहनने के खिलाफ थी। जब एम.जी.आर. की शादी हुई, तो एम.जी.आर. ने अपनी मां से एक शर्त रखी थी कि अगर कभी उनके लिए कोई शादी का आयोजन होना है, तो वह केवल *खादी* की कमीज़ और *खादी की* धोती पहनेंगे। फिर वह जैसा चाहते थे, वैसा ही हुआ। यह एम.जी.आर. का राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान है। इसलिए, भले ही उन दिनों द्रविड़ आंदोलन का कांग्रेस के साथ मतभेद था, हमने अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी और अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए अपने सिद्धांतों को बरकरार रखा।

महोदया, मैं तमिलनाडु में हुई कुछ घटनाओं का उल्लेख करना चाहता हूँ। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, मद्रास शहर (जिसे अब चेन्नई के नाम से जाना जाता है) में हड़ताल, स्ट्राइक्स, दंगे और हर प्रकार के हिंसात्मक कार्य हुए थे।

डॉ. बी.एस. बालिगा ने स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया है: "उत्तर आरकोट में, हड़ताल और प्रदर्शनों के अलावा, टेलीफोन और टेलीग्राफ तारों को काट दिया गया; डाकघर बाक्स हटा दिए गए; पनापक्कम में लोक निरीक्षण बंगला और वेल्लोर में पुलिस हट्स को जलाया गया।" उस समय, ब्रिटिश सरकार ने लोगों पर 6535 रुपये के जुर्माने लगाए थे।

यह सिर्फ उस जगह ही नहीं हुआ, बल्कि चेंगलपट्टू जैसे अन्य स्थानों में भी हुआ। विभिन्न कॉलेजों, जैसे मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज और लोयोला कॉलेज, के कई छात्रों ने बाहर निकलकर भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान एक आंदोलन की शुरुआत की। ऐसी घटनाएं न केवल चेंगलपट्टू में ही हुईं, बल्कि कोयम्बटूर और अन्य स्थानों में भी हुईं।

मैं एक महत्वपूर्ण बात कहना चाहता हूँ। कोचीन से आ रही एक हथियारों से भरी ट्रेन, जिसमें दो इंजन और 44 वैगन शामिल थे, को तोड़फोड़ करने वालों द्वारा पोडानूर और सिंगानल्लूर रेलवे स्टेशनों के बीच पटरी से उतार दिया गया। पोलाची में ट्रेनों को पटरी से उतारने के प्रयास किए गए। एक गांव चावड़ी, जो करनाल के आसपास है, पर हमला किया गया और नुकसान पहुंचाया गया और सिंगानल्लूर में कई ताड़ी की दुकानें जला दी गईं। उन दिनों सुलूर हवाई अड्डे के सभी शेडों में आग लगा दी गई थी।

कुछ गाँवों पर 35,410 रुपये का सामूहिक जुर्माना लगाने के अलावा, कोयंबटूर नगर परिषद को भारत छोड़ो आंदोलन का समर्थन करने और सरकार की दमनकारी नीति की निंदा करने के लिए छह महीने के लिए निलंबित कर दिया गया था। मदुरै में भी विभिन्न हिंसात्मक घटनाएँ हुईं थीं। मदुरै आंदोलन का मुख्य केंद्र बन गया और सेना और पुलिस के बार बार हस्तक्षेप की मांग की गई।

यह आंदोलन भारत के सभी हिस्सों में कमोबेश हिंसापूर्ण था और सरकार के विरुद्ध असंतोष का अधिकतम प्रभाव पैदा करने के लिए दक्षिण भारत में असाधारण जोश था। इस आंदोलन में छात्रों की पूर्ण भागीदारी रही।

अंत में, मैं यह कहना चाहूंगा। भारत छोड़ो आंदोलन, हालांकि अल्पावधि में अपने मुख्य उद्देश्य को प्राप्त करने में असफल रहा, लेकिन लंबे समय में इसने 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए उस तरह की गति दी। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने निर्वाचित प्रांतीय सरकारों के विचार को भी बढ़ावा दिया

जिसमें कुछ अधिक महत्वपूर्ण विषयों को प्रांतीय राज्य सरकारों को सौंप दिया गया था। सहकारी संघवाद ने वह आधार बनाया जिस पर राष्ट्रीय आंदोलन पनपा।

आज मैंने अखबार में माननीय प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए नारे को देखा है। उन्होंने कहा: " हम कंधे से कंधा मिलाकर काम करने का संकल्प लें और एक नए भारत के निर्माण के लिए समर्पित हों, जिससे हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को गर्व हो।" वही उन्होंने कहा था। एक नये भारत का संकल्प भी है। उसमें कहा गया है: "हम साथ मिलकर एक स्वच्छ भारत के प्रति संकल्प लें।" आइये, हम साथ मिलकर एक गरीबी-मुक्त भारत के लिए संकल्प लें। आइये, हम साथ मिलकर एक भ्रष्टाचार-मुक्त भारत के लिए संकल्प लें। आइये, हम साथ मिलकर एक आतंकवाद-मुक्त भारत के लिए संकल्प लें। आइये, हम साथ मिलकर एक सांप्रदायिकता-मुक्त भारत के लिए संकल्प लें। आइये, हम साथ मिलकर एक जातिवाद-मुक्त भारत के लिए संकल्प लें। यह उत्कृष्ट है।

इसके साथ ही, मैं दो बातें भी जोड़ना चाहता हूँ। वे यह हैं: " आइये, हम साथ मिलकर संकल्प करें कि हमारी इस देश की सभी भाषाएँ राष्ट्रीय भाषाएँ कही जाएं और क्षेत्रीय भाषाएँ नहीं।" आइये, हम संकल्प लें कि हम सभी भाषाओं, जैसे तमिल, तेलुगु, बंगाली, आदि को इस देश की आधिकारिक भाषाओं के रूप में मान्यता दिलाएं। यह इसलिए है क्योंकि हमारे सभी पूर्वजों ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। उन्होंने हमारी संस्कृति, भाषा आदि की रक्षा के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया। एक भाषा को प्राथमिकता देने के बजाय सभी भाषाओं की रक्षा करना और सभी भाषाओं को समान दर्जा देना संसद का परम कर्तव्य है। यही मेरा अनुरोध है। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रो. सुगत बोस (जादवपुर): अध्यक्ष महोदया, 9 अगस्त भारतीय इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाए वाला दिन है। 75 साल पहले, आज के दिन, आम भारतीय नायक बन गए थे जब उन्होंने अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर करने के अपने संकल्प में विशाल बलिदान देने के लिए महात्मा गांधी के, 'करेंगे या मरेंगे' का समर्थन किया था। आज हमारा पहला कर्तव्य यह है कि हम सभी मिलकर '*भारत छोड़ो आंदोलन* ' के महान शहीदों को सम्मान और श्रद्धांजलि अर्पित करें, जिन्होंने हमें स्वतंत्र भारत में जन्म लेने का अवसर दिया।

महात्मा गांधी ने अपने ऐतिहासिक 'भारत छोड़ो आंदोलन' का प्रस्ताव अप्रैल 1942 में ही तैयार किया था। उन्होंने साक्षात्कारों में संकेत दिया कि वे गुलामी की महा आपदा को समाप्त करने के लिए हिंसा का जोखिम लेने के लिएभी तैयार थे। वास्तविकता में यह गांधी जी के क्रांतिकारी 'भारत छोड़ो आंदोलन' का एक संवेदनशील संस्करण था जिसे अंततः पंडित जवाहरलाल नेहरू ने प्रस्तावित किया और कांग्रेस ने 8 अगस्त 1942 को अपनाया।

जैसा कि हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने अपने वाक्पटु और उत्तेजक भाषण में कहा है, भारत छोड़ो आंदोलन 1857 के महान विद्रोह के बाद से भारत में सबसे बड़ा नागरिक विद्रोह साबित हुआ। इसका नेतृत्व और संचालन मध्य-श्रेणी के नेताओं द्वारा किया गया था क्योंकि सभी शीर्ष नेताओं को 9 अगस्त, 1942 की सुबह के समय जेल में बंद कर दिया गया था। यह एक शहरी आंदोलन के रूप में शुरू हुआ था, जिसमें छात्र, युवा और श्रमिक शामिल थे। मेरे पिताजी खुद कोलकाता की सड़कों पर 13अगस्त 1942 को छात्रों के प्रदर्शन में नेतृत्व करते हुए गंभीर रूप से घायल हो गए थे। सितंबर 1942 के अंत में, यह विद्रोह ग्रामीण क्षेत्रों में फैल गया, जहाँ किसानों की बड़ी भीड़ ने राजस्व कार्यालयों, डाकघरों, पुलिस थानों आदि सहित ब्रिटिश सत्ता के सभी प्रतीकों पर हमला किया। कुछ मामलों में, कब्जे में लिए गए पुलिस थानों से हथियार लूटे गए। बिहार और झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश, बंगाल (विशेष रूप से मेदिनीपुर जिला), ओडिशा और महाराष्ट्र (विशेष रूप से सतारा जिला) के कई जिलों में ब्रिटिश प्रशासन

ध्वस्त हो गया। बिहार और झारखंड, जो विद्रोह का केंद्र था, में किसानों और आदिवासियों की मजबूत भागीदारी देखी गई। माननीय अध्यक्ष महोदया, हर जगह महिलाओं ने प्रतिरोध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मातंगिनी हाजरा ने दिखाया कि भारतीय तिरंगे की गरिमा उनके लिए उनके अपने जीवन से अधिक मूल्यवान थी क्योंकि उन्हें तामलुक में गोली मार दी गई थी। मुक्त इलाकों में समानांतर सरकारें स्थापित की गई। लेकिन भारी ब्रिटिश शक्ति अंततः मार्च, 1943 तक प्रबल हो गई, भले ही जय प्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया और अरुणा आसफ अली जैसे भूमिगत नेताओं को बाद तक गिरफ्तार नहीं किया गया था।

हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जिक्र किया और बताया कि उन्होंने 1942 में महात्मा गांधी के साथ साझा मुद्दे पर काम किया था। उन्होंने 17अगस्त 1942 को एक प्रसारण में कहा:

> " पूरी दुनिया अब देख रही है कि मखमली दस्ताने, जो आम तौर पर ब्रिटेन की मुट्ठी को छुपाते हैं, अब फेंक दिए गए हैं और क्रूर बल-खुले तौर पर और निर्लज्जता भारत पर शासन कर रहे हैं। गैस के घने पर्दे के पीछे, पुलिस की लाठियों के भारी प्रहारों और गोलियों की लगातार सीटी और घायलों और मरने वालों की क्रोध पूर्ण अवज्ञा-भारत की आत्मा पूछती है-'चार स्वतंत्रताएँ कहाँ हैं?' शब्द सात समुद्रों पर दुनिया के सभी कोनों में तैरते हैं, लेकिन वाशिंगटन जवाब नहीं देता है। एक विराम के बाद, भारत की आत्मा फिर से पूछती है, 'अटलांटिक चार्टर कहां है, जो हर देश को अपनी सरकार की गारंटी देता है?' इस बार डाउनिंग स्ट्रीट और व्हाइट हाउस एक साथ जवाब देते हैं-'वह चार्टर भारत के लिए नहीं था ।'

नेताजी की दिल से इच्छा थी कि वे अगस्त 1942 तक एशिया में पहुँच जाएं। लेकिन फरवरी 1943 तक उनकी यूरोप से एशिया की पनडुब्बी यात्रा की व्यवस्था नहीं हो सकी। यदि

आज़ाद हिन्द फौज की सशस्त्र प्रवृत्ति भारत छोड़ो आंदोलन के आंतरिक विद्रोह के साथ मेल खाती, तो हमारे देश का इतिहास और भी गौरवमयी रूप ले सकता था।

हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने अपने भाषण में घोषणा की है कि 2017 से 2022 तक के पांच वर्षों में 1942 से 1947 तक की असाधारण यात्रा, संकल्प से सिद्धि तक, को दोहराया जाना चाहिए। निस्संदेह 1942 और 1947 के बीच महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं, जैसे भारत छोड़ो आंदोलन, आज़ाद हिंद फौज का सशस्त्र संघर्ष और 1945-46 के सर्दियों में लाल किले के मुकदमे के समय जनमानस का उत्कर्ष। लेकिन हम कैसे भूल सकते हैं कि 1947 में ' *संकल्प'* और ' *सिद्धि'* के बीच में एक अंतर था। हमें स्वतंत्र भारत मिला, लेकिन दुर्भाग्य से उस समय हमें एकजुट भारत नहीं मिला।

नेहरू के प्रसिद्ध "ट्राइस्ट विद डेस्टिनी" भाषण की शुरुआत एक ईमानदार स्वीकृति के साथ हुई। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता का संकल्प "पूरी तरह या पूरी मात्रा में नहीं, लेकिन काफी हद तक " पूरा हो रहा है। उन्होंने हमारी स्वतंत्रता के निर्माता, भारत छोड़ो प्रस्ताव के लेखक को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा, "हम अक्सर उनके अयोग्य अनुयायी रहे हैं और उनके संदेश से भटक गए हैं।" महात्मा गांधी की खामोशी नेहरू की वाक्पटुता से अधिक जोर से बोलती थी। नई दिल्ली में समारोहों से बहुत दूर, महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता दिवस कलकत्ता में बिताने का फैसला किया। भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने उनसे एक संदेश माँगा था और उन्होंने कहाः "उनके पास कहने के लिए कुछ नहीं बचा था।"

माननीय अध्यक्ष, भारत छोड़ो आंदोलन की 75$^{वीं}$ वर्षगांठ और स्वतंत्रता की 70$^{वीं}$ वर्षगांठ आत्म-मंथन और आत्म-निरीक्षण का आह्वान करती है, न कि आत्म-प्रशंसा और गर्व में उत्सव मनाने का । यह महात्मा का नैतिक बल था, जिसने 15अगस्त, 1947 को कलकत्ता में शांति सुनिश्चित की; और हिंदू और मुस्लिमों ने एक साथ "जय हिंद" का नारा लगाया। गांधीजी ने 16

अगस्त, 1947 को एक लेख "चमत्कार या दुर्घटना" प्रकाशित किया; और उन्होंने कहाः "यह शांति न तो चमत्कार थी और न ही दुर्घटना। यह भगवान की धुन पर नाचने का मनुष्यों का दृढ़ संकल्प था। "'हमने आपसी नफरत का जहर पिया है'। गाँधीजी ने हरिजन में लिखा था "और इसलिए भ्रातृत्व के इस अमृत का स्वाद और भी मीठा लग रहा है, और यह मिठास कभी समाप्त नहीं होनी चाहिए।"

गांधीजी के जीवन के अंतिम साढ़े पांच महीनों ने भारत के आज के संकट के लिए एक संदेश प्रस्तुत किया। गांधीजी ने जब टिप्पणी की थी, "धर्महीनता धर्म का स्वांग बनाती है," यह उनकी गहन अंतर्दृष्टि का प्रतिबिम्ब था। आज हम धर्महीनता को धर्म के रूप में देख रहे हैं। ए.आई.सी.सी. के पहले सत्र की बैठक नवंबर 1947 के मध्य में हुई थी, तब गांधीजी के पास सत्ताधारी पार्टी और उस दिन की सरकार के लिए स्पष्ट संदेश था। उन्होंने कहा, "भारतीय संघ में कोई मुस्लिम अपने जीवन को असुरक्षित महसूस न करे" । फिर, उन्होंने हमारे इस महान देश में शांति बनाए रखने के लिए 12 जनवरी, 1948 को अपना अंतिम उपवास शुरू किया। वैसे, 23 जनवरी को, जो नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्मदिन था, गांधीजी ने कहा: "सुभाष ने न तो प्रांतीयता को माना और न ही सांप्रदायिक भेदभाव को" और "उनकी बहादुर सेना में, पूरे भारत से बिना किसी भेदभाव के पुरुष और महिलाएं आए थे और उन्होंने जो स्नेह और निष्ठा उत्पन्न की, वह बहुत कम लोग उत्पन्न कर पाए" । उन्होंने अपने देशवासियों से कहा कि "उस महान देशभक्त की याद में", "सभी सांप्रदायिक कटुता को अपने हृदय से निकाल दें।"

भारत छोड़ो आंदोलन की 75$^{वीं}$ वर्षगांठ और स्वतंत्रता की 70$^{वीं}$ वर्षगांठ अतीत और भविष्य के बीच, पुराने और नए के बीच संबंधों पर विचार करने का एक उपयुक्त अवसर है।

नरेन्द्र मोदीजी ने 2022 तक एक नये भारत के निर्माण के बारे में बात की है। हमारे पास भी एक सपना है एक नये भारत के लिए, जो पहले के महान नेताओं से प्रेरित है। स्वामी विवेकानंद ने घोषणा की थी, "नया भारत उठे,किसानों की झोपड़ी से, हल पकड़कर उठे; मछुआरों, मोचियों और सफाईकर्मियों

की झोपड़ियों से उठे।" उनके समानता के संदेश ने वर्ग के पार जाकर लिंग और जाति को भी सम्मिलित किया। उन्होंने कहा कि हमारे देश में दो महान बुराइयां हैं - महिलाओं को कुचलना और जाति सीमाओं के माध्यम से गरीबों को पीसना। विवेकानंद की दृष्टि मुख्य रूप से धार्मिक सद्भावना की थी। यही कारण है कि उन्होंने घोषणा कीः "हम न केवल सार्वभौमिक सहिष्णुता में विश्वास करते हैं, बल्कि हम स्वीकार करते हैं कि सभी धर्म सत्य हैं।"

विवेकानंद ने हमें सिखाया कि हमें पृथ्वी की सभी जातियों के साथ मिलजुलकर रहना चाहिए। "और उनका मानना था, "हर हिंदू जो विदेश यात्रा करने के लिए बाहर जाता है, अपने देश को उन सैकड़ों लोगों की तुलना में अधिक लाभ पहुंचाता है जो अंधविश्वास और स्वार्थ के समूह हैं।" यह संत प्राचीन भारत के बारे में एक संतुलित दृष्टिकोण रखते थे, जिसे भारत के समकालीन चैंपियनों को ध्यान में रखना चाहिए। विवेकानंद के अनुसार, "प्राचीन काल में कई अच्छी बातें थीं, लेकिन कुछ बुरी भी थीं।" अच्छी बातें बनाए रखनी चाहिए, लेकिन भविष्य का भारत, प्राचीन भारत से बहुत अधिक महान होना चाहिए।

माननीय अध्यक्ष महोदया, अतीत की बुरी चीजों से छुटकारा पाना आसान नहीं है। आज, देश के कुछ हिस्सों में, हम 1890 के दशक के गोरक्षा आंदोलनों और 1920 के दशक के उत्तरार्ध के शुद्धि और संगठन आंदोलनों को चिह्नित करने वाली घृणा की पुनरावृत्ति देख रहे हैं। रवींद्रनाथ टैगोर की पुस्तक, राष्ट्रवाद, ठीक सौ साल पहले 1917 में प्रकाशित हुई थी, जिसमें एक ऐसा अंश है जो उस सामाजिक और राजनीतिक संकट की एक अलौकिक भविष्यवाणी जैसा लगता हैजिसने आज भारत को घेरा हुआ है। उन्होंने लिखा, "मन की सामाजिक आदत, जो हमें अपने साथी प्राणियों के जीवन को उनके लिए बोझ बनाने के लिए प्रेरित करती है, जहां वे हमसे अलग हैं, यहां तक कि उनके भोजन की पसंद में भी और इस तरह की चीज हमारे राजनीतिक संगठन में बनी रहेगी और इसके परिणामस्वरूप दमन के साधन का निर्माण होगा जो प्रत्येक तर्कसंगत अंतर को कुचल देगा जो जीवन का संकेत है।"

मैं प्रधानमंत्री से अपील करता हूँ कि वे दमन के साधनों की गतिविधियों में रोक लगाएं। भारत के भाग्य में विश्वास हमें तर्कसंगत अंतर की अभिव्यक्ति पर उग्र हमलों के सामने कमजोर करने वाले निराशावाद से बचाता है। रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा लिखा गया वह गीत जिसे हमने अपने राष्ट्रीय गान के रूप में अपनाया है, उसमें हम आभार व्यक्त करते हैं *"भारत भाग्य विधाता"* को, जिन्होंने हमारे देश और हमारे लोगों पर इस प्रकार से दिव्य आशीर्वाद बरसाया है। "कवि के गीतों में इस दिव्य महिमा के अभिव्यक्ति का गाना हुआ था, जिसमें कई गुण होते थे - *'जनगण मंगलदायक',* अनुग्रहकर्ता, वह समय पर गीत के अंतिम छंदों में *'जनगण-ऐक्य-बिधायक'* भी थे - जो भारत की अनगिनत धार्मिक और क्षेत्रीय विविधता से एकता का निर्माण करते थे।" *"जनगणदुःख त्रायक"* महिला रूप में प्रकट होते हैं।

"घोर अंधकार भरी गहन रात्रि, पीड़ित और मूर्छित देश में।
तेरे अबिचल मंगल नत नयनों में अनिमेष जागृति थी ।
स्नेहमयी माता तुमने आतंक के दु:स्वप्न से रक्षा की है ।“

भारत के भाग्य विधाता अति अंधकारपूर्ण समय में शांति देते हैं और आशा देते हैं कि वर्तमान का भयानक काल्पनिक दौर भी बीत जाएगा।

नेहरू ने उस समय के बारे में कहा, "नियत दिन आ गया है, नियति द्वारा निर्धारित दिन”। क्या 15अगस्त, 1947 भाग्य द्वारा निर्धारित दिन था? वाइसराय माउंटबेटन ने उस दिन को याद किया जब उन्होंने भारत से ब्रिटिश हितों को कम से कम नुकसान पहुंचाते हुए भारत छोड़ने का प्रयास किया। लेकिन, स्वतंत्रता से ठीक दो साल पहले, 15अगस्त 1945 को, नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने उन लोगों के लिए जो उनके नेतृत्व में भारत की आजादी के लिए लड़े, एक भावपूर्ण आखिरी आदेश जारी किया था: "भारत के भाग्य में अपने विश्वास में एक पल के लिए भी न डगमगाएं। भारत जल्द ही स्वतंत्र हो जाएगा।"

09.08.2017

आज, हमें हमारे महान स्वतंत्रता संघर्ष की भावना को फिर से जगाने की आवश्यकता है। नरेन्द्र मोदी जी कहते हैं कि अगले पांच वर्ष बदलावपूर्ण होंगे। हम कभी-कभी यह सोचते हैं कि जब वह कहते हैं कि ये वर्ष बदलावपूर्ण होंगे क्योंकि तीन मुख्य संविधानिक पदों पर एक ही विचारधारा के लोग बैठे हैं, तो हम केवल चिंता व्यक्त कर सकते हैं । हमें स्पष्ट होना चाहिए कि हमारा 2022 के लिए *संकल्प* क्या है। अगर वह सचमुच चाहते हैं कि सम्प्रदायवाद सहित सभी बुराइयाँ, , 2022 तक भारत छोड़ दें, तो हमें आशा है कि वह स्पष्ट रूप से निंदा करेंगे और उन्हें मजबूत कार्यवाही के लिए आगाह करेंगे जो धर्म के नाम पर नफरत का विष फैला रहे हैं और मानव जीवन को नष्ट कर रहे हैं।

अंत में, अध्यक्ष महोदया, महात्मा गांधी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस और पंडित जवाहरलाल नेहरू सहित कई महान नेताओं ने भारत के लोगों का स्वतंत्रता की दिशा में उनकी साहसिक यात्रा में नेतृत्व किया। स्वतंत्रता के बाद, कभी-कभी हमें पूछना और कहना पड़ा है: *"मंज़िल उनको मिली जो शरीक-ए-सफर न थे।"* इसी कारण, आज हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारा दृष्टिकोण किसी समुदाय और किसी भाषा की अप्रतिबंधित प्रभुता का नहीं है। मैं डा. थम्बीदुरई से सहमत हूं कि हमें भारत के विभिन्न समुदायों की सांस्कृतिक अंतरंगता पर आधारित एक वैकल्पिक और बेहतर दृष्टिकोण का प्रति-प्रतिपादन करना चाहिए। भारत की आत्मा के लिए युद्ध का एक हिस्सा विचारों के क्षेत्र में लड़ा जाएगा, न कि पार्टी राजनीति की गड्ढों में। इसलिए, आइए अगले पांच वर्षों में एक स्वस्थ लोकतांत्रिक प्रतिस्पर्धा हो। मुझे पता है कि आज सत्ता पक्ष के बेंचों पर जो बैठे हैं उनके अपने गुरु हैं। लेकिन आगामी पांच वर्षों के लिए, मैं उन्हें आमंत्रित करता हूँ कि वे हमारे साथ उस समृद्ध मार्ग पर चलें, जो महात्मा गांधी के ज्योतिपुंज से प्रकाशित है।

आइए, हम अपने इस महान देश से गरीबी, अशिक्षा और बीमारी को उखाड़ फेंकें। हमारा नया भारत विश्व की सबसे जीवंत अर्थव्यवस्था होगी, जहाँ इसके निवासियों को शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की सार्वभौमिक पहुँच प्राप्त होगी। हमारा नया भारत कुछ महानतम शिक्षण संस्थानों का घर होगा, जो पूरे

विश्व से सर्वोत्तम शिक्षकों और छात्रों को आकर्षित करेंगे। भारतीय राष्ट्रवाद की व्यापक भावना हमारी विविध जनसंख्या की अनेक पहचानों के साथ खुशी-खुशी सहअस्तित्व में रहेगी। हम अपनी भिन्नताओं का जश्न मनाएंगे और उनका सम्मान करेंगे ताकि उनसे ऊपर उठ सकें।

उस *संकल्प* से *सिद्धि* तक पहुँचने के लिए हमें शांति की आवश्यकता है। शांति सुनिश्चित करने के लिए, हमें अंध राष्ट्रवाद और उग्र राष्ट्रवाद के सभी प्रलोभनों से बचना चाहिए। अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ तक वास्तव में एक महान नए भारत का निर्माण करने के लिए, हमारे पास दुनिया में भारत के स्थान की एक व्यापक, उदार और कल्पनाशील अवधारणा और मानवता के लिए हमारे योगदान से प्रेरित एक भव्य दृष्टि होनी चाहिए। अब समय आ गया है कि हम, भारत की जनता द्वारा लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित प्रतिनिधि, न केवल आज का प्रस्ताव, जिसे आप, माननीय अध्यक्ष महोदया, हमारे सामने रख रही हैं, को स्वीकार करें, बल्कि प्रसिद्ध मध्यरात्रि प्रतिज्ञा को भी नवीनीकृत करें "...भारत, हमारी प्यारी प्राचीन, शाश्वत और सदैव नूतन मातृभूमि को हम श्रद्धापूर्वक सम्मान अर्पित करते हैं और उसकी सेवा के लिए स्वयं को पुनः समर्पित करते हैं। "जय हिंद। जय हिंद। "

[हिन्दी]

माननीय अध्यक्ष : मुझे ऐसा लगता है कि हमने प्रत्येक पार्टी के व्यक्ति को बोलने के लिए कहा था, लेकिन जो छोटी पार्टियां हैं, उनसे मेरी रिक्वेस्ट है कि उनके प्रमुख अपना भाषण पटल पर रख दें, केवल लीडर्स ऑफ द पार्टी के लिए बोल रही हूं, छोटी-छोटी पार्टियों को, सभी को समय मिलेगा। यदि वे अपना वक्तव्य टेबल करें, तो ज्यादा सुविधाजनक रहेगा। जिससे हम एक बजे अपना संकल्प पूरा कर सकेंगे।

श्री आनंदराव अडसुल (अमरावती): अध्यक्ष महोदया जी, बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। 'अगस्त क्रांति दिन' जिसका 75वां वर्ष हम सम्मान के साथ मनाने जा रहे हैं। यह एक अमृत महोत्सव का भी दिन है। आपने इस चर्चा की शुरूआत की, यह भी एक विशिष्टता है। आपने पूरे देश को एक संदेश दिया। भारत

छोड़ो के साथ-साथ अभी भारत जुड़ने के दिन आए हैं, यह आपके अपने वक्तव्य में आया। आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने भी अपना वक्तव्य दिया। वह तो पूरे देश और दुनिया में एक अच्छे वक्ता के रूप में सामने आए हैं। आदरणीय सोनिया गांधी जी का वक्तव्य भी मैंने सुना। वह भी बहुत अच्छा वक्तव्य था, अच्छी हिन्दी में था। उन्होंने इंडियन नेशनल कांग्रेस के ऊपर जोर दिया। मैं समझ सकता हूं कि इस स्वातंत्र्य संग्राम के दिन, वर्ष 1885 की बात है, दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता में कांग्रेस की स्थापना हुई। उस समय दूसरे पक्ष आगे नहीं आए थे तो ज्यादा जोर देने की बात मैं समझ सकता हूं।

आज एक बात ध्यान में लेना जरूरी है कि महाराष्ट्र की राजधानी मुम्बई, आपने भी महाराष्ट्र के ऊपर ज्यादा जोर दिया इसलिए मैं आपका आभारी हूं। जहां ग्रांड रोड के बाजू में ग्वालिया टैंक है और वह हमारे सावंत जी के चुनाव क्षेत्र में है। 9 अगस्त, 1942 वही दिन था। इसके साथ ही एक बात मैं जोड़ना चाहता हूं। हमारे श्रद्धेय नेता हिंदू हृदय सम्राट माननीय शिव शेना प्रमुख बाला साहब ठाकरे ने एक संदेश दिया है कि हम सार्वजनिक जीवन में काम करें या राजनैतिक जीवन में काम करें। साम, दाम, दण्ड, भेद नीति का अमल करेंगे। हम इसमें यही बात जोड़ना चाहते हैं। गांधी जी ने अनशन का प्रयोग किया, सत्याग्रह का प्रयोग किया। बाकी स्वतंत्रता सेनानी अपने-अपने तरीके से अलग-अलग लड़ाई लड़ रहे थे। लेकिन जब गाधी जी को लगा कि अनशन और सत्याग्रह से यह काम नहीं होने वाला है तो उन्होंने 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' 'क्विट इंडिया' का नारा दिया। वह 9 अगस्त, 1942 का दिन था, आज वही दिन है। स्वतंत्रता की लड़ाई में तीन नाम प्रमुख रूप से आगे आए। उसमें गांधी तो थे ही, साथ में लाल, बाल और पाल भी थे। लाला लाजपतराय, पंजाब से आते थे, विपिन चंद्र पाल, बंगाल से आते थे और बाल गंगाधर तिलक, महाराष्ट्र से आते थे। ये अपने-अपने तरीके से लड़ाई लड़ रहे थे। दूसरी तरफ सुभाष चंद्र बोस अलग ढंग से लड़ाई लड़ रहे थे। आपने एक बात यहां बताई कि ऐसे बहुत छोटे-छोटे लोग भी थे, जिनके नाम सामने नहीं आए। लेकिन आपने बाबू गेनू का नाम लिया। नाना पाटील, जिन्हें क्रांति सिंह बोलते हैं, वह सतारा से थे। उनको प्रतिसरकार भी बोलते थे और पत्रीसरकार भी बोलते थे। अगर कोई

स्वतंत्रता के मूवमैन्ट में काम करता है, वह कहां हैं, क्या कर रहा है, इसके बारे में अगर कोई जानकारी अंग्रेजों को देता था और ऐसे लोगों को जब पकड़ते थे तो उनके पांव में घोड़े का नाल ठोक देते थे, इसलिए वह पत्रीसरकार कहलाते थे। इसके अलावा अपने तरीके से अपनी सरकार चलाने का उनका विचार था, इसलिए वह प्रतिसरकार कहलाते थे, ऐसे लोग भी थे। हमारे यहां किशनवीर थे, चव्हाण जी थे, ऐसे बहुत से लोग थे।

मैं इसका उल्लेख इसलिए कर रहा हूं, क्योंकि मैं अपना चुनाव विदर्भ से लड़ता हूं। मैं सतारा, वैस्टर्न महाराष्ट्र से आता हूं। मैं आपको एक बात बताना चाहता हूं कि 1857 में स्वतंत्रता की पहली लड़ाई हुई, जिसे स्वतंत्रता संग्राम बोला जाता है। इसमें तात्या टोपे, नाना फड़नवीस और श्री एम.शिंदे थे। यह सही मायने में सतारा के थे, इनका नाम शिंदे था। हमारे ज्योतिरादित्य सिंधिया क्यों बोलते हैं, मुझे पता नहीं, वह सही मायने में वहां के हैं. वह उनके वारिस हैं। एक महत्वपूर्ण नाम, जो इस लड़ाई में शामिल थी - झांसी की रानी लक्ष्मीबाई। उनके बारे में बोला जाता है - 'ढाल छातीशी, पुत्र पाठीशी, कमरेला तलवार, एक अछूती नार झांशीची रानी लक्ष्मीबाई, एक अछूती नार।' ऐसे भी लोग हैं, जिन्हें हम भूल जाते हैं। इतिहास में पढ़ा था, जब इतिहास के प्रश्न आए तो हमने उनके उत्तर दिये। स्वतंत्रता की लड़ाई 1857 में शुरू हुई थी, हालांकि कामयाब नहीं हुई थी। लेकिन स्वतंत्रता के लिए उन्होंने बलिदान दिया है, यह भी हम नहीं भूल सकते हैं। लड़ाई के और भी तरीके होते हैं। गांधी जी हमेशा बोलते थे कि अहिंसा से हमें लड़ाई जीतनी है। उन्होंने अपने तरीके से लड़ाई लड़ी। इसलिए हम उन्हें महात्मा की पदवी देते हैं और आदर के साथ बोलते हैं। लेकिन साथ ही हम यह भी नहीं भूल सकते हैं कि सुभाष चंद्र बोस ने एक अलग तरह की आमने-सामने की लड़ाई का इरादा रखा था, ऐसे लोग भी थे।

तिलक जी ने जो दो पेपर चलाए थे एक था "दि मराठा " नाम से और दूसरा "केसरी " नाम से था, आपने मराठा का उल्लेख नहीं किया। खाली यही नहीं किया। यह स्वतंत्रता का विचार सभी के मन में आना चाहिए, सब लोग इकट्ठे होने चाहिए, मूवमेंट में सभी शामिल होने चाहिए, इसलिए शिव जयंती

और गणेश उत्सव मनाने की शुरूआत उन्होंने की थी। जो भी लोकल सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं, उन माध्यमों से स्वतंत्रता का विचार देने का एक काम किया था। जो कभी अंग्रेजों के ध्यान में नहीं आया कि ये क्या कर रहे हैं, अपनी भाषा में क्या कर रहे हैं, वे नाच रहे हैं, गाना गा रहे हैं, लेकिन स्वतंत्रता के प्रति एक लड़ाई लड़ रहे हैं। यह भी किसी को पता नहीं है। अलग-अलग ढंग से लड़ाई लड़ी गई। हमने स्वतंत्रता पाई है, आजादी के 70 साल पूरे हुए हैं। इसमें अभी जो भी बदलाव आए हैं, ये बदलाव हम देख रहे हैं। आपने एक बात बताई कि भारत जोड़ो। जोर से काम चालू है। बिहार साथ में आया है, त्रिपुरा साथ में आया है, तमिलनाडु आने के रास्ते पर है, गोवा तो हाथ में है, तो भारत जोड़ो का मतलब यह होना चाहिए कि एक नेता, एक देश - एक विचार, एक देश और विचार यह होना चाहिए कि सभी का उसमें भला हो।

एक बात यहां मैं बताना चाहता हूँ कि आरक्षण के नाम पर हरियाणा में जाटों का आंदोलन हुआ, लेकिन वह हिंसात्मक हुआ। दूसरा आंदोलन गुजरात में पटेलों का हुआ, उसमें भी थोड़ा हिंसा हुई। लेकिन एक आंदोलन महाराष्ट्र में पिछले एक साल से चल रहा है। वह मराठा क्रांति मोर्चा के नाम से चल रहा है। यह बताना इसलिए जरूरी है कि महाराष्ट्र की भूमि की यह एक अलग उल्लेखनीय बात है। हर जिले में मोर्चे निकाले गए, दो लाख, तीन लाख, चार लाख लोगों के साथ में, कभी सामने कोई नेता नहीं आया कि इनका नेता कौन है? वे जब मोर्चा का दिन तय करते थे कि इस दिन 11 बजे मोर्चा शुरू होगा और जिलाधिकारी के कार्यालय में दो बजे पहुंचेंगे। इतनी डिसिप्लेन दिखाई देती थी, कोई घोषणाएं नहीं होती थीं, जिलाधिकारी के कार्यालय में जब जाते थे, तब दो बच्चियों के द्वारा जिलाधिकारी को एक निवेदन देते थे और मोर्चा खत्म हो जाता था। यह एक आदर्श लेने जैसी बात है। इसलिए उन्होंने अपने मोर्चा को क्रांति मोर्चा नाम दिया है। कम से कम 25-30 लाख लोग महाराष्ट्र से वहां आते हैं। एक आंदोलन की दिशा होती है, तरीका होता है। हिंसात्मक तरीके से हमें कुछ चाहिए, वह मिलता है, ऐसा नहीं है, लेकिन इस तरीके से भी मिलता है। उनकी आरक्षण को लेकर सात मांगे हैं। जो कर्ज माफी हुई है, वह सही तरीके से नहीं हुई है, उसे दुरुस्त करना चाहिए, वह भी उनकी मांग है। इसलिए वे एक निवेदन दे

कर अपनी बात बता कर, अपना मोर्चा खत्म करना चाहते हैं। शायद यह आखिरी मोर्चा है। आज ऐसी कुछ बाते हैं। आपने मुझे बहुत कम समय देने का एलान किया है, लेकिन आप महाराष्ट्र से आती हैं, मैं भी महाराष्ट्र से आता हूँ तो थोड़ा एक-दो मिनट का समय और भी मैं चाहता हूँ। यह आधार तो लेना ही चाहिए। आधार तो हरेक के लिए होता है। आज देश में जो भी चल रहा है, मैं तो हमेशा सराहना करता आया हूँ।

माननीय अध्यक्ष : आज मैं स्वयं संयम पर चल रही हूँ।

श्री आनंदराव अडसुल: महोदया, बिल्कुल ठीक है। मैंने जैसा बताया, एक नेता, एक विचार, एक देश में होना चाहिए। हम आगे चल रहे हैं, अच्छे-अच्छे काम भी हो रहे हैं, अच्छी-अच्छी नई-नई योजनाएँ आ रही हैं, मैं हर एक का उल्लेख नहीं करूँगा, लेकिन पूर्व इतिहास सामने रखकर उसकी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए।

ऐसा बोला जाता है कि इतिहास स्वयं को दोहराता है। अगर वह अच्छी तरीके से रिपीट हो जाये, तो हम सभी लोग चाहते हैं, सभी को हम विश्वास में लें। प्रयास तो हो रहा है, लेकिन आज के दिन में एक ऐसा कल्चर बना है कि हम जब भी कभी विपक्ष में बैठते हों, तो चाहे अच्छी बात हो या बुरी बात हो, हमें हमेशा विरोध ही करना चाहिए। यह कल्चर हमें कभी न कभी खत्म करना चाहिए। अगर विपक्ष के लोग कोई अच्छी बात बोलते हैं, तो उसकी सराहना करनी चाहिए। यह बात भी हमें ध्यान में रखनी चाहिए। आल्टिमेटली हमारा गोल यह है कि यह देश हम सभी का है और यह इस देश की विशेषता है कि यहाँ विविधता में एकता है।

मैं आखिरी बात यही बोलना चाहता हूँ कि हम जन्मदिन या पुण्य तिथि किसकी मनाते हैं, जिन्होंने अपने जीवन में कोई अच्छा काम किया है, उनका आदर्श अपनी आने वाली पीढ़ी के सामने रखने के लिए हम उनका जन्मदिन या पुण्य तिथि मनाते हैं। वही यह बात है कि चाहे यह 9 अगस्त क्रान्ति दिन

हो, 15 अगस्त 1947 को हमारा स्वतंत्रता दिन हो या 26 जनवरी 1950 हमारा प्रजा सत्ता दिन हो, इन्हें हम इसलिए मनाते हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ी इससे कोई आदर्श ले, एक ऊर्जा ले और आगे चले। इसी मकसद से यदि हम भविष्य में चलेंगे तो जरूर, यह एक अच्छा देश है ही, हमारे सामने चुनौती है, डोकलाम में संघर्ष किसी भी समय हो सकता है, इसलिए सभी को इकट्ठा रहकर एक विचार से उसका मुकाबला करना हमारा परम कर्तव्य है। धन्यवाद-जय हिन्द।

09.08.2017

[अनुवाद]

श्री थोटा नरसिम्हम (काकीनाडा): संकल्प पर्व पर बोलने का अवसर देने के लिए आपका बहुत धन्यवाद। वास्तव में, इस पर्व का हिस्सा होना मेरे लिए एक महान सौभाग्य है। अगस्त महीना क्रांति का महीना है और देश 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस या संकल्प पर्व के रूप में मनाएगा। हमें भारत से गंदगी, गरीबी, आतंकवाद, जातिवाद और सांप्रदायिकता जैसी बुराइयों को समाप्त करने और दूर करने की प्रतिज्ञा लेनी होगी। इस वर्ष हम भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं।

हमारे आंध्र प्रदेश राज्य से कई स्वतंत्रता सेनानियों ने महात्मा गांधी के साथ भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया।

यह पाँच वर्षीय अवधि 2017 से 2022 तक उस परिवर्तन को प्रज्वलित करेगी जो एक ऐसे भारत का निर्माण करेगी, जिसकी हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने हमेशा आकांक्षा की है। अपने *मन की बात* कार्यक्रम में, हमारे माननीय और उर्जस्वी प्रधानमंत्री ने कहा है: “इस अगस्त के महीने में; भारत छोड़ो आंदोलन के महीने में, आइए हम एक साथ आएं और गंदगी-भारत छोड़ो, गरीबी-भारत छोड़ो, भ्रष्टाचार-भारत छोड़ो, आतंकवाद-भारत छोड़ो, जातिवाद-भारत छोड़ो और सांप्रदायिकता-भारत छोड़ो का संकल्प लें।”

हमारे गौरवशाली इतिहास की चर्चा की ओर वापस जाते हुए, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया था,अगस्त का महीना क्रांति का महीना है। भारत छोड़ो आंदोलन 9अगस्त, 1942 को शुरू हुआ और भारत ने 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त की। 1942 से 1947 के पांच वर्ष देश की स्वतंत्रता के लिए निर्णायक थे। इसी तरह, 2017 से 2022 तक के इन पांच वर्षों को हमारे भविष्य के लिए निर्णायक भूमिका निभानी चाहिए।

09.08.2017

यहां, मैं हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का उल्लेख करना चाहूँगा जिन्होंने कहा था, "हर भारतीय को अपने आप को एक स्वतंत्र व्यक्ति मानना चाहिए।" गांधीजी का 'करो या मरो' का *मंत्र* भारत छोड़ो आंदोलन में बहुत महत्वपूर्ण रहा था और साथ ही सत्याग्रह और अहिंसा जैसे प्रमुख साधनों ने भारतीयों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त किए। महात्मा गांधी के नेतृत्व में, भारत के हर गाँव और शहर से लोग एक समान मिशन-'साम्राज्यवाद को उखाड़ने और एक सामाजिक कारण के लिए संघर्ष करने' के लिए , सभी सीमाओं को तार-तार करते हुए, एक हो कर नया भारत बनाने के लिए अपने विचारों के आदान प्रदान करने के लिए जुट गये।

भारत छोड़ो आंदोलन को महत्वपूर्ण मील का पत्थर और प्रेरणा मानकर, हम भारत के लोगों को एक संकल्प लेना होगा कि हम एक नया भारतबनाएंगे जो मजबूत, समृद्ध, भ्रष्टाचार मुक्त और गरीबी मुक्त हो। इसी भावना में, मैं इस सम्मानित सभा के माध्यम से सभी से अनुरोध करता हूँ कि हम सब मिलकर इस 'संकल्प पर्व' को एक महान सफलता बनाएं।

हमें दूसरों को भी ऐसा ही करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए। मेरे दिल की गहराई से, मैं भी इस आंदोलन का हिस्सा बनने का संकल्प लेता हूँ। धन्यवाद।

श्री ए.पी. जितेन्द्र रेड्डी (महबूबनगर): माननीय अध्यक्ष, आज मुझे बोलने का यह अवसर देने के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ।

भारत छोड़ो आंदोलन की जड़ें महात्मा गांधी जी ने बिल्कुल 75 वर्ष पहले, 8अगस्त 1942 को आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के बॉम्बे सत्र में रखी थी।

भारत छोड़ो आंदोलन में दिखाए गए उत्साह का आज भी महत्व है, खासकर जब हमारी समाज में फैली हुई सामाजिक बुराइयों की बात आती है। हाल ही में हमारे प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में भारत छोड़ो आंदोलन को याद किया और नागरिकों से उसी उत्साह को दिखाने का आह्वान किया, जो ब्रिटिश को हमारे देश से निकालने के लिए दिखाया गया था, इस बार 2022 तक देश से सांप्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, गरीबी और गंदगी जैसी बुराइयों को निकालने के लिए।

महोदया, महात्मा गांधी जी ने अपने उस समय के भाषण में कहा था कि हमारे लिए आवश्यक है कि ब्रिटिश लोग भारत से व्यवस्थित रूप से वापस चले जाएँ आज हमें देश से इन सामाजिक बुराइयों को भी व्यवस्थित रूप से हटाने की आवश्यकता है। गांधीवादी मूल्यों का आज भी महत्व है और भारत छोड़ो आंदोलन के समान एक आंदोलन, गांधीवादी विचारधारा के मार्ग पर, लोगों के बीच समरसता और एकता लाएगा।

महोदया, प्रधानमंत्री जी के भाषण में, उन्होंने भ्रष्टाचार को उन बुराइयों में से एक बताया जिन्हें देश से निकले जाने की आवश्यकता है। यहां, मैं बस इतना कहना चाहूंगा कि भ्रष्टाचार को निकालना होगा। आज तक भी यही बात हो रही है। अंग्रेज़ तो चले गए लेकिन यहाँ पर औलाद छोड़ गए। यहाँ पर सेम ड्रैकोनियन टैक्स चल रहा है, कॉलोनियल लीगेसी चल रही है, सिविल सर्विसेज़ ब्यूरोक्रेसी का जो चल रहा है, जो उस दिन था, वही आज भी है। यहां, शायद हमारे पास अब एक मौका है कि हम ऑल

इंडिया सर्विसेज को दोबारा देखें और सुधारें, जो एक औपनिवेशिक विरासत है, और इसके साथ ही दूसरी औपनिवेशिक परिपाटी कठोर राजस्व व्यवस्था भी, जो स्वतंत्र भारत में जारी रही है।

भारतीय प्रशासनिक सेवा आरम्भ से ही अपनी जटिल संरचना, पूर्व में अक्षमता और गंभीर भ्रष्टाचार प्रवण होने के कारण बदनाम रही है। 2012 में हांगकांग स्थित एक थिंक-टैंक ने एक रिपोर्ट जारी की थी जिसमें भारतीय प्रशासनिक सेवा को एशिया में सबसे खराब माना गया था। यहां, मैं वर्तमान सरकार के द्वारा प्रशासनिक सेवा में कुशलता लाने के लिए किए गए कदमों को स्वीकार करना चाहूंगा। पिछले कुछ महीनों में, हमने देखा है कि कुछ आई. ए. एस. और आई.पी. एस. अधिकारियों को उनके बुरे निष्पादन के आधार पर अनिवार्य रिटायरमेंट दिया गया है। पिछले वर्ष, वित्त मंत्रालय ने कुछ गलतियों के कारण कुछ आई. आर. एस. अधिकारियों के खिलाफ भी इसी तरह की कार्रवाई की थी। हालात की गंभीरता को देखते हुए, काफी बड़े सुधार की आवश्यकता है।

वर्ष 2012 में, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय ने नागरिक सेवा दिवस 2012 पर चर्चा के लिए एक पृष्ठभूमि पत्र तैयार किया था, जिसमें यह उल्लेख था कि सिविल सेवाओं में भ्रष्टाचार सर्वव्यापी हो गया है और यह एक स्वाभाविक स्थिति बन गयी है। अब यह पूरी तरह से एक अभ्यास बन गया है। इस भ्रष्टाचार के प्रमुख कारकों में से एक अखिल भारतीय सेवा संवर्ग के अधिकारियों का अपने पूरे कार्यकाल के दौरान एक राज्य में स्थायी होना है। स्थायित्व इस भ्रष्टाचार का जन्मदाता है। हमें आई. ए. एस. और आई. पी. एस. को उनके पूरे कार्यकाल के दौरान एक राज्य में रखने की इस प्रणाली में सुधार करने की आवश्यकता है क्योंकि हमारे पास पहले से ही राज्य में सेवा करने के लिए राज्य संवर्ग के अधिकारी हैं। इसलिए, इस प्रकार के प्रशासनिक सुधार लाने की आवश्यकता है; चुनावी सुधार लाने की आवश्यकता है; और वित्तीय सुधार लाने की आवश्यकता है।

वर्ष 1942 में गांधीजी के आह्वान से भारतीयों में अभूतपूर्व प्रतिक्रिया हुई और इस आह्वान के बाद हमें इस देश से ब्रिटिश को बाहर निकालने में पांच वर्ष लगे। आज के समाज में गहराई से जड़ें जमाये

हुई जो ऐसी सामाजिक बुराइयाँ मौजूद हैं, उनके मामले में इस आह्वान को दोहराया नहीं जा सकता है। सबसे जरूरी है कि परिवर्तन लाने के लिए वही स्पष्ट समर्थन और एक सच्ची भावना हो।

यह समय है कि आज हम एक *संकल्प* लें - वर्ष 2022 तक देश को भ्रष्टाचार, असहिष्णुता, लिंचिंग, शक्तिशाली लोगों द्वारा आम लोगों पर अत्याचार से मुक्त करने, लड़कियों की सुरक्षा के लिए और इस *संकल्प* को प्राप्त करने के लिए। आइए हम पांच वर्षों में एक नए भारत के निर्माण का संकल्प लें -- एक भारत जैसा कि संविधान सभा के सदस्यों ने कल्पना की थी और जिस भारत पर आजादी के संघर्ष में अपनी जान देने वाले स्वतंत्रता सेनानियों को गर्व हो।

हम बलिदान की बात करते हैं, महात्मा गांधी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, श्री भगत सिंह, आदि सभी वे लोग हैं जिन्होंने संघर्ष किया और वे हमारे जन्म से पहले के *योद्धा* थे। तो, यह हमारे लिए इतिहास है, लेकिन आज हमने तेलंगाना में देखा है कि जब वहां *आंदोलन* चल रहा था, तो लोग जैसे श्री जयशंकर, श्री श्रीकांत चारी, सुश्री शुवर्णा, श्री के. वेणुगोपाल रेड्डी, श्री राजसेखर रेड्डी और श्री यादगिरी और अन्य सभी ने भी इस *आंदोलन* में भाग लिया और नए तेलंगाना की स्थापना के लिए अपनी जान न्योछावर की।

के.सी.आर. का भी नारा था, 'हम तेलंगाना हासिल करें या मरें।' यह भी एक नारा था, जिसे उन्होंने दिया था और हमने इसे पूरा किया है। आज, इसे हासिल करने के बाद, हमने राज्य को बस इसी तरह छोड़ नहीं दिया है। आज, हम अपने तेलंगाना का सही तरीके से पुनः निर्माण कर रहे हैं ताकि पिछले 60 वर्षों से वंचित रहने वाले तेलंगाना के लोग वास्तव में वह प्राप्त करें जो उन्हें चाहिए। आज, हम देश में एक उदाहरण हैं। तो, मैं अनुरोध करूँगा कि हमारे देश को भी आज सही और अच्छे तरीके से निर्मित किया जाए। धन्यवाद, महोदया।

09.08.2017

[हिन्दी]

*__श्रीमती रमा देवी (शिवहर):__ 9 अगस्त, 2017 को हम भारत छोडो आन्दोलन के 75 साल पूरे कर रहे है। 75 साल पहले भारत छोडो आन्दोलन की गाथा आज भी इतिहास के पन्नो में वर्णित है और स्वतंत्र भारत बनाने के लिए जिन शहीदो ने कुर्बानी दी और कई प्रकार की यातनाएं सहनी पड़ी उसका युवा वर्ग पर विशेष प्रभाव पड़ता है। देश की आजादी के लिए दो मुख्य आन्दोलन हैं पहला 1857 का स्वतंत्रता संग्राम एवं दूसरा 1942 का भारत छोडो आन्दोलन। 1942 का आन्दोलन इतना शक्तिशाली था जिसके पाँच साल बाद अंग्रेज भारत छोड़ने के लिए मजबूर हो गये और अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ।

भारत छोडो आन्दोलन के दौरान देश में 942 लोग मारे गये, 1630 लोग बुरी तरह से घायल हुये, 18 हजार के करीब डी आई एस में बन्द हुये, और 60229 लोग गिरफ्तार हुए और आदरणीय सुभाष चन्द्र बोस भी 1942 को जापान की सेना के साथ भारत की तरफ बढ़े। देश में कई स्थान भारत छोडो आन्दोलन में पूरी तरफ से सक्रिय रहे है, बिहार का गया, भागलपुर, पूर्णिया एवं चम्पारण स्थानों पर भारत छोडो आन्दोलन उग्र रूप ले चुका था। बलिया में चित्तु पान्डेय के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ जेहाद ने अंग्रेजो को झकझोर कर रख दिया। आन्दोलन को दबाने के लिए चित्तू पान्डेय को फांसी की सजा दी गई। इस भारत छाडो आन्दोलन में पूज्य महात्मा गांधी जी के साथ अरूणा आसफ अली,राम मनोहर लोहिया, सुचेता कृपलानी, छोटू भाई पुराणिक, जयप्रकाश नारायण, राजेन्द्र प्रसाद, बीजू पटनायक, सुभाष चन्द्र बोस जी, कर्पूरी ठाकुर ने भारत छोडो आन्दोलन को चलाने में जो योगदान दिया भारत सदैव उनका अभारी रहेगा।

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

09.08.2017

मैं बिहार के शिवहर जिले से आती हूँ जहाँ पर तरियानी छपरा स्थान पर महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में भारत छोडो आंदोलन शुरू हुआ जिसको शहीदों की याद में एक स्मारक स्थल बनना चाहिए। मेरे तरियानी छपरा ग्राम में ग्यारह लोग शहीद हुए थे जिस स्थान पर लोग शहीद हुए थे, खेद के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि वहाँ पर अभी तक कोई स्मारक स्थल नहीं बना है जिससे शहीदों के प्रति सम्मान दिया जाए। मेरी भारत सरकार से माँग है कि शहीदों के प्रति आदर और सच्ची श्रद्धांजलि आर्पित करने के लिए, परिवार को आदर व्यक्त करे।

मैं भारत छोडो आंदोलन के शहीदों एवं इसका संचालन करने वाले नेताओं के प्रति अपने संसदीय क्षेत्र की ओर से आभार व्यक्त करती हूँ। मेरा भारत सरकार से यह भी अनुरोध है कि जिस तरह से भारत छोड़ो आंदोलन के सफल आयोजन से हमने अंग्रेजों को भारत से भगाया है उसी तरह से अंग्रेजी भाषा को सरकारी कार्यालय से, न्यायालय के काम काज से अलविदा करवाना चाहिए।

09.08.2017

[अनुवाद]

*__श्री प्रेम दास राई (सिक्किम):__ इस दिन, अगस्त क्रांति दिवस पर, मैं माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा सदन में लाए गए प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट पार्टी और हमारे प्रिय नेता पवन चामलिंग जी, स्वतंत्रता सेनानी और विशेष रूप से गोरखा समुदाय के लोगों को सलाम करते हैं। स्वर्गीय सुभाष चंद्र बोस द्वारा पोषित भारतीय राष्ट्रीय सेना में कई लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दी। इस संसद परिसर में मेजर दुर्गा मल्ल की प्रतिमा खड़ी है जो भारतीय राष्ट्रीय सेना में अपने जीवन का बलिदान देने वाले पहले भारतीय गोरखा थे। हम उन्हें और अन्य सभी भारतीयों को सलाम करते हैं जिन्होंने अपना सब कुछ दिया, ताकि हमें अपनी आजादी और स्वतंत्रता मिल सके, जिसे, कभी-कभी मुझे लगता है कि हम हल्के में लेते हैं।

इस दिन के अवसर पर, हमारे अशांत क्षेत्र में शांति की स्थापना हो। जब तक दार्जिलिंग में उत्तेजना बनी रहेगी, सिक्किम की प्रगति नहीं हो सकेगी।

भले ही सिक्किम 1975 में भारतीय संघ में शामिल हुआ हो, लेकिन हमने हमेशा भारतीय होने के लिए सोच और हाथ मिलाया है। ।

हम अपने प्रधानमंत्री के साथ संकल्प लेते हैं कि हम पूरे दिल से 'संकल्प से सिद्धि' के लिए काम करेंगे और 2022 तक एक नए भारत का निर्माण करेंगे

* भाषण सभा पटल पर रखा गया ।

09.08.2017

[हिन्दी]

*__श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा):__ आज से 75 वर्ष पहले 9 अगस्त, 1942 का ''भारत छोडो आंदोलन'' देश की आजादी का दूसरा पड़ाव माना जाता है। प्रथम 1857 ईसवीं का स्वतंत्रता संग्राम और द्वितीय 1942 ईसवीं का भारत छोडो आंदोलन। लम्बी अंग्रेजी हुकूमत के विरूद्ध कई ऐतिहासिक आंदोलन हुए। हमारे पूर्वजों ने बहुत प्रताड़नाएं और कष्ट सहे। हजारों लोगों की कुबारनियों के बाद ही हमें आज स्वतंत्र भारत में रहने का अवसर मिला। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भारत छोडो आंदोलन या अगस्त क्रांति, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की अंतिम लड़ाई थी। इस आंदोलन के द्वारा ब्रिटिश हुकूमत की नींव को हिलाकर रख दिया गया था। महात्मा गाधी जी के नेतृत्व में यह आंदोलन डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी, अच्यूत पटवर्धनजी, अरूणा आसफ अली जी, पंडित जवाहर लाल नेहरू जी, राम मनोहर लोहिया जी, सुचेता कृपलानी जी छोटू भाई पुराणिक जी, जयप्रकाश नारायण जी जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों की बागडोर ने इस आंदोलन को एक ढाँचागत स्वरूप प्रदान कर लाखों युवाओं को ब्रिटिश हुकूमत के विरूद्ध खड़ा कर दिया। महात्मा गांधी जी की यह तीसरी लड़ाई थी, जो क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद उनहोंने ''अंग्रेजों भारत छोडो'' का नारा दिया और पूरे देश में एक साथ 9 अगस्त को आंदोलन छेड़ दिया। यह दिन इसलिए भी चुना गया था कि हर वर्ष ''काकोरी-काण्ड'' की याद ताजा रखने के लिए युवाओं द्वारा ''काकोरी-काण्ड'' स्मृति-दिवस मनाने की परम्परा भगत सिंह जी ने प्रारम्भ कर दी थी और उस दिन से हर वर्ष बहुत बड़ी संख्या में नौजवान एकत्र होते थे। सुभाष चन्द्र बोस जी के ''आजाद हिन्द फौज'' भी आजादी के लिए आंदोलन और संघर्ष कर रही थी।

अतः गांधी जी ने एक रणनीति के तहत यह दिन चुना था। ब्रिटिश सरकार को करीब 6 हफ्ते लगे इस आंदोलन को दबाने में। वैसे ही द्वितीय विश्व युद्ध में परेशान ब्रिटिश हुकूमत ने इस आंदोलन के आगे

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

घुटने टेक दिए। उत्तर व मध्य बिहार के 80 प्रतिशत स्थानों पर जनता का राज हो गया। छात्रों, मजदूरों एवं किसानों ने मिलकर वैकल्पिक सरकार बनाई। 1939 के दूसरे विश्वयुद्ध के कारण वस्तुओं के दामों में बेतहाशा वृद्धि हुई थी, जिसके कारण जनता में काफी रोष व्याप्त था और महात्मा गांधी जी के ''करो या मरो'' के नारे ने लोगों को एक नई ऊर्जा के साथ आंदोलन में कूद पड़ने की प्ररेणा दी। लाल बहादुर शास्त्री जी के नारे ''मरो नहीं-मारो'' ने आग में घी का काम किया और आंदोलन सही मायने में एक जन-आंदोलन बन गया। अन्ततः 15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हुआ। हम सभी भारतवासी अपने पूर्वजों के ऋणी हैं।

मैं एक विषय रखना चाहता हूँ। गांधी जी का एक सपना था कि देश शराब से मुक्ति पाए। हमारे नेता माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी का इस ओर एक सार्थक प्रयास रहा है और उन्होंने बिहार जैसे आति पिछड़े और बड़ी आबादी वाले राज्य को नशा-मुक्ति प्रदेश बिहार बनाने का कार्य किया है। माननीय प्रधानमंत्री जी का गृह राज्य गुजरात भी शराब-मुक्त प्रदेश है। अतः सरकार क्यों नहीं शराब मुक्त देश की घोषणा करती है। इस तरह हम देश को क्राईम-मुक्त बनाने की दिशा में आगे बढ़ेंगे क्योंकि शराब के कारण ही क्राइम में दिनोंदिन इजाफ़ा हो रहा है। शराब-मुक्त प्रदेश होने से गरीबी से छुटकारा मिलेगा। हमारी माताओं, बहनों पर अत्याचार और जुल्म नहीं होगा। हमारे पूर्वजों के सपनों का देश तरक्की के मार्ग पर आगे बढ़ेगा। बहुत-बहुत धन्यवाद।

09.08.2017

[अनुवाद]

*__श्री विजय कुमार हांसदाक (राजमहल):__ मैं इस विषय पर विनम्रता पूर्वक कहना चाहूंगा कि जब भी हमारे देश के स्वतंत्रता इतिहास के बारे में चर्चा होती है, तो उसे 1857 के विद्रोह तक याद किया जाता है। लेकिन 1857 से पहले 1855 में सिद्धू मुर्मू और कान्हू मुर्मू के नेतृत्व में संथाल हुल अंग्रेजों के खिलाफ पहला विद्रोह था और भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में इसके बारे में प्रमुखता से कहा या लिखा नहीं गया है जिसे अखिल भारतीय स्तर पर जानने और बोलने की आवश्यकता है।

मैं पुन: आशा करता हूँ कि हमारा महान भारत एकजुट रहे और सभी की अपेक्षाओं के अनुसार आगे बढ़े और प्रगति करे। हम, अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हुए, साथ मिलकर हमारे लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने और उनके सपनों को साकार करने की दिशा में काम कर सकते हैं। हमारे शहीदों के सपने को पूरा करने के लिए, जिन्होंने हमारे खुशहाल और समृद्ध भविष्य के लिए खुशी से अपना जीवन समर्पित किया है।

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

[हिन्दी]

*__श्री अजय मिश्रा टेनी (खीरी) :__मैं भारत छोड़ो आंदोलन के 75 वर्ष पूरा होने पर सभी स्वतंत्रता संग्राम के वीरों को श्रद्धांजलि देते हुऐ अपने जिले के श्री राजनाराण मिश्र, जिनको इस आंदोलन में लखनऊ जेल में फांसी दी गयी थी। यह न केवल इस आंदोलन में हुई एकमात्र फाँसी थी बल्कि भारत के 90 वर्ष के स्वतंत्रता संग्राम (1857-1947) की अंतिम फाँसी थी मेरे जिले के ही दूसरे स्वतंत्रता संगाम सेनानी पं0 बंशीधर शुक्ला का भी बड़ा योगदान अपने गीतों उठ जाग मुसाफिर.....कदम से कदम मिलाये जाए.... ऐसे कई गीतों द्वारा जिन्हें महात्मा गाँधी जी की सभा व सुभाष बोस जी की आजाद हिन्द फौज के सेना गीत के रूप में गाया जाता था। मैं अपने जिले के साथ सभी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए प्रधानमंत्री जी द्वारा सुझाये गये लक्ष्य को संज्ञान लेकर सभी से अनुरोध करता हूं कि 2017 से 2022 तक हम सब मिलकर महात्मा गांधी के सपनों का भारत व पं0 दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय के संकल्प के साथ भारत का निर्माण करें।

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

[अनुवाद]

*__श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन (कोल्लम):__ 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन, या अगस्त क्रांति, गांधीजी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम में सबसे शक्तिशाली और जनांदोलन था।

1942 में वर्धा में आयोजित कार्य समिति बैठक में कांग्रेस ने पहली बार संघर्ष के विचार को स्वीकार किया।

ए.आई.सी. सी. ने बॉम्बे में 7 और 8 अगस्त को भारत छोड़ो आंदोलन के रूप में संघर्ष को मंजूरी दी।

द्वितीय विश्व युद्ध 1939 में शुरू हुआ था और 1942 के मध्य तक जापानी सेनाएं भारत की सीमा के करीब पहुँच रही थीं।

चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका से ब्रिटेन को दबाव बढ़ रहा था कि वे युद्ध के समाप्त होने से पहले भारतीयों की स्थिति के मामले को हल करें। इस राजनीतिक दबाव के कारण, वार कैबिनेट के सदस्य सर स्टाफोर्ड क्रिप्स को भारत भेजा गया था ताकि वे ब्रिटिश सरकार के प्रस्तावित घोषणा पत्र पर चर्चा कर सकें।

घोषणा पत्र

- युद्ध के बाद भारत डोमिनियन की स्थिति।
- और इसके अलावा, उन्होंने ब्रिटिश भारत सरकार अधिनियम 1935 में परिवर्तनों को स्वीकार किया।

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

कांग्रेस कार्यसमिति को घोषणा पत्र स्वीकार नहीं था और इसे पूरी तरह से खारिज कर दिया गया।

क्रिप्स मिशन की असफलता ने कांग्रेस और ब्रिटिश सरकार के बीच संबंधों को और अधिक तनावपूर्ण बना दिया।

इन परिस्थितियों में कांग्रेस को पूर्ण स्वतंत्रता या पूर्ण आज़ादी के लिए संघर्ष शुरू करना पड़ा।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नेताओं के प्रसिद्ध उद्धरणों का उल्लेख करना बहुत समीचीन होगा।

गांधीजी: मुंबई में आयोजित ए.आई.सी.सी. बैठक में प्रस्ताव का समर्थन करते हुए गांधीजी ने भाषण दिया:

"मैं पूर्ण स्वतंत्रता के सिवाय किसी चीज से संतुष्ट नहीं होने वाला।" शायद वह (वायसराय) नमक कर कर्ज़ की समाप्ति की प्रस्ताव दें, जो एक बुराई है। लेकिन मैं बस आज़ादी से कम नहीं कहूँगा।

उन्होंने एक मंत्र भी दिया, "करो या मरो" "हम या तो भारत को आज़ाद करेंगे या फिर प्रयास में ही मर जाएंगे।" हम गुलामी को जारी रहने देने के लिए छोड़ नहीं देंगे। ".

उसने तो यहाँ तक कह दिया कि स्टैफ़र्ड क्रिप्स का प्रस्ताव "खुले तौर पर साम्राज्यवाद" था। गांधीजी के उपरोक्त भाषण उनके सामाजिक कट्टरपंथ और कांग्रेस की विचारधारा में बदलाव का संकेत देते हैं।

हालाँकि अहिंसा की आवश्यकता हमेशा दोहराई जाती रही, गांधी का “करो या मरो” मंत्र गांधी के उग्र मिजाज को दर्शाता है।

8 अगस्त को मुंबई में ए.आई.सी.सी. बैठक में 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' पर बहस का जवाब देते हुए पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा: "हम पूरी तरह गंभीर हैं। इसमें कोई गलती न हो, हम बहुत खतरनाक स्थिति पर हैं और हम इसे लेकर पूरी तरह गंभीर हैं।"

"हम आग में पहुँच चुके हैं और अब हमें इससे सफलतापूर्वक बाहर निकलना है, वरना इसी में जलकर खत्म हो जायेंगे ।"

सरदार वल्लभभाई पटेल ने कहा: "यदि गुलामी और अराजकता के बीच चयन करना हो, तो मुझे आशा है कि लोग अराजकता को चुनेंगे, क्योंकि अराजकता अंततः समाप्त हो जाएगी और लोग स्वतंत्र हो जाएंगे।"

आंदोलन के एक सबसे सक्रिय क्रांतिकारी का मानना था कि भारत छोड़ो आंदोलन फ्रांसीसी क्रांति और रूसी क्रांति से कम नहीं था। "इसने न केवल देश में पूर्ण परिवर्तन लाया बल्कि नए भारत को जन्म दिया और इसके राजनीतिक जीवन को नई दिशा दी।"

जब प्रस्ताव लागू हुआ, तो सैकड़ों लोग मारे गए, हजारों घायल हुए और एक लाख से अधिक लोग जेल में डाल दिए गए। इसके बाद कांग्रेस संगठन पर प्रतिबंध लगा दिया गया और लगभग सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।

भारत छोड़ो आंदोलन का भारतीय राष्ट्रवाद के भविष्य पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। वह नई छल-राष्ट्रवादिता नहीं, जो आजकल हमें अनुभव हो रही है।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध किया और युद्ध प्रयास का समर्थन किया क्योंकि सोवियत संघ का समर्थन करने की आवश्यकता थी।

इसकी प्रतिक्रिया में, ब्रिटिश सरकार ने कम्युनिस्ट पार्टी पर लगे प्रतिबंध को उठा दिया। कम्युनिस्टों के अनुसार दूसरे विश्व युद्ध को "इम्पीरियलिस्टों का युद्ध" माना गया था। "किसी को इसमें शामिल होने के लिए एक पाई भी नहीं दी जानी चाहिए।"

लेकिन जब हिटलर ने 1941 के जून में रूस पर हमला किया, तो कम्युनिस्टों का निर्णय बदल गया। उन्होंने इसे साम्राज्यवादी युद्ध कहना छोड़ दिया और इसे जनता की लड़ाई कहा।

उसके बाद, सोवियत संघ पर हमले के बाद कम्युनिस्ट पार्टी ने ब्रिटिश की ओर अपनी निष्ठा बदल ली।

भारतीय समाजवादी पक्ष (आर.एस.पी.) के सदस्य के रूप में, मुझे गर्व है कि हमारी पार्टी ने कांग्रेस की विचारधारा में अंतर होने के बावजूद भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भाग लिया और देश के लिए इतनी जानें न्योछावर की। जोगेश चंद्र चटर्जी, आरएसपी के संस्थापक सचिव, देश के विभिन्न हिस्सों में कई आंदोलनों का आयोजन और सक्रियता से भाग लिया। आर.एस.पी. के अनुभवी नेता कमरेड त्रिदीप कुमार चौधुरी और अन्य कई लोग भारत छोड़ो आंदोलन में गिरफ्तार किए गए और कारावास में डाले गए।

हमारे पूर्वजों ने राष्ट्र के सुधार के लिए अपनी जानें न्योछावर की। यह समय सही है कि हम चर्चा करें कि क्या उन हजारों स्वतंत्रता सेनानियों के सपने को जो अपनी जानें न्योछावर की हैं, स्वतंत्र भारत में पूरा किया गया है।

आजकल, भारतीय राष्ट्रवाद जानबूझकर एक अलग रूप में बनाया जा रहा है, जो किसी विशेष वर्ग और उनके विश्वास के राष्ट्रवाद के रूप में है।

विविधता में एकता भारतीय संघर्ष की सुंदरता थी। हिंदू, मुस्लिम, सभी धर्मों और विश्वासों ने साझा लक्ष्य "भारत की स्वतंत्रता" को प्राप्त करने के लिए एकजुट हो गए थे।

09.08.2017

दुर्भाग्य से, स्वतंत्रता के 7 दशकों के बाद, कुछ वर्गों की राजनीतिक और सामाजिक स्वतंत्रता खतरे में है।

यह वह भारत नहीं है जिसे हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने आशा की थी। तो आज, जब हम भारत छोड़ो आंदोलन की स्मृति में हैं, स्वतंत्र भारत के लोगों को एक प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि भारत की एकता, अखंडता और विविधता को सभी विश्वासों और धर्मों के पार जाति, वर्ण और धर्म का सम्मान करके संरक्षित रखा जाएगा।

धन्यवाद।

09.08.2017

[हिन्दी]

*__श्री भैरों प्रसाद मिश्र (बांदा) :__ आज 9 अगस्त को सन् 1942 के अंग्रेजो भारत छोड़ो आंदोलन के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित सदन में चर्चा के दौरान सर्वप्रथम में उन वीर शहीदों को नमन करता हूँ जिनके बलिदान के कारण आज हमें स्वतंत्रता मिली। साथ ही, मैं उन महापुरूषों को भी इस अवसर पर याद करता हूं जिनके प्रयासों से भारत आज विश्व की एक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। स्वतंत्रता संग्राम में अगर बुन्देलखण्ड के योगदान की चर्चा न की जाए तो यह बेमानी होगा। हमारे बुन्देलखण्ड की वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने का कार्य किया और स्वतंत्रता आंदोलन में अपने प्राणों को आहूति दी। रानी दुर्गावती का बलिदान हम सबको प्रेरणा देता रहेगा। महाराज छत्रसाल के तलवार की धार से अंग्रेजों के पसीने छूटते थे। महाराणा प्रताप का बलिदान व भामाशाह का सब कुछ देश के लिए अर्पण करना हम सबको प्रेरणा देता रहेगा। हमारे प्रधानमंत्री जी ने जो आगामी पाँच वर्षों के लिए हम सबसे देश के लिए संकल्प लेकर कार्य करने का आह्वान किया है। हम हमारे लिए प्रेरणादायक है और मैं सदन से आग्रह करना चाहता हूँ कि हम सब मिलकर इस देश से भ्रष्टाचार, कुपोषण, आतंकवाद, बेरोजगारी, व जातिवाद व क्षेत्रवाद को मिटाने के लिए अपना पूरा शक्ति और समर्थन लगाने का कार्य करके भारत को सन् 2022 तक आबादी के 75 साल पूरे होने पर विश्व की एक महाशक्ति बनाएँ।

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

09.08.2017

[अनुवाद]

*__श्री जोस के. मणि (कोट्टायम):__ मैं, अपनी पार्टी केरल कांग्रेस (एम) की ओर से, भारतीय राष्ट्रवादियों द्वारा साम्राज्य पर अंतिम हमले को चिह्नित करते हुए 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' के कार्यक्रम पर बोलने वाले अपने सहयोगियों के साथ अपनी एकजुटता व्यक्त करता हूं। हमारे पुरानी पीढ़ी के कई महान नागरिक हैं, जो अब अपने अंतिम वर्षों में जी रहे हैं, जो हमें पिछली पीढ़ी के धैर्य की याद दिलाते हैं जो देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर बलिदान की वेदी पर पहुँचे। आज वे बहुत से लोग जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था, हमारे साथ नहीं हैं, लेकिन उनके धैर्य का प्रतीक उनकी कैद हमें एक बहादुर राष्ट्र की गौरवशाली संतान बनाती है।

कुछ लोग जो अभी भी हमारे साथ हैं और जिन्होंने 1942 के ऐतिहासिक भारत छोड़ो आंदोलन में छात्र समुदाय के युवा फायरब्रांड के रूप में भाग लिया था, वे नेताजी सुभाष चंद्र बोस जैसी राष्ट्रवादी विचारधाराओं की ओर आकर्षित हुए, जिन्होंने विदेशी धरती से इस तरह के आंदोलनों का आयोजन किया था। पुनरावलोकन करते हुए, मुझे यह लगता है कि इस महत्वपूर्ण आंदोलन के कारण महायुद्ध के तत्काल बाद उपनिवेशीय शक्तियों को शीघ्रता से भारत को उसकी अधीनता के लंबे वर्षों से मुक्त करने का अंतिम निर्णय लेना पड़ा।

जिन लोगों ने इस ऐतिहासिक घटना को संभव बनाया, उनके प्रति इस श्रद्धांजलि को पूरा करते हुए, मैं इस राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए उनके स्थायी बलिदान को नमन करता हूं, जिसके हम सभी आभारी नागरिक हैं।

जय हिंद!

---

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

09.08.2017

<u>अपराह्न 1.00 बजे</u>

श्री पी. करुणाकरन (कासरगोड): धन्यवाद, अध्यक्ष महोदया। मैं भारत में भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ पर चर्चा में भाग लेना चाहूँगा।

निःसंदेह, यह नारा और संदेश राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने दिया था। अनेकों आंदोलन थे जैसे कि असहयोग आंदोलन, *दांडी* मार्च, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार और कई अन्य आंदोलन। इसके अलावा, राजनीतिक नारों के साथ-साथ, अस्पृश्यता और जाति व्यवस्था जैसे सामाजिक परिवर्तनों पर भी नारे शुरू हुए थे।

हमें स्वतंत्रता एक दिन या एक साल के संघर्ष के कारण नहीं मिली, बल्कि यह राष्ट्र द्वारा लड़े गए लंबे गौरवशाली संघर्षों के कारण मिली। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का भी अपना योगदान है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का इस संघर्ष का नेतृत्व करने में बहुत बड़ा योगदान है। इस समय पर, हम अन्य नेताओं जैसे पंडित जवाहर लाल नेहरू, श्री मोतीलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, डॉक्टर अंबेडकर, लाला लाजपत राय, श्री बाल गंगाधर तिलक और बहुत से अन्य प्रकांड व्यक्तित्वों को भी याद कर सकते हैं।

श्री ए. के. गोपालन, श्री ई. एम. एस. नम्बूदिरिपाद, श्री एस. ए. डांगे, श्री इंद्रजीत गुप्ता, श्री अजय घोष और कई अन्य वाम पक्ष के नेता पहले कांग्रेस पार्टी के साथ काम कर रहे थे। उन्होंने राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर भी संघर्ष में भाग लिया है।

यदि हम एक स्वतंत्र दृष्टिकोण के साथ विश्लेषण करते हैं, तो हम स्वतंत्रता संग्राम का एक बहुत ही प्रेरक पहलू देख सकते हैं, जिसने विभिन्न दलों और नेताओं को मुख्य उद्देश्य की ओर अग्रसर किया, जो एक ही है, जो स्वतंत्रता संग्राम की मुख्यधारा की ओर ले जाता है।

पहले स्वतंत्रता संग्राम को ब्रिटिशों द्वारा ' *सिपाही लहला* ' कहा गया था, जिसमें हजारों सैनिकों ने भाग लिया और अपनी जान गंवाई।

महोदया, मेरठ और कानपुर साजिश के मामलों को अंग्रेजों द्वारा तैयार किया गया और उन पर आरोप लगाए गए। वाम दल के कई नेताओं को गिरफ्तार किया गया और लंबे समय तक कारावास में रखा गया। यह दिलचस्प है कि जवाहरलाल नेहरू और मोतीलाल नेहरू, जो कार्यसमिति के सचिव और अध्यक्ष थे, ने इन साजिश मामलों में अभियुक्तों का बचाव किया है।

मैं गर्व से कह सकता हूँ कि वर्तमान वामपंथी दल के नेताओं ने इसलिए सालों जेल में बिताए, क्योंकि उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। इस सभा के पहले विपक्ष के नेता, श्री ए.के. गोपालन-15 वर्षों तक वे इस सदन में विपक्ष के नेता थे- ने केरल और बाहर की विभिन्न जेलों में लगातार कई साल बिताए हैं। वह एक बार नहीं, बल्कि कई बार जेल में रहे हैं। मुझे यहाँ बताते हुए खुशी है कि मैं श्री ए.के. गोपालन का दामाद हूँ। सत्ता पक्ष की पंक्तियों में और विपक्ष में भी कई प्रतिष्ठित व्यक्तित्व यहाँ थे।

श्री ए.के. गोपालन को त्रिवेंद्रम पुजापुरा केंद्रीय जेल में कक्ष संख्या 58 में रखा गया था। उन्हें बहुत लम्बे समय तक कैद में रखा गया था। जब भारत 15अगस्त, 1947 को स्वतंत्र हुआ, तब उन्हें रिहा नहीं किया गया था; वे अभी भी जेल में थे और वहां अकेले नारे लगा रहे थे। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और श्री ए.के. गोपालन के बीच बहुत अच्छी आपसी समझ थी। हम श्री ए.के. गोपालन और जवाहरलाल नेहरू की जीवनी में इसे देख सकते हैं।

हमारे पार्टी के महासचिव श्री हरकिशन सिंह सुरजीत एक राज्य सभा सदस्य थे। उनके जीवन के 16$^{वें}$ वर्ष में, जब उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज उठाया, तब पुलिस ने उन्हें घेर लिया और उन पर गोली चलाने की कोशिश की। 20 मार्च, 1923 को, चार युवा साथी - आप्पू, कुंखम्बुनैर, अब्बुक्कर और चिरुकंकर -

जिनकी उम्र 19 वर्ष थी, को केवल इस कारण फांसी दी गई क्योंकि वे कांग्रेस स्वयंसेवक के रूप में स्वतंत्रता संग्राम में भाग ले रहे थे।

केरल में तत्कालीन शासक सर सी.पी. रामास्वामी, जो ब्रिटिश सरकार के बहुत वफादार शासक थे, के आदेश पर सैकड़ों निर्दोष लोगों की पन्नाप्रिया और वायलार में गोली मारकर हत्या की गई और उन्हें जला दिया गया।

हमारा स्वतंत्रता संग्राम महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय लोगों का संघर्ष था। हजारों लोगों को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। छात्र, किसान, मजदूर, वकील, डॉक्टर और विभिन्न क्षेत्रों के एक बड़े वर्ग के लोग इस संघर्ष में शामिल थे। हम जलियांवाला बाग के शहीदों, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, राजगुरु और कई अन्य को नहीं भूल सकते। पहला स्वतंत्रता संग्राम 1857 में शुरू हुआ, लेकिन ब्रिटिश इसे *"सिपाही लहला"* कहते थे।

मैं और विवरण नहीं देना चाहता। भारत छोड़ो आन्दोलन के 75$^{वें}$ वर्षों और हमारी स्वतंत्रता के 70 वर्षों के बाद, अब हमारे लिए अपने गुणदोषों का विश्लेषण करने का समय है, जैसा कि माननीय अध्यक्ष ने पहले ही कहा है। भारत चीन के बाद दुनिया में सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है। यह हमारे पास वास्तव में एक बड़ा संसाधन है। हमारे पास एक निर्वाचित संसद है - लोक सभा और राज्य सभा; हमारे 29 राज्य हैं; हमारी एक न्यायिक प्रणाली है –उच्चतम न्यायालय से निचली न्यायिक अदालतों तक; हमारे पास भारतीय रिज़र्व बैंक है जो मौद्रिक प्रणाली को नियंत्रित करता है; हमारे पास राष्ट्र के मुख्य रूप में राष्ट्रपति भी है। ये हमारे प्रशासनिक और संगठनात्मक उपकरण हैं जो हमारे लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए स्थापित किए गए हैं। यह हमारे लिए वह समय है जब हमें हमारे संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित मजबूत कदम उठाने की आवश्यकता है, जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, संगठन की स्वतंत्रता, किसी भी आहार का चयन करने की स्वतंत्रता, किसी भी भाषा में बोलने की स्वतंत्रता

और कहीं भी जाने की स्वतंत्रता को संकेत करती है। हमारे सामने यह सवाल है कि क्या हम इन महत्वपूर्ण मानकों का पालन कर पा रहे हैं।

एक ओर हमारी उपलब्धियाँ हैं, तो दूसरी ओर हमें अपने दोषों का स्व-मूल्यांकन करना होगा। भारत छोड़ो आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी कि इसमें धार्मिक और सांप्रदायिक भेद नहीं था। हमारे छह प्रमुख धर्म, 122 मुख्य भाषाएँ, 1599 अन्य भाषाएँ, 63 मुख्य त्योहार, अस्सीवें अनुसूची में शामिल 23 भाषाएँ, 3,000 जातियाँ और 25,000 उपजातियाँ - हैं। यह हमारे भारतीय समाज की प्रेरणादायक जटिलता है।

हम इन विभिन्न विशेषताओं के बावजूद राष्ट्रीय एकता को हासिल कर सके। यहां, हमें अन्य धर्मों, अन्य जातियों और अन्य भाषाओं के साथ सहनशीलता और सामंजस्य देखने को मिलता है। राष्ट्रीय एकता विभिन्न समाजों के साथ सहनशीलता और सामंजस्य के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। मुझे खेद है कि हम ऐसे वातावरण को खो रहे हैं। अल्पसंख्यकों की जनसंख्या कम है। यह लगभग 20 प्रतिशत से कम है। हाल के दिनों में, गोरक्षा के बारे में सरकार द्वारा जारी अधिसूचना और गोरक्षक के नाम पर हमने जो विभिन्न घटनाएं देखी हैं, उन्होंने दलितों और अल्पसंख्यकों में चिंता और आशंका पैदा कर दी है। लेकिन मुझे अपने प्रधानमंत्री की सराहना करनी है जिन्होंने कहा कि वे बहुत मजबूत कार्रवाई करेंगे। हालांकि, यह अभी भी जारी है।

माननीय अध्यक्ष: कृपया अपनी बात समाप्त करें।

श्री पी. करुणाकरन: मैं केवल दो मिनट लूँगा ।

हमें आईटी क्षेत्र के विकास में आगे बढ़ना होगा। 'डिजिटल इंडिया' का एक नारा है। मैं इससे पूरी तरह सहमत हूं। कृषि हमारे देश की रीढ़ है। लेकिन अब रीढ़ की हड्डी टूट चुकी है। हम देखते हैं कि मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र और अन्य स्थानों से हजारों किसान आ रहे हैं। यह राजनीतिक संघर्ष नहीं

है। यह जीवन बचाने का संघर्ष है। तो सरकार को इस दिन के उत्सव को मनाते समय इस विषय पर विचार करना चाहिए।

यह सच है कि भ्रष्टाचार है। यह कैंसर की तरह फैल रहा है। लेकिन, सरकार ने क्या कार्रवाई की है? भ्रष्टाचार के मुद्दे को राजनीतिक मुद्दा नहीं बनाना चाहिए। सरकार को इसे एक गंभीर मुद्दे के रूप में लेना चाहिए। सरकार को इसका उपयोग राजनीतिक हथियार के रूप में, सरकारों को निष्क्रिय करने या सीटें प्राप्त करने के राजनीतिक उद्देश्य के रूप में नहीं करना चाहिए। सरकार को इसके लिए सी.बी.आई. या प्रवर्तन निदेशालय का उपयोग नहीं करना चाहिए। अगर सरकार सच्ची है, तो इसे खुले दिल से निपटना चाहिए। धन्यवाद।

श्री तथागत सत्पथी (ढेंकानल): महोदया, मैं सबसे पहले आज के इस वातावरण को बनाने के लिए आपका धन्यवाद करना चाहूँगा। जैसा कि आपने कल बी.ए.सी. में हमें बताया था, आपने व्यक्तिगत रूप से इस दिन को भारतीय संसद में इस प्रकार की गंभीर चर्चा के लिए समर्पित करने में रुचि ली है। मैं इस सदन के सभी पक्षों को इस चर्चा में भाग लेने और एक-दूसरे के भाषण में व्यवधान डाले बिना अपनी राय व्यक्त करने के लिए धन्यवाद दूंगा।

इस विशाल देश के 130 करोड़ से लेकर 150 करोड़ लोगों के हम सभी प्रतिनिधियों के अपने-अपने सपने हैं। शायद कुछ छोटे लोग हों और उनके पास देश के बारे में छोटे सपने हों। कुछ लोगों के पास बड़े दृष्टिकोण और बड़े सपने होते हैं। लेकिन, हम सभी के सपने हैं कि हम इस देश को अगले 50 वर्षों या 100 वर्षों में किस रूप में देखते हैं।

हम सभी जानते हैं और हमें यह बात पता है कि जो लोग अपने लिए जीते हैं, उन्हें इस दुनिया में नफरत की नजर से देखा जाता है या उन्हें नजरअंदाज किया जाता है। लेकिन, वे और केवल वे लोग जिन्होंने दूसरों के लिए जीवन बिताया है, उन्हें पूरी दुनिया में प्यार से याद किया जाता है, न कि केवल किसी विशेष देश में, बल्कि पूरी दुनिया भर में। भारत का इतिहास बार-बार दोहराया गया है और बहुत सारे विद्वान् वक्ताओं ने अपने विचार रखे हैं। तो मेरे पास इतनी हिम्मत है कि मैं कह सकूं कि मैं वापस जाना नहीं चाहूंगा और इतिहास का कोई पन्ना खोलना नहीं चाहूँगा। मैं यहाँ कुछ शब्द बोलना चाहूँगा कि मैं आज भारत में कैसा महसूस करता हूँ, मुझे आज क्यों परेशानी महसूस हो रही है? मुझे क्यों चिंता हो रही है? हम सभी मिलकर कहाँ खड़े हैं - चाहे वह कांग्रेस हो, भाजपा हो, बी.जे.डी. हो, ए.आई.ए.डी.एम.के. हो, या फिर तृणमूल कांग्रेस हो? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। राजनीतिक पार्टियां महत्वपूर्ण नहीं होतीं। हम सबसे पहले भारतीय के रूप में जन्म लेते हैं। जब हम मरेंगे, तो हम भारतीय के रूप में ही मरेंगे।

हमें स्वीकार करना होगा कि यह एक बहु-सांस्कृतिक समाज है जहां लोग तमिल को उतने ही प्यार और सम्मान से बोलते हैं जितना हिन्दी को , जहां लोग उतने ही उत्साह से उड़िया या असमिया बोलते हैं जितना मराठी या गुजराती बोलते हैं। इसलिए, यह एक ऐसा देश है जहां सहिष्णुता इस राष्ट्र की जड़ों में हैं। यह विशेष रूप से ऐसी चीज नहीं है जिसे छत से चिल्ला कर कहा जाये और सहिष्णुता की मांग की जाये । या तो यह आपके अंदर है, या फिर इस देश का इतिहास हमेशा-के-लिए आपको अस्वीकार कर देगा।

हम इस देश में दीवारें नहीं बना सकते। हम नहीं कह सकते कि क्योंकि आप इस प्रकार के कपड़े पहनते हैं, आप इस प्रकार की भाषा बोलते हैं, आप इस प्रकार का शाकाहारी या मांसाहारी भोजन करते हैं, इसलिए आप हमसे अलग हैं। हम इस 21$^{वीं}$ सदी में इस देश को हमारा और उनका देश बनाने का लक्ष्य नहीं रख सकते। हम इस देश के किशोरों को एक विकृत छवि देने का जोखिम नहीं उठा सकते हैं जो हमने लोगों के प्रतिनिधियों के रूप में इस देश का सपना देखा है। दुःख की बात है कि हमारी छोटी-मोटी इच्छाओं और हमारी छोटी-मोटी महत्वाकांक्षाओं में, हम देश के हित को भूल गए हैं। मुझे कहीं भी आकांक्षा नहीं दिखाई देती। यहाँ बहुत सारी महत्वाकांक्षा है। मैं इन दोनों में बहुत अंतर मानता हूँ।

जब गांधीजी ने कहा, "*करे या मरे*" , हमने उसे ट्विस्ट किया है। हमने इसे बना दिया है, *"करे या मारें"* , और यह भारत की आने वाली पीढ़ियों के लिए न्यायसंगत नहीं है। जब उन्होंने कहा, *"अहिंसा* , तो उन्होंने "सविनय अवज्ञा" भी कहा , क्योंकि उन्हें पता था कि भारत की जनता हथियार नहीं उठा सकती थी। उन्हें यह मालूम था कि हमारी प्रकृति यह है कि हम साम्राज्य के प्रति अवज्ञा करेंगे, चाहे वह हम पर शासन करने वाला कोई भी हो। उसी तरह, जब उन्होंने "असहयोग" कहा, तो उन्हें हमारी प्रवृत्ति का भी पता था कि हम *"भक्त"* बनना पसंद करते हैं, हमें "ट्रोल" होना पसंद है और हम उन लोगों के चरणों में झुकना पसंद करते हैं जो सत्ता में होते हैं, केवल इसलिए कि हमारे पास साहस नहीं होता कि हम जो सही मानते हैं, जो हमारे लिए सही है या जो ईमानदार भारत है, उसके लिए खड़े हों। हमने

ओडिशा में पाइका विद्रोह देखा है, हमने श्री जय राजगुरु को देखा है, हमने श्री सुरेंद्र साई को देखा है और हमने बहुत सारे स्वतंत्रता सेनानियों को देखा है। लेकिन महोदया, मैं सिर्फ इतना कहना चाहूंगा कि अब समय आ गया है कि हम अपने सभी सपनों को एकजुट कर लें। हमें बंटना नहीं चाहिए और छोटी-मोटी लड़ाइयों में नहीं पड़ना चाहिए, जैसे कि कौन कौन सा विधायक खरीदता है, कौन किस सीट पर लड़ता है, कौन क्या जीतता है और कौन सी राज्य सरकार कहाँ आती है। यह अब राजनीति नहीं है। यह भारत का भविष्य है। मुझे आशा है कि आज, इस महान दिन पर, जब माननीय अध्यक्ष महोदया ने इसे इस प्रकार से बनाया है और शुरुआत में ही मार्गदर्शन किया है। मुझे आशा है कि आज, इस महान दिन पर, जब अध्यक्ष महोदया ने इसे इस प्रकार से व्यवस्थित किया है और शुरुआत में ही मार्गदर्शन किया है, इसे हम सभी के लिए आपसी समझ और सहयोग का दिन बना दिया है। आज जब हम घर वापस जाएँगे, तो हम सभी सोचेंगे कि हम इस भारत को कहां ले जा रहे हैं, हम इस भारत का क्या करना चाहते हैं और 14 साल की, 18 साल की या 20 साल की युवा भारतीय लड़की या लड़का हमें कैसे देख रहा है, क्या वे हमें देख कर प्रेरित हो रहे हैं या वे हमसे नफरत करते हैं? यही सवाल हमारे सामने है।

09.08.2017

[हिन्दी]

*__कुँवर हरिवंश सिंह (प्रतापगढ़) :__ भारत छोड़ो आंदोलन के 75वें वर्ष की चर्चा में अपने विचार रख रहा हूं। मेरा यह मानना है कि मेरे देश के जो लोग शहीद हुए उनका अपना कोई स्वार्थ नहीं था। वे लोग चाहते थे कि हमारे देश के लोगों को समान आधिकार मिले, समान विकास के अवसर प्राप्त हों, गरीबी और भुखमरी से सबको मुक्ति मिले। स्वतंत्रता सेनानी खुद विधायक, सांसद, मंत्री, मुख्यमंत्री या प्रधान मंत्री बनने की इच्छा नहीं रखते थे। आज आपने संसद में चर्चा सत्र का आयोजन किया इसके लिए आपका हार्दिक आभार। इसी बहाने हम आजादी के शहीदों की याद में मैं एक शेर पेश कर रहा हूँ।

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरने वालों का यही अंतिम निशां होगा।

जय हिंद।

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

09.08.2017

[अनुवाद]

श्री एच.डी. देवगौड़ा (हसन): माननीय अध्यक्ष महोदया, मुझे बोलने की अनुमति देने के लिए मैं आपका दिल से धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। जब आप इस सदन के मंच पर प्रस्ताव की चर्चा को अनुमति दे रही थीं, मैं पीछे बैठकर आपके भाषण को सच्चे दिल से ध्यान से सुन रहा था। सदन के नेता, माननीय प्रधानमंत्री; कांग्रेस पार्टी के नेता, श्रीमती सोनिया गांधी जी; और कई अन्य नेताओं ने 9 अगस्त, 1942 को हुए भारत छोड़ो आन्दोलन की वर्षगांठ पर भाषण दिया। उस समय मैं छात्र था और मैं भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने में असमर्थ था।

माननीय प्रधानमंत्री ने अपने विचारों को अपने अखबारों में विज्ञापन के माध्यम से जाहिर किया था, जिसमें लिखा था: " *संकल्प से सिद्धि।* " चलिए, हम साथ मिलकर 2022 तक एक नए भारत के निर्माण के लिए संकल्प लें। हम सभी इसे पूर्ण समर्थन देंगे, चाहे हम 2022 में यहाँ हों या न हों। आज इस सभा के सदस्य के रूप में, मैं सच्चे दिल से एक स्वच्छ भारत, गरीबी-मुक्त भारत, भ्रष्टाचार-मुक्त भारत, आतंकवाद-मुक्त भारत, सांप्रदायिकता-मुक्त भारत और जातिवाद-मुक्त भारत के प्रति संकल्प लेना चाहता हूँ। इन सभी मुद्दों पर, मैं पूरी तरह से सहयोग देने के लिए तैयार हूँ। लेकिन मुझे कुछ शब्द कहने दीजिए।

मैंने 1962 में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। हम इस सदन के सदस्य के रूप में, राज्य विधानसभाओं के सदस्य के रूप में, मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री के रूप में संविधान की शपथ लेते हैं। चलिए हम खुद की जांच करें कि क्या हम उस शपथ के अनुरूप हैं जो हमने ली है, और क्या हम उस शपथ के अनुसार अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं या नहीं। मुझे नहीं पता। मुझे नहीं कहना कि हमने कहां गलती की है। इसी सभा में कई मुद्दों पर चर्चा हुई थी । मुझे इस मुद्दे पर विस्तार से बात नहीं करनी है। मुद्दा यह है कि आज यह सभा सभी भिन्नताओं को भूलकर इन समस्याओं को दूर करने के लिए एक संकल्प लेगी ।

हम भारत छोड़ो आन्दोलन में लड़े ताकि इस देश को औपनिवेशिक शासन या ब्रिटिश शासन से मुक्त कराया जा सके। अब हम अपना शासन स्वयं कर रहे हैं। जब हम अपना शासन स्वयं कर रहे हैं, तो चलो हम यह सोचें कि चीजें कैसे चल रही हैं। मेरे पास लिखित भाषण है लेकिन मैं इसे सभा पटल पर नहीं रखना चाहता।

माननीय प्रधानमंत्री आ गए हैं। आइए हम खुद के साथ स्पष्ट रहें और देखें कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। क्या हम भ्रष्टाचार-मुक्त भारत, जातिवाद-मुक्त भारत और सांप्रदायिकता-मुक्त भारत की दिशा में जा रहे हैं? "कौन सी बातें चल रही हैं?" हमें आत्म-निरीक्षण करें। महोदया, हम कई मुद्दों का वर्णन कर सकते हैं लेकिन आज के दिन, जब हम यहां एक संकल्प लेने जा रहे हैं, मैं ऐसा नहीं करना चाहता। हम सभी को याद रखना चाहिए कि कितनी घटनाएँ हुईं थीं, कितने लोग पीड़ा से गुज़रे, और ब्रिटिश शासन के दौरान कितने लोग फांसी पर लटकाए गए थे। आज लोग पीड़ित हैं और आत्महत्या कर रहे हैं। किसकी गलती के लिए? स्वतंत्रता के बाद पिछले सत्तर वर्षों में प्रशासन की विफलता के लिए? यह सब क्या हो रहा है? क्या महिलाओं के लिए कोई सुरक्षा है? महोदया, किसान किस प्रकार आत्महत्या कर रहे हैं उसके बारे में मैं एक शब्द से आगे कुछ नहीं कहना चाहता। उस दिन उन्हें फांसी दे दी गई थी।

पूरे देश में, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने केवल एक बार आह्वान करते हुए जब संकल्प का प्रस्ताव रखा और वल्लभभाई पटेल ने इसे समर्थन दिया। देश में बहुत से लोग और नेताओं का एक समुदाय स्वतंत्रता के लिए लड़ा। लेकिन एकमात्र बात है, माननीय प्रधानमंत्री, जब आप यह संदेश दे रहे हैं, तो अपनी अंतरात्मा को इन सभी चीजों को हटाने और अपने लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में चलने दें। हम सभी आपके द्वारा व्यक्त किये गये दृष्टिकोणों के समर्थन में खड़े रहेंगे, चाहे वो आपके विज्ञापन में हो या आपके भाषण में। हम आपके साथ खड़े रहेंगे। पूरा सदन उस प्रस्ताव को बनाने में आपके साथ खड़ा रहेगा जिसे आपने स्वयं पेश किया है। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

09.08.2017

[हिन्दी]

*__श्री जय प्रकाश नारायण यादव (बाँका):__ मैं महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, लोहिया, बाबा साहेब अंबेडकर, जय प्रकाश नारायण, सरदार वल्लभ भाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद, अरूणा आसफ अली, डा. राजेन्द्र प्रसाद, सिद्धू-कान्हू, तिलका मांझी, पेरियार, तिलक जी को सलाम करता हूँ।

आज से 75 वर्ष पहले 9 अगस्त, 1942 को देश की आजादी का दूसरा पड़ाव माना जाता है। प्रथम 1875 ईसवीं का स्वतंत्रता संग्राम और द्वितीय 1942 ईसवीं का भारत छोड़ो आंदोलन। लम्बी अंग्रेजी हुकूमत के विरूद्ध कई ऐतिहासिक आंदोलन हुए। हमारे पूर्वजों ने बहुत प्रताड़नायें, यातनायें और कष्ट सहे। हजारों लोगों की कुबारनियों के बाद ही हमें आज स्वतंत्र भारत में रहने का अवसर मिला। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भारत छोड़ो आंदोलन या अगस्त क्रांति, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की अंतिम लड़ाई थी। इस आंदोलन के द्वारा ब्रिटिश हुकूमत की नींव को हिलाकर रख दिया गया था। महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में यह आंदोलन आजादी की अंतिम लड़ाई थी, जिसे अच्यूत पटवर्धन जी, अरूणा आशफ अली जी, राम मनोहर लोहिया जी, सुचेता कृपलानी जी, छोटू भाई पुराणिक जी, जयप्रकाश नारायण जी जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों की बागडोर इस आंदोलन को एक ढाँचागत स्वरूप प्रदान कर लाखों युवाओं को ब्रिटिश हुकूमत के विरूद्ध खड़ा कर दिया। महात्मा गांधी जी की यह तीसरी लड़ाई थी, जो क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद उन्होंने अंग्रेजों भारत छोड़ो का नारा दिया और पूरे देश में एक साथ 9 अगस्त को आंदोलन छेड़ दिया। यह दिन इसलिए भी चुना गया था कि हर वर्ष काकोरी-काण्ड की याद ताजा रखने के लिए युवाओं द्वारा काकोरी-काण्ड स्मृति-दिवस मनाने की परम्परा भगत सिंह जी ने प्रारम्भ कर दी थी और उस दिन बहुत बड़ी संख्या में नौजवान एकत्र होते थे।

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

अतः गांधी जी की एक रणनीति के तहत यह दिन चुना गया था। ब्रिटिश सरकार को करीब 6 हफ्ते लगे इस आंदोलन को दबाने में, लेकिन वैसे ही द्वितीय विश्व युद्ध में परेशान ब्रिटिश हुकूमत ने इस आंदोलन के आगे घुटने टेक दिए और उत्तर व मध्य बिहार के 80 प्रतिशत स्थानों पर जनता का राज हो गया। छात्रों, मजदूरों एवं किसानों ने मिलकर वैकल्पिक सरकार बनाई। वैसे ही 1939 के दूसरे विश्व युद्ध के कारण वस्तुओं के दामों में बेहताशा वृद्धि हुई थी। जिसके कारण जनता में काफी रोष व्याप्त था और महात्मा गाँधी जी के "करो या मरो" के नारे ने लोगों को एक नई ऊर्जा के साथ आंदोलन में कूद पड़ने की प्रेरणा दी। लाल बहादुर शास्त्री जी के नारे "मरो नहीं- मारो" ने आग में घी का काम किया और आंदोलन सही मायने में एक जन-आंदोलन बन गया। अन्ततः 15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हुआ। हम सभी भारतवासी अपने पूर्वजों के ऋणी हैं।

इसी क्रम में मैं एक विषय रखना चाहता हूँ। इसमें कई मुद्दों पर चर्चा में उठाया भी है कि गांधी जी का एक सपना था कि देश शराब से मुक्ति पाए। हमारे नेता माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी का इस ओर एक सार्थक प्रयास रहा और उन्होंने बिहार जैसे आति पिछड़े और बड़ी आबादी वाले राज्य को नशा-मुक्त बिहार बनाने का कार्य किया है। माननीय प्रधानमंत्री जी का गृह राज्य गुजरात भी शराब-मुक्त प्रदेश है। अतः सरकार क्यों नहीं शराब-मुक्त देश की घोषणा करती है। इस तरह हम देश को क्राईम-मुक्त बनाने की दिशा में आगे बढ़ेंगे क्योंकि शराब के कारण क्राईम में दिनोंदिन इजाफा हो रहा है। शराब-मुक्त देश होने से गरीबी से छुटकारा मिलेगा। हमारी माताओं, बहनों पर अत्याचार और जुल्म नहीं होगा। हमारे पूर्वजों के सपनों का देश तरक्की के मार्ग पर प्रशस्त होगा। बहुत-बहुत धन्यवाद।

09.08.2017

[अनुवाद]

*__श्री प्रेम सिंह चन्दूमाजरा (आनंदपुर साहिब):__ मैं अपनी पार्टी एस.ए.डी. की ओर से उन सभी को श्रद्धांजलि देता हूं जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता में अपने प्राणों की आहुति दी। आज हमें इतिहास में जाना चाहिए कि कैसे हमारे नेताओं और लोगों ने भारत छोड़ो कहने का साहस किया: अंबाला छावनी में गदर 1857 से 3 महीने पहले एक विचित्र आंदोलन शुरू हुआ था जब सिख रेजिमेंट के, सोहन जी, मोहन जी आदि नाम के, तीन सैनिकों को दंडित किया गया था। राम जी नामधारी ने असहयोग-आंदोलन शुरू करने से पहले, शहीद भगत सिंह और करतार सिंह, शहीद उधम सिंह ने देशवासियों को बताया कि मौत कैसी होनी चाहिए। शहीद उधम सिंह की मूर्ति को अमृतसर के जलियांवाला बाग में स्थापित किया जाना चाहिए। अंडमान निकोबार की जेल में कैद रह चुके सभी स्वतंत्रता सेनानियों ने मांग की कि काला पानी को पुस्तकों और लाइट एंड साउंड प्रोग्राम में शामिल किया जाना चाहिए। हमें स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को पूरा करना चाहिए और चिंतित होना चाहिए कि क्यों किसान रोज आत्महत्या कर रहे हैं; क्यों 33% जनसंख्या के पास घर, कपड़े और भोजन नहीं है।

हमें यह पता लगाना चाहिए कि भारत सरकार ने 1984 के हमले में ब्रिटिश अधिकारियों से सलाह क्यों ली जैसा कि ब्रिटिश ब्रिटिश आर्कराइवल की रिपोर्ट में कहा गया था। क्या यह हमारे देश के मामलों में सीधा हस्तक्षेप नहीं है? महाराजा दलीप सिंह के हत्यारे को भारत लाया जाना चाहिए।

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

09.08.2017

[हिन्दी]

*__डॉ. अरुण कुमार (जहानाबाद) :__ आज 9 अगस्त, 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन पर अपने विचार रखता हूँ। मैं आशा करता हूं कि देश की नई पीढ़ी इस उत्सर्ग की गाथा को अपने दिल में संजोकर नए भारत के लिए निर्माण में संकल्प के साथ कर सके।

9 अगस्त, 1942 को करो या मरो की बुनियाद 1857 में ही पङ गई थी। जब हम 1942 के आंदोलनकारियों को याद करते हैं तो 1857 के स्वतंत्रता सेनानियों में वीर कुंअर, तात्या टोपे, लक्ष्मी बाई, मंगल पांडेय जैसे लोगों को भी याद करना हमारा धर्म बनता है।

बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेष यानि सम्पूर्ण देश इस धारा में शामिल हुआ था। गांधी जी के नेतृत्व में निश्चित तौर पर भारत छोड़ो का संकल्प लिया गया, लेकिन भगत सिंह, अशफाकउल्ला, खुदीराम बोस, वीर सावरकर, लाल-बाल और पाल, सुभाष चन्द्र बोस, स्वामी सहजानंद सरस्वती, कोरमा मुंडा, तिलक मांझी आदि ऐसे क्रांतिकारियों ने देश के लिए अंग्रेजों के खिलाफ जो मोर्चा बनाया, उसे शब्दों में व्याख्यापित नहीं किया जा सकता।

आज जरूरत है कि 75 साल पहले के इस भारत छोड़ो आंदोलन के इस संकल्प के साथ हम नए भारत के निर्माण करें। इसका आधार शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, गरीबी दूर करना और राष्ट्रवाद को बनाना चाहिए।

माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने 2017 से 2022 के इन पांच वर्षों को संकल्प से सिद्धि तक की यात्रा बनाया है। यह एक ऐतिहासिक कदम है। हमें शब्दों में ही नहीं, बल्कि सवा सौ करोड़ भारतीयों को इस

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

नए संकल्प को लेकर नए भारत का निर्माण करना है। भारत की आजादी को अक्षुण्ण रखने के लिए हमें सतत् जागरुक रहना पड़ेगा।

1974 आजाद हिन्दुस्तान में एक काल दिवस के रूप में चिन्हित हुआ है। लोक नायक जय प्रकाश जी के नेतृत्व में हजारों लोग इस आजादी की लड़ाई में कूदे थे। हजारों लोग शहीद हुए। हमें आजाद हिन्दुस्तान में लोकतंत्र एवं आजादी की मजबूती के लिए लड़ाई लड़नी पड़ी।

जार्ज फर्नांडिज जैसे मजदूर नेता कठिन कारावास में रखे गए। अटल बिहारी वाजपेयी जी से लेकर नरेन्द्र मोदी तक ने यातना का सामना किया। राजनारायण आदि नेता इस आंदोलन के जनक हुए। उन्होंने देश के कोने-कोने में आजादी की अलख जगाई और कोटे लेकर वोट तक में परास्त किया तथा लोगों के आधिकारों की रक्षा की।

इस महान गाथा की चर्चा जो आपने सदन में करवाई, विभिन्न पार्टियों के माननीय सदस्यों ने इतिहास के पन्नों में झांका और यह नई पीढ़ी के लिए इतिहास का हिस्सा बनेगी। इसके साथ ही मैं अपनी बात समाप्त करते हुए आपके प्रति पुनः आभार व्यक्त करता हूं। नए भारत के निर्माण के लिए माननीय प्रधान मंत्री जी के संकल्प के लिए उनका आभार व्यक्त करता हूं।

09.08.2017

[अनुवाद]

*__श्री पी.आर. सुन्दरम (नामाक्कल):__ 'भारत छोड़ो आंदोलन' को महात्मा गांधी जी ने 8 अगस्त 1942 को देश को ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्त कराने के लिए शुरू किया था। यह स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गाँधी के नेतृत्व में आंदोलनों की श्रृंखला में सबसे लोकप्रिय और शक्तिशाली जन आंदोलन था।

'भारत छोड़ो आंदोलन' के पूर्वार्ध में कई हड़तालें, प्रदर्शन, जुलूस आदि हुए थे। बाद में, आंदोलन के उत्तरार्ध में सरकारी इमारतों, नगर पालिका भवनों, डाकघरों, रेलवे स्टेशनों आदि पर छापेमारी हुई और उन्हें आग लगा दी गई।

आखिरी और अंतिम चरण सितंबर 1942 में शुरू हुआ जो बंबई, मध्य प्रदेश जैसे सरकारी स्थानों पर भीड़ द्वारा बमबारी के साथ शुरू हुआ। अंत में, आंदोलन ने शांतिपूर्ण साधनों के माध्यम से बहुत महत्व प्राप्त करना शुरू कर दिया और यह तब तक जारी रखा गया जब तक महात्मा गांधी को रिहा नहीं कर दिया गया।

गांधी जी ने निर्णय लिया था कि अगर अंग्रेजों ने उनकी मांगों को नहीं सुना, तो वे वृहत असहयोग आंदोलन शुरू करेंगे। ब्रिटेन युद्ध में शामिल था और ब्रिटेन में कई राजनीतिक परिवर्तन हो रहे थे, कांग्रेस की मांगों को पूरा नहीं किया गया। यह असंतोष भी आंदोलन के कारणों में से एक था।

आज 75 वर्षों के भारत छोड़ो आंदोलन के बाद, हम गौरवान्वित भारतीय के रूप में उस स्वतंत्रता की रक्षा करने की स्थिति में हैं जो हमें इस महान राष्ट्र के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले विभिन्न नेताओं द्वारा संघर्ष और रक्तपात के बाद मिली थी।

* भाषण सभा पटल पर रखा गया ।

*__श्री ई.टी. मोहम्मद बशीर (पोन्नानी):__ मैं भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में इस ऐतिहासिक विशेष चर्चा में अपने विचार व्यक्त करना चाहूंगा।

महात्मा जी द्वारा इस महान स्वतंत्रता आंदोलन और उनके "करो या मरो" के नारे ने ने करोड़ों-करोड़ भारतीयों को स्वतंत्रता संघर्ष में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस स्तर पर हमें "भारत छोड़ो आंदोलन" का विरोध करने वाले कुछ दलों के बारे में विवाद में पड़ने की आवश्यकता नहीं है।

साथ ही, हमें उन लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करनी चाहिए जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के लिए अपनी जान दी।

हम सभी जानते हैं कि अंग्रेजों ने निर्दयता से व्यवहार किया और स्वतंत्रता सेनानियों के खिलाफ क्रूर उत्पीड़न किया। कई स्वतंत्रता सेनानियों को जेल में डाल दिया गया, सामूहिक जुर्माना लगाया गया।

जब हम महान स्वतंत्रता आंदोलन की 75$^{वीं}$ वर्षगांठ मना रहे हैं, तो आइए हम दुनिया के सबसे बड़े धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक देश के रूप में भारत की अपनी गौरवशाली परंपरा को बनाए रखने के अपने संकल्प को दोहराएँ।

विविधता में एकता, धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र की रीढ़ की हड्डी की तरह है।

आइए, हम अपने राष्ट्र की महान परंपरा को बनाए रखने के लिए खुद को समर्पित करें। आइए हम महात्मा जी के शब्दों और कार्यों को याद करें और संयुक्त भारत के लिए समर्पण करें।

---

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

*__श्री बलभद्र माझी (नबरंगपुर):__ मैं भारत छोड़ो आंदोलन, 1942 के दौरान स्वतंत्रता संग्राम और बलिदान के दौरान अपने निर्वाचन क्षेत्र के पूर्वजों के योगदान पर अपने विचार व्यक्त करना चाहूंगा।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आह्वान पर, नबरंगपुर क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों ने 24 अगस्त, 1942 को भारत छोड़ने वाले अंग्रेजों के लिए अपना ज्ञापन देने के लिए बासुगांव पुलिस स्टेशन की ओर कूच किया।

हालाँकि, रास्ते में, पापडाहांडी के पास, तुरा नदी के पास पहुँचने पर, प्रदर्शनकारियों को पुलिस का सामना करना पड़ा और 19 लोगों को गोली मार दी गई, 24 लोग 24 अगस्त, 1942 को पूरे उफान पर बहती हुई नदी में कूद गए। इस प्रकार, 33 निर्दोष जनजातीय लोगों की जानें गईं। इस गोलीबारी के लिए जिम्मेदार पुलिस निरीक्षक जेपोर के राम कृष्ण नायडू (कलंगा) थे।

इसी तरह, 21 अगस्त, 1942 को, जब लोग मालकांगिरी उप-विभाग (अब पूर्ण जिला) के कोरापुट जिले के माथेली पुलिस स्टेशन के सामने शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे थे, तब पुलिस ने लगभग पांच लोगों को गोली मार दी थी। मारे गए व्यक्तियों में से एक व्यक्ति वन रक्षक था।

चूंकि वन रक्षक एक सरकारी कर्मचारी था, इसलिए पुलिस ने टेंटुलिगोमा के श्री लक्ष्मण नाइक को जिम्मेदार ठहराया, जो प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे थे। नाइक को झूठा फंसाया गया, जेल में डाल दिया गया और 29 मार्च, 1943 को बिना किसी गलती के फांसी दे दी गई।

विडंबना यह है कि अधिवक्ता श्री जगन्नाथ राव अपनी जान की गुहार लगाते हुए बाद में बेरहामपुर से सांसद (एल. एस.) बने। एक आदिवासी श्री नाइक को मौत की सजा सुनाने वाले न्यायाधीश बाद में स्वतंत्र ओडिशा राज्य के मुख्य सचिव बने।

---

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

ओडिशा के तब कोरापुट जिले के आदिवासियों के द्वारा स्वतंत्रता संघर्ष में और भी अनेक योगदान और बलिदान हुए हैं। लेकिन ये दो उदाहरण उल्लेखनीय हैं।

एक बात जो घटनाओं का सबसे दुखद हिस्सा है, वह यह है कि शासक, उत्पीड़क भी सभी भारतीय थे जो केवल ब्रिटिश राज के नाम पर काम कर रहे थे।

* **श्री मेकापति राजमोहन रेड्डी (नेल्लोर):** ठीक 75 साल पहले, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने औपनिवेशिक अंग्रेजों को भारत छोड़ने और साथी भारतीयों को भारत की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए करो या मरो का आह्वान करने का आह्वान किया था। ठीक पाँच वर्षों के बाद, भारत को 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्रता मिली।

अब, यह प्रत्येक सरकार का कर्तव्य है कि देश के प्रत्येक नागरिक को बिना डर के स्वतंत्र रूप से सोचने, व्यवहार करने और अपना आचरण करने के लिए प्रेरित करे।

वास्तव में, कोई भी राष्ट्र, बिना वित्तीय स्वतंत्रता के, राजनीतिक रूप से स्वतंत्र नहीं हो सकता। जैसे माननीय प्रधानमंत्री ने सही रूप से कहा:-

"सबका साथ, सबका विकास"

देश में सभी को राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए वित्तीय स्वतंत्रता होनी चाहिए।

आइए, हम अपने लोकतंत्र में सभी खामियों को सुधारकर अपने लोकतंत्र को और अधिक मजबूत और दुनिया के अन्य देशों के लिए एक आदर्श बनाने का संकल्प लें।

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

09.08.2017

[*]**डॉ. ममताज संघमिता (बर्धमान दुर्गापुर):** आज भारत छोड़ो आंदोलन की 75[वीं] वर्षगांठ पर, महात्मा गांधी द्वारा 8 अगस्त 1942 को किये गये आह्वान का अवलोकन किया जा रहा है। यह आह्वान स्वतंत्रता संघर्ष और स्वतंत्रता की दिशा में एक कदम था। कई संदर्भों में यह अंग्रेजों द्वारा आर्थिक और सामाजिक शोषण के खिलाफ घृणा थी। विभिन्न राजनीतिक पार्टियों और संगठनों के अपने-अपने तरीके होते हैं, लेकिन गांधीजी की भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इस आंदोलन के माध्यम से पूरे भारत को एकजुट करने का प्रयास किया। उन्होंने अहिंसा और सत्याग्रह से आरंभ किया था, लेकिन अधिकांश नेताओं को गिरफ्तार किया और पीड़ित किया गया। सही मार्गदर्शन की कमी के कारण, कुछ जगहों पर कानूनों का उल्लंघन हुआ, सरकारी कामों में अनुपस्थिति, स्कूल और कॉलेजों में बहिष्कार और हड़ताल, और फैक्टरीज़ में हड़तालें हुईं। हालाँकि यह पूरी तरह से सफल नहीं हुआ था, लेकिन इसने ब्रिटिश राज पर भारत छोड़ने का दबाव बनाया। इसलिए एकता के संकल्प "करेंगे या मरेंगे" ने सभी भारतीयों को एकजुट किया। हमने अंततः स्वतंत्रता प्राप्त कर ली। लेकिन विभाजन की कीमत पर, जो अभी भी हमारे जीवन और सुरक्षा में विभिन्न समस्याएं पैदा कर रहा है। स्वतंत्रता के 70 वर्षों बाद भी हम आर्थिक रूप से मजबूत नहीं हैं। किसान और खेतीकर्मी कुछ समस्याओं का सामना कर रहे हैं। हमारे बीच अभी भी जाति और धर्म के मुद्दों पर मतभेद हैं। हम कई तरीकों से संविधान को नजरअंदाज कर रहे हैं। यदि हम एकजुट नहीं होते हैं, तो बाहरी ताकतें भारत में प्रवेश करके हमारी स्वतंत्रता में बाधा डाल सकती हैं।

एकजुटता की पूरी भावना और बहुसांस्कृतिक, बहुधार्मिक छवि खराब हो जाएगी।

[*] भाषण सभा पटल पर रखा गया।

09.08.2017

[हिन्दी]

*__श्री मल्लिकार्जुन खड़गे (गुलबर्गा):__ सबसे पहले मैं कांग्रेस पार्टी की ओर से भारत छोडो आंदोलन के जन्मदाता, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल आदि जैसे महान नेताओं के साथ साथ उन सभी शहीदों को श्रद्धांजलि आर्पित करता हूँ जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अपने जीवन की आहुति दी। दूसरा महत्वपूर्ण चरण था 1942 का 'भारत छोड़ो आंदोलन' जो आखिरी और सबसे बड़ा जन आंदोलन था जिसने ब्रिटिश हुकुमत की जड़ें हिला दीं। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में शुरू हुआ यह आन्दोलन एक सोची समझी रणनीति का हिस्सा था, इसमें पूरा देश शामिल हुआ। कश्मीर से केरल और गुजरात से असम तक यह ऐसा आन्दोलन था जिसने अंग्रेजो को देश छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया।

गाँधी जी ने अंग्रेजों के खिलाफ देश में 5 बड़े आखिल भारतीय आंदोलन चलाए। 1919 और 1921 में असहयोग आंदोलन, 1930 और 1932 में सविनय अवज्ञा आंदोलन और 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन। इन 5 में से, दो चरण बहुत महत्वपूर्ण थे। पहला था जब कांग्रेस कार्य समिति ने 1930 में लाहौर में 26 जनवरी को हर साल "पूर्ण स्वराज" दिवस के रूप में मनाने का ऐलान किया। आप सब को पता होगा कि इसी कारण हमारा संविधान भी 26 जनवरी 1950 को प्रभाव में आया। जबकि संविधान सभा ने हमारे संविधान को 26 नवंबर 1949 को पारित कर दिया था।

साल 1939 में पूरा विश्व दूसरे विश्व युद्ध की चपेट में था। अंग्रेजों ने भारत के प्रतिनिधियों से विचार विमर्श किये बिना भारत को इस विश्व युद्ध का हिस्सा बना दिया था। युद्ध के कारण तमाम चीज़ों के दाम बेहिसाब बढ़ गए थे और अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ भारतीय जनता का गुस्सा बढ़ने लगा था।

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

मार्च 1942 में क्रिप्स मिशन भारत आया, जिसमें युद्ध की समाप्ति के बाद भारत को डोमिनियन स्टेटस देने की बात थी। प्रस्ताव में दिए गए आश्वासन देश के लिये ठीक नहीं थे। हमारे नेताओं को क्रिप्स मिशन के प्रस्तावों से धोखे का अहसास हो गया था। इन बातों से एक बड़े आंदोलन की जमीन तैयार होने लगी, और 8 अगस्त 1942 को बंबई के गोवालिया टैंक मैदान में आखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति ने एक प्रस्ताव पास किया जिसमें कहा गया किः

"देश ने साम्राज्यवादी सरकार के विरूद्ध अपनी इच्छा जाहिर कर दी हैं। अब उसे उस बिंदु से लौटने का बिल्कुल औचित्य नहीं है। अतः समिति अहिंसक ढंग से, व्यापक धरातल पर गाँधी जी के नेतृत्व में जनसंघर्ष शुरू करने का प्रस्ताव स्वीकार करती है।"

कांग्रेस के इस ऐतिहासिक सम्मेलन में महात्मा गाँधी जी ने लगभग 70 मिनट तक भाषण दिया और कहा कि

"मैं आपको एक मंत्र देता हूँ, करो या मरो"

गाँधी जी के भाषण के बारे में श्री बी. पट्टाभि सीतारमैया ने लिखा कि

"वास्तव में गाँधी जी उस दिन अवतार और पैगम्बर की प्रेरक शक्ति से प्रेरित होकर भाषण दे रहे थे।"

गाँधी जी ने कहा जो लोग कुर्बानी देना नहीं चाहते, वे आज़ादी प्राप्त नहीं कर सकते। भारत छोड़ो आंदोलन का मूल भी इसी भावना से प्रेरित था-

"कोई भी देश तब तक आज़ाद नहीं हो सकता, जब तक कि उसमें रहने वाले लोग एक-दूसरे पर भरोसा नहीं करते।"

9 अगस्त को पूरे देश में सुबह होने से पहले तक कांग्रेस कार्यसमिति के सभी सदस्य गिरफ्तार किये जा चुके थे। 9 अगस्त 1942 के दिन इस आंदोलन को लालबहादुर शास्त्री ने प्रचण्ड रूप दे दिया। 19 अगस्त, 1942 को शास्त्री जी भी गिरफ्तार हो गये।

महात्मा गाँधी की सबसे बड़ी सफलता यही थी कि उन्होंने आज़ादी की लड़ाई को पूरे भारतवर्ष में फैला दिया। गाँव के एक आम किसान पर भी उतना ही असर किया जितना दूसरे लोगों पर। इसका सबूत था कि इस आन्दोलन में ग्रामीण इलाकों की भागीदारी साठ प्रतिशत से ज्यादा थी। इस आंदोलन में बड़ी संख्या में युवाओं ने भाग लिया। सभी अपना काम छोड़ कर जेल जाने से लेकर जान देने को तैयार थे।

इसी वजह से इस आंदोलन ने अंग्रेजी हुकूमत की जड़े हिला कर रख दीं। सन् 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन अंग्रेजी राज के विरूद्ध भारतीयों का निर्णायक संग्राम साबित हुआ। इस आंदोलन के पाँच वर्ष के अन्दर ही हमें आज़ादी मिल गयी। यह आंदोलन भारत की आजादी की लड़ाई में सबसे गौरवपूर्ण स्थान रखता है। सरकारी आंकड़ों की माने तो इस आंदोलन में 942 लोग मारे गए, 1630 घायल हुए, 18000 लोग नजरबंद किये गए और 60229 लोगों ने गिरफ्तारियाँ दी थीं।

भारत की आज़ादी की लड़ाई को आज के माहौल में देखना बहुत ज़रूरी है क्योंकि देश में जो हो रहा है वह शायद आज़ादी के लिये कुर्बानी देने वालों ने कभी नहीं सोचा होगा। आज देश में अराजकता, हिंसा का माहौल है, अल्पसंख्यकों, दलितों और महिलाओं के ऊपर हमले हो रहे हैं, उनको मारा जा रहा है। अगर आज गाँधी जी होते तो सोचते कि मैंने ऐसे भारत का स्वप्न नहीं देखा था।

गाँधी जी ने अपने 70 मिनट के भाषण मे लोकतंत्र और अहिंसा के लिये कहा था कि

"जिस लोकतंत्र का मैंने विचार कर रखा है उस लोकतंत्र का निर्माण अहिंसा से होगा, जहाँ हर किसी के पास समान आज़ादी और अधिकार होंगे। जहाँ हर कोई खुद का शिक्षक होगा। और इसी

लोकतंत्र के निर्माण के लिये आज मैं आपको आमंत्रित करने आया हूँ। एक बार यदि आपने इस बात को समझ लिया तब आप हिन्दू और मुसलमान के भेदभाव को भूल जाओगे। तब आप एक भारतीय बनकर खुद का विचार करोगे और आज़ादी के संघर्ष में साथ दोगे।"

डॉक्टर अंबेडकर ने 25 नवंबर, 1949 को संविधान सभा में दिए अपने भाषण में इसकी आशंका जता दी थी इसीलिये उन्होंने कहा था संविधान के रहते हुए जो काम अराजकता की श्रेणी में आते हैं और इन्हें हम जितनी जल्दी छोड़ दें, हमारे लिए बेहतर होगा।

भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ को याद करते हुए अभी हाल ही में प्रधानमंत्री जी ने अपनी मन की बात में कहा कि

[अनुवाद] " हमें एक साथ आना होगा और संकल्प लेना होगा कि गंदगी भारत छोड़ो, गरीबी भारत छोड़ो, भ्रष्टाचार भारत छोड़ो, आतंकवाद भारत छोड़ो, जातिवाद भारत छोड़ो और सांप्रदायिकता भारत छोड़ो। "

[हिन्दी] लेकिन आज देश में उल्टा हो रहा है मोदी जी उस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। लेकिन हम यह कह सकते हैं कि आज देश के हाल हैं उससे तो यही लगता है कि मोदी जी चाहते हैं कि

[अनुवाद] " संविधान भारत छोड़ो, सामाजिक न्याय भारत छोड़ो, समानता भारत छोड़ो, स्वतंत्रता भारत छोड़ो और बंधुत्व भारत छोड़ो।"

[हिन्दी] शहीद की कुर्बानी बेकार ना जाये इसके लिये एक कवि ने कहा है कि-

हम लाये हैं तूफ़ान से कश्ती निकाल के
इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के

अंत में, इसी कवि ने गाँधी जी के लिये जो कहा, वह भी मैं सुनाकर अपनी बात ख़त्म करूंगाः

09.08.2017

दे दी हमें आज़ादी बिना खड़ग बिना ढाल

साबरमती के संत तू ने कर दिया कमाल

*__श्री कपिल मोरेश्वर पाटील (भिवंडी):__ आज 09 अगस्त 2017 को उस ऐतिहासिक दिवस की 75वीं वर्षगांठ है जब राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने वर्ष 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया था, महात्मा गाँधी के 'करो या मरो' के आह्वान ने राष्ट्रवादी भावनाओं की लहर और स्वतंत्रता हासिल करने की घोषणा के लिए प्रेरित किया। इस पवित्र अवसर पर हम उन सभी शहीदों को अपनी विनम्र और सादर श्रद्धाजंलि आर्पित करत हैं, जिन्होंने हमारी स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी और अनगिनत कष्ट सहे, यह दिवस उन साहसी महिलाओं और पुरूषों द्वारा हमें दिए गए स्वतंत्रता के उपहार को संजो कर रखने और अपने देश की संप्रभुत्ता, अखंडता, एकता और विविधता को संभालकर रखने की हमारी प्रतिबद्धता को दोहराने को भी हमें स्मरण कराता है, यह हमें स्वतंत्रता सेनानियों के उद्गारों और कृत्यों के जरिये बदलते समय की चुनौतियों का एक होकर मुकाबला करने तथा समाज के सभी वर्गों के समावेशी आर्थिक विकास और वृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए कार्य करने तथा एक पूर्ण विकसित भारत के चिर सिंचित सपने को पूरा करने की प्रेरणा भी देता है।

हमें याद रखना होगा कि स्वतंत्रता के लिए भारतवासियों ने बलिदान तो बहुत दिए, पर जिस प्रकार का राष्ट्रव्यापी आंदोलन अगस्त क्रांति नाम से सन् 1942 में हुआ। उसका उदाहरण विश्व में अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। गाँधी जी ने भारत छोड़ो आंदोलन प्रारंभ किया। पर 8,9, अगस्त की मध्यरात्रि में ही गाँधी जी सहित देश के बहुत से नेता आंदोलन की दिशा देने वाले प्रमुख लोग अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। उसके बाद जनता चल पड़ी कफन सिर पर बांध लिए, सिर हथेली पर रख लिए। डर-भय

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

नाम की वस्तु ही भूल गए। पर यह नहीं जानते थे कि लक्ष्य कहाँ है, जाना कहाँ है बस एक ही स्वर था, अंग्रेजों भारत छोड़ो।

भारत छोड़ो आन्दोलन का स्मरण करने और करवाने का सीधा अर्थ यह है कि हमने असंख्य बलिदान देकर अंग्रेजों को तो भारत से भगाया। पर यह भूल गए कि हमारा आंदोलन हमारा लक्ष्य, विदेशी आक्रांताओं से भारत को मुक्त करके भारत और भारतीयता का गौरव बढ़ाना है।

अपनी भाषा है भली,
भलो अपना देश
जे कुल है अपना भलो,
यही राष्ट्र संदेश....

आज हमारी वर्तमान सरकार शुद्ध भारतीयता, संस्कृति को बढ़ावा देने में अग्रसर है, हमारे प्रधानमंत्री जी ने विदेश में अपने भाषण हिन्दी में बोलकर हिन्दुस्तान का मान बढ़ाया है, इसके लिए मैं सरकार को धन्यवाद देता हूँ, जो अंग्रेजियत भारत छोड़ो आंदोलन के बाद चल रही थी, विश्वविद्यालयों में चल रही थी। विश्वविद्यालयों में लॉ, डॉक्टरेट की डिग्री जो दीक्षांत समारोहों में काले गाउन पहन कर दी जाती थी। वह डिग्री अब शुद्ध भारतीय परिधानों में छात्र ले रहे हैं और इसमें वह अपने आप को **गौरवान्वित** महसूस करते हैं इससे भारत की पहचान बनती है।

भरा नहीं जो भावों से,
बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं....
धन्यवाद। जय हिन्द.... जय भारत....

*__श्री अश्विनी कुमार चौबे (बक्सर):__ भारत छोड़ो आंदोलन, द्वितीय विश्वयुद्ध के समय 8 अगस्त 1942 को आरम्भ किया गया था। यह एक आंदोलन था जिसका लक्ष्य भारत से ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करना था। भारत की आज़ादी से संबंधित इतिहास में दो पड़ाव सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण नज़र आते हैं- प्रथम '1857 ईसवी का स्वतंत्रता संग्राम' और द्वितीय '1942 ईसवी का भारत छोड़ो आंदोलन'। यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (1857) के दौरान विश्वविख्यात काकोरी काण्ड के ठीक सत्रह साल 9 अगस्त सन् 1942 को गाँधी जी के आह्वान पर समूचे देश में एक साथ आरम्भ हुआ। यह भारत को तुरन्त आज़ाद करने के लिए अंग्रेजी शासन के विरूद्ध एक सविनय अवज्ञा आंदोलन था।

'क्रिप्स मिशन' की असफलता के बाद महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपना तीसरा बड़ा आंदोलन छेड़ने का फैसला लिया। 8 अगस्त 1942 की शाम को बम्बई में गाँधी जी द्वारा **'अंग्रेजों भारत छोड़ो'** आंदोलन का नाम दिया गया था। हालांकि गाँधी जी को फ़ौरन गिरफ्तार कर लिया गया था लेकिन देश भर के युवा कार्यकर्ता हड़तालों और तोड़फोड़ की कार्रवाइयों के जरिए आंदोलन चलाते रहे। कांग्रेस में जयप्रकाश नारायण जैसे समाजवादी सदस्य भूमिगत प्रतिरोधी गतिविधियों में सबसे ज्यादा सक्रिय थे। गाँधी जी के साथ भारत कोकिला सरोजनी नायडू को यरवदा पुणे के आगा खान पैलेस में, डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद को पटना जेल व अन्य सभी सदस्यों को अहमदनगर के किले में नजरबंद किया गया था। सरकारी आँकड़ों के अनुसार इस जनान्दोलन में 940 लोग मारे गये, 1630 घायल हुए, 18000 डी.आई. आर. में नजरबंद हुए तथा 60229 गिरफ्तार हुए। आंदोलन को कुचलने के ये आँकड़े दिल्ली की सेंट्रल असेम्बली में ऑनरेबुल होम मेंबर ने पेश किये थे। पश्चिम मे सतारा और पूर्व में मेदिनीपुर जैसे

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

कई जिलों में स्वतंत्र सरकार, प्रतिसरकार की स्थापना कर दी गई थी। अंग्रेजों ने आंदोलन के प्रति काफी सख्त रवैया अपनाया फिर भी इस विद्रोह को दबाने में सरकार को साल भर से ज्यादा समय लग गया।

दूसरे विश्व युद्ध में इंग्लैंड को बुरी तरह उलझता देख जैसे ही नेताजी ने आजाद हिन्द फौज को "दिल्ली चलो" का नारा दिया, गाँधी जी ने मौके की नजाकत को भाँपते हुए 8 अगस्त 1942 की रात में ही बम्बई से अंग्रेजों को "भारत छोड़ो" व भारतीयों को "करो या मरो" का आदेश जारी किया और सरकारी सुरक्षा में यरवदा पुणे स्थित आगा खान पैलेस में चले गये। "मरो नहीं, मारो" का नारा 9 अगस्त 1942 को लालबहादुर शास्त्री ने दिया जिसमें एक छोटे से व्यक्ति ने क्रान्ति के दावानल को पूरे देश में प्रचण्ड रूप दे दिया। 19 अगस्त, 1942 को शास्त्री जी गिरफ्तार हो गये।

भारत छोड़ो आंदोलन सही मायने में एक जनांदोलन था जिसमें लाखों आम हिंदुस्तानी शामिल थे। इस आंदोलन ने युवाओं को बड़ी संख्या में अपनी ओर आकर्षित किया। उन्होंने अपने कॉलेज छोड़कर जेल का रास्ता अपनाया।

अगर सच कहा जाए तो 1757 से अंग्रेजों के गुलाम बने भारत में सौ वर्षों बाद इस दास्ताँ से मुक्ति के लिए 1857 का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम ही सही मायनों में भारत की आजादी के इतिहास में नींव का पत्थर सिद्ध हुआ, जो 1857 के पुलिस विद्रोह के रूप में भी जाना जाता है। इसी पंक्ति में बलिया के मंगल पाण्डेय 1857 की क्रांति के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम बलिदानी तो हैं ही एवं इस प्रथम समबेद मुक्ति संग्राम के अग्रदूत भी हैं। वह पहले सिपाही थे जिन्होंने ब्रिटिश सेवा में होने के बावजूद किसी अंग्रेज आधिकारी पर गोली चलाने का साहस किया और मौत के घाट उतार दिया।

उसी काल खंड में भोजपुर के वीर कुंवर सिंह प्रथम सिपाही और महानायक थे, जिनके बारे में ब्रिटिश साहित्यकार होल्म्स ने लिखा है- "उस बूढ़े राजपूत ने ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध अद्भुत वीरता और आन बान के साथ लड़ाई लड़ी उस समय उनकी उम्र 80 थी। अगर वो जवान होते तो शायद अंग्रेजों को

1857 में ही भारत छोड़ना पड़ता।" इसी पंक्ति में झाँसी की रानी, तात्याँ टोपे आदि ने 'मर्दानगी' और बहादुरी के साथ अंग्रेजों से लड़ते हुए अपने प्राणों को न्योछावर किया।

गाँधी जी अपने आदर्श के रूप में बाल गंगाधर तिलक को मानते थे। तिलक ने सन् 1917 में कहा था कि "स्वराज हमारा जन्म सिद्ध आधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे"। तिलक का विश्वास था कि पुराने देवी-देवताओं और राष्ट्रीय नेताओं की वंदना से लोगों में सच्ची राष्ट्रीयता और देश प्रेम की भावना विकसित होगी।

जिस दौरान कांग्रेस के नेता जेल में थे उसी समय जिन्ना तथा मुस्लिम लीग के उनके साथी अपना प्रभाव क्षेत्र फैलाने में लगे थे। इन्हीं सालों में लीग को पंजाब और सिंध में अपनी पहचान बनाने का मौका मिला जहाँ अभी तक उसका कोई खास वजूद नहीं था।

जून 1944 में जब विश्व युद्ध समाप्ति की ओर था, तो गाँधी जी को रिहा कर दिया गया। जेल से निकलने के बाद उन्होंने कांग्रेस और लीग के बीच फासले को पाटने के लिए जिन्ना के साथ कई बार बात की। 1945 में ब्रिटेन में लेबर पार्टी की सरकार बनी। यह सरकार भारतीय स्वतंत्रता के पक्ष में थी। उसी समय वायसराय लॉर्ड वावेल ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग के प्रतिनिधियों के बीच कई बैठकों का आयोजन किया। फरवरी 1947 में वावेल की जगह लॉर्ड माउंटबेटन को वायसराय नियुक्त किया गया। उन्होंने वार्ताओं के एक अंतिम दौर का आह्वान किया। जब सुलह के लिए उनका यह प्रयास भी विफल हो गया तो उन्होंने ऐलान कर दिया कि ब्रिटिश भारत को स्वतंत्रता दे दी जाएगी लेकिन उसका विभाजन भी होगा। औपचारिक सत्ता हस्तांतरण के लिए 15 अगस्त का दिन नियत किया गया। उस दिन भारत के विभिन्न भागों में लोगों ने जमकर खुशियाँ मनायीं। दिल्ली में जब संविधान सभा के अध्यक्ष ने मोहनदास करमचंद गाँधी को राष्ट्रपिता की उपाधि देते हुए संविधान सभा की बैठक शुरू की तो बहुत देर तक करतल ध्वनि होती रही। असेम्बली के बाहर भीड़ महात्मा गाँधी की जय के नारे लगा रही थी।

09.08.2017

15 अगस्त 1947 को राजधानी में हो रहे उत्सवों में महात्मा गाँधी नहीं थे। उस समय वे कलकत्ता में थे लेकिन उन्होंने वहाँ भी न तो किसी कार्यक्रम मे हिस्सा लिया, न ही कहीं झंडा फहराया। गाँधी जी उस दिन 24 घंटे के उपवास पर थे। उन्होंने इतने दिन तक जिस स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया था वह एक अकल्पनीय कीमत पर उन्हें मिली थी। उनका राष्ट्र विभाजित था हिंदू-मुसलमान एक-दूसरे की गर्दन पर सवार थे। उनके जीवनी लेखक डी.जी. तेंदुलकर ने लिखा है कि सितंबर और अक्तूबर के दौरान गाँधी जी पीड़ितों को सांत्वना देते हुए अस्पतालों और शरणार्थी शिविरों के चक्कर लगा रहे थे। उन्होंने सिखों, हिन्दुओं और मुसलमानों से आह्वान किया कि वे अतीत को भुला कर अपनी पीड़ा पर ध्यान देने की बजाय एक-दूसरे के प्रति भाईचारे का हाथ बढ़ाने तथा शांति से रहने का संकल्प लें।

गाँधी जी और नेहरू के आग्रह पर कांग्रेस ने अल्पसंख्यकों के अधिकारों पर एक प्रस्ताव पारित कर दिया। कांग्रेस ने दो राष्ट्र सिद्धांत को कभी स्वीकार नहीं किया था। जब उसे अपनी इच्छा के विरूद्ध बँटवारे पर मंजूरी देनी पड़ी तो भी उसका दृढ़ विश्वास था कि भारत बहुत सारे धर्मों और बहुत सारी नस्लों का देश है और उसे ऐसे ही बनाए रखा जाना चाहिए। पाकिस्तान में हालात जो रहें, भारत एक लोकतांत्रिक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र होगा जहाँ सभी नागरिकों को पूर्ण अधिकार प्राप्त होंगे तथा धर्म के आधार पर भेदभाव के बिना सभी को राज्य की ओर से संरक्षण का अधिकार होगा।

09.08.2017

[अनुवाद]

*__श्री भर्तृहरि महताब (कटक):__आज एक शुभ दिन है। आज ही के दिन, 75 साल पहले, भारत ने गुलामी की जंजीरों को तोड़कर ब्रिटिश सत्ता से अलविदा कहने का अंतिम निवेदन दिया। यह भारत के लोगों के लिए स्वतंत्रता के एक लंबे संघर्ष की पराकाष्ठा थी, जिन्होंने पिछले 200 वर्षों की अधीनता के दौरान ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटिश शासन के उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। यह विशुद्ध रूप से अहिंसक तरीकों से नैतिक आधार पर राष्ट्रपिता के नेतृत्व में एक लड़ाई थी। 8 अगस्त, 1942 की शाम को मुंबई के गोवालिया टैंक मैदान में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक हुई जिसमें भारत में ब्रिटिश शासन को तुरंत समाप्त करने का अंतिम आह्वान किया गया। प्रस्ताव में कहा गया, "उस नियम की निरंतरता भारत को अपमानित और कमजोर कर रही है और उसे अपनी रक्षा करने और विश्व स्वतंत्रता के लिए योगदान करने में उत्तरोत्तर कम सक्षम बना रही है।"

75 वर्षों के बाद जब कोई 8 अगस्त की घटनापूर्ण शाम और 9 अगस्त की सुबह और बाद के दिनों में लोगों की उथल-पुथल को देखता है, तो उस दिन के उन महान स्वतंत्रता सेनानियों के वंशज होने पर गर्व महसूस होता है जिन्होंने हमारे भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए अपना वर्तमान दिया। हम यह न भूलें कि जब भी वर्तमान का उपयोग वैचारिक प्रवृत्ति द्वारा निर्देशित अतीत को प्रासंगिक बनाने के लिए किया जाता है तो इतिहास विकृत हो जाता है। राष्ट्र के इतिहास को अब वैचारिक हठधर्मिताओं द्वारा सीमित नहीं होने देना हमारा कर्तव्य है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आज के कार्यक्रम के प्रवर्तक हैं। अगस्त क्रांति दिवस की 75वीं वर्षगांठ मनाने के लिए एक दिन समर्पित करना उनका विचार था। सभी संबंधित राजनीतिक दल, नेता भी इस दिन को मनाने के लिए सहमत हुए और अध्यक्ष महोदया ने इस उद्देश्य के लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग, तपस्या को याद करने के लिए एक

* भाषण सभा पटल पर रखा गया।

पूरा दिन समर्पित करने की अनुमति दी है, जिसके कारण देश ने 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त की थी। 1942 से 1947 तक के वे 5 साल थे जिन्होंने हमारे भाग्य को आकार दिया।

कम्युनिस्ट शुरू में भारत छोड़ो आंदोलन के समर्थन में थे, लेकिन तत्कालीन सोवियत संघ के मित्र देशों की सेनाओं में शामिल होने और जर्मनी के खिलाफ विद्रोह करने के बाद वे ब्रिटिश शासन के समर्थक बन गए। निष्ठा का यह मोड़ भारत में यूरोप की घटनाओं के कारण हुआ जब हिटलर ने रूस पर हमला किया। कम्युनिस्टों के लिए, भारत की स्वतंत्रता महत्वपूर्ण नहीं थी। हिटलर की फासीवादी ताकतों के खिलाफ लड़ने के लिए दमनकारी औपनिवेशिक ब्रिटिश साम्राज्य के साथ गठबंधन करना महत्वपूर्ण था।

मैं यहां एक बहुत ही दिलचस्प पहलू का उल्लेख करना चाहूंगा, जिसकी राष्ट्रीय स्तर पर शायद ही कभी चर्चा की जाती है। जुलाई, 1942 के महीने में वर्धा में कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने का अंतिम आह्वान करने के दृष्टिकोण का समर्थन नहीं किया था। हालांकि 1939 में जब ब्रिटिश साम्राज्य ने विश्व युद्ध में भारत को शामिल किया था, तब विभिन्न प्रांतों में तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने ब्रिटिश साम्राज्य की तुलना में वायसराय के निर्णय के खिलाफ अपने मतभेद व्यक्त करते हुए इस्तीफा दे दिया था। विश्व युद्ध भारत पर अंग्रेजों द्वारा थोपा गया था। देश में कांग्रेस के नेतृत्व वाली प्रांतीय सरकारों ने विरोध में इस्तीफा दे दिया था।,1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह किया गया जिसमें बड़ी संख्या में नेताओं को सलाखों के पीछे डाल दिया गया। 1942 में जुलाई में वर्धा में कार्य समिति ने अपनी बैठक की और कार्रवाई की प्रक्रिया तय करने के लिए विचार-विमर्श किया। नेहरू और मौलाना देशव्यापी आंदोलन शुरू करने के पक्ष में नहीं थे। उनके पास वैध कारण था। जापान भारत-चीन क्षेत्र के पास आता जा रहा था और दक्षिण पूर्व एशिया का भाग उसके कब्जे में था।

उन लोगों के बीच जबरदस्त डर था था जो ब्रिटिश शासन द्वारा पैदा गया था। उस अवधि के दौरान गांधी जी ने मीरा बेन को ओडिशा का दौरा करने के लिए भेजा था ताकि उन लोगों में विश्वास की

भावना पैदा की जा सके। इस अवधि के दौरान, ब्रिटिश वायसराय चाहते थे कि कांग्रेस साम्राज्य को पूरा सहयोग दे ताकि यदि अंतत: जापान की सेनाओं का हमला होता है तो उसका सामना किया जा सके, लेकिन गांधी जी अंग्रेजों के विश्वासघात को देखकर हैरान रह गये, जब उन्होंने एक शीर्ष गुप्त सरकारी नोट को देखा जो सैन्य खुफिया द्वारा प्रांतीय पुलिस को स्वतंत्रता सेनानियों को निशाना बनाने के लिए भेजा गया था।

इसकी ओडिशा में अधिक प्रासंगिकता थी क्योंकि नेताजी ओडिशा के रहने वाले थे और बड़ी संख्या में स्वतंत्रता सेनानियों के नेताजी के साथ व्यक्तिगत संबंध थे। ब्रिटिश खुफिया ने माना था कि नेताजी ओडिशा तट पर उतर सकते हैं, जहां उनका खुलेआम स्वागत किया जाएगा।

यह मुंबई में वर्धा कार्यसमिति की बैठक और 8 अगस्त की कार्यसमिति की बैठक के बीच था। केंद्रीय सेना से राज्य पुलिस को लिखे गए एक गुप्त कार्यालय आदेश को भूपेंद्र कुमार बसु, जो तीस से कुछ अधिक आयु में ओडिशा में आरएसएस के प्रांत सर संघ चालाक थे, ने हरेकृष्ण महताब को दिया था, जो उस समय कांग्रेस कार्य समिति के सबसे कम उम्र के सदस्य थे। यह पत्र गाँधीजी को मुंबई में दिया गया था जिसने ब्रिटिश साम्राज्य के दोहरेपन और विश्वासघात को उजागर किया था। पत्र में कहा गया है कि पुलिस और उनकी खुफिया एजेंसी कांग्रेस नेताओं, स्वतंत्रता सेनानियों, उनकी गतिविधियों और उनके संपर्क में आने वाले व्यक्तियों पर कड़ी नजर रखे और किसी भी तरह से उन्हें बदनाम करने की कोशिश करे ताकि वे स्वीकार्यता खो दें। निर्देश था कि सभी तरीकों का उपयोग करके नेताओं, स्वतंत्रता सेनानियों को अपमानित करें और उन्हें बदनाम करें ताकि वे नेतृत्व करने की स्थिति में न रहें। यह वास्तव में एक धोखा था। एक तरफ खुले में वे कांग्रेस नेताओं से समर्थन की मांग करते हैं और पीठ पीछे वे इस प्रकार की दुष्टतापूर्ण गतिविधियों में लिप्त थे। यह पत्र गोवालिया टैंक मैदान में कार्यसमिति में रखा गया था, जहां कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक हुई थी। उस समय छोटे राज्य ओडिशा ने उस महान आंदोलन को चिंगारी प्रदान की थी, जिसे उचित रूप से अगस्त क्रांति, अगस्त

बिप्लब कहा जाता है। गांधीजी, कस्तूरबा और महादेव देसाई को पुणे में आगा खान महल में भेजा गया था और बाकी को चांद बीबी किला, अहमद नगर किले में कैद किया गया था।

कस्तूरबा ने पुणे में इस कारावास के दौरान अंतिम सांस ली। नेताजी ने अपने प्रसिद्ध रेडियो भाषण में देश को संबोधित करते हुए दो शब्द कहे थे जो आज भी गूंजते हैं। उन्होंने गांधीजी को "राष्ट्रपिता" के रूप में संबोधित किया था और "जय हिंद" कहकर अपना भाषण समाप्त किया था।

भारत छोड़ो आंदोलन के प्रस्ताव में "भारत से ब्रिटिश सत्ता की वापसी की मांग पर जोर दिया गया था", कहा गया था एक अस्थायी सरकार का गठन किया जाएगा। इसका प्राथमिक कार्य "भारत की रक्षा करना और साथ ही अपनी सभी सहयोगी शक्तियों के साथ अपनी कमान में सभी सशस्त्र और अहिंसक ताकतों के साथ आक्रामकता का विरोध करना, और खेतों और कारखानों में और अन्य जगह श्रमिकों के कल्याण और प्रगति को बढ़ावा देना जिनके लिए अनिवार्य रूप से सभी शक्ति और अधिकार होने चाहिए।" इसमें यह भी कहा गया कि अस्थायी सरकार एक संविधान सभा के लिए एक योजना विकसित करेगी जो सभी वर्गों के लोगों के लिए स्वीकार्य संविधान तैयार करेगी।

इस संकल्प के माध्यम से नेतृत्व की प्रतिबद्धता में बहुत स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि "यह संविधान संघीय होगा जिसमें संघात्मक इकाई के लिए स्वायत्तता का सबसे बड़ा उपाय होगा, और इन इकाइयों में अवशिष्ट शक्तियां निहित होंगी।"

हमने 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त की, लेकिन राष्ट्र को विभाजित किया गया। पाकिस्तान धार्मिक समुदायों के आधार पर बनाया गया था। भारत ने अपने संविधान के माध्यम से 1950 में खुद को एक लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया। चुनाव हुए जिसमें इस देश के प्रत्येक ' नागरिक को समान शक्तियाँ मिली। जब भी मुझे पुणे या उसके आसपास के क्षेत्र में जाने का मौका मिलता है, मैं अहमदनगर किले की यात्रा करता हूँ। यह मेरी पहली यात्रा के दौरान 1999-2000 में था। मुझे पता चला कि क़िला सैन्य

कार्यालय में बदल चुका था। सभी कमरों में फाइलों के ढेर रखे गए थे। जिन कमरों में मौलाना आजाद, सरदार पटेल, आचार्य नरेंद्र देव, मेरे पिता हरेकृष्ण महताब ढाई साल से अधिक समय तक रहे थे, वे सभी फाइलें, मेज, कुर्सियों से भरे हुए थे। 1942 से 1945 तक के इतिहास का कोई निशान नहीं था, सिवाय इसके कि उनके नाम दरवाजे पर बहुत छोटे अक्षरों में लिखे हुए थे।

उस डबल रूम को स्मारक बनाया गया था, जहां जवाहरलाल नेहरू रहे थे। दूसरों के बारे में कुछ भी नहीं था। कोई फोटोग्राफ नहीं, कुछ भी नहीं। मैंने विजिटर्स बुक को खोजा और अपनी टिप्पणी वहाँ लिखी। दिल्ली लौटने के बाद, मैंने इस पर अनुवर्ती कार्रवाई भी की और तब के रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नांडीस को एक पत्र लिखा। उस वक्त से बहुत कुछ बदल चुका है। मैंने बीच में दो बार अहमदनगर का दौरा किया है।

सेना कार्यालय को स्थानांतरित कर दिया गया है और इसे एक स्मारक में बदल दिया गया है। यही वह स्थान था जहाँ 1942 के शीर्ष नेताओं को अगस्त 1942 से 1945 तक एक साथ रखा गया था। भारतीय सीमाओं की ओर आई. एन. ए. के तेजी से आगे बढने ने भारतीयों के दिमाग को ऊर्जावान बना दिया था। 1945 में जापान के पतन के साथ, प्रगति में कोई संदेह नहीं था, लेकिन अंग्रेज बहुत जागरूक हो गए कि जिन भारतीय बलों के माध्यम से उन्होंने 200 वर्षों तक शासन किया था, वे अब उन्हें स्वीकार करने वाले नहीं हैं। नेताजी ने इसे ध्वस्त कर दिया है।

अंततः 1946 में मुंबई में नौसेना बल के विद्रोह ने अंग्रेजों को मजबूर कर दिया। वे हमारे पूर्वजों, स्वतंत्रता सेनानियों के पांच वर्षों के दृढ़ संकल्प, दृढ़ता और समर्पण थे जिन्होंने अंग्रेजों को शांतिपूर्वक भारत को सत्ता हस्तांतरित करने के लिए मजबूर किया।

ओडिशा में, पहली चिंगारी 17 अगस्त को थी, जब बड़ी संख्या में सत्याग्रहियों ने भद्रख जिले के भंडारीपोखारी में एक पुलिस स्टेशन को जला दिया था।

इसके बाद, लुनिया में विरोध प्रदर्शन किए गए जहां 7 लोग शहीद हो गए। 1942 के अगस्त 26 को बारी जाजपुर के कैपडा कलमाटिया में -लोग शहीद हुए थे। निमापाड़ा में विरोधात्मक प्रदर्शन के दौरान पुलिस द्वारा गोलीबारी में बीस लोग घायल हो गए थे, और 28 सितंबर को इरम में ब्रिटिश पुलिस द्वारा गोलीबारी में 29 सत्याग्रही मारे गए थे। शहीदों में एक महिला भी शामिल थी।

गांधीजी का जोरदार नारा, "अंग्रेज भारत छोड़ो," कोरापुट जिले में भी गूंजा। उन्होंने न तो गांधीजी को देखा था और न ही उन्हें व्यक्तिगत रूप से सुना था। वहाँ कोई रेडियो नहीं था, उन्होंने केवल सुना था कि उनके प्रिय बापू ने करने या मरने के लिए कहा है।

मथिली में, सभी आदिवासी सत्याग्रही शांतिपूर्वक प्रदर्शन कर रहे थे, जिस पर ब्रिटिश पुलिस ने हमला किया। कुछ मारे गए और कई गिरफ्तार किए गए। अविभाजित कोरापुट जिले में पुलिस की गोलीबारी में 24 लोग मारे गए थे और लगभग 100 लोग जेलों के अंदर और बाहर पुलिस की बर्बरता के शिकार हुए थे। फिर, ब्रिटिश ने नबरंगपुर जिले में ट्यूरी नदी के किनारे पापड़ाहांडी में जलियांवाला बाग नरसंहार को दोहराया था, जहां 24 अगस्त, 1942 को महात्मा गांधी के लगभग 5000 अनुयायी पुलिस कार्रवाई के शिकार हुए थे। इस गोलीबारी में 19 लोगों की मौत हो गई और 30 अन्य घायल हो गए। 21 अगस्त, 1942 को मालकानगिरी जिले की मथिली में भी पुलिस की बर्बरता देखी गई जब गोलीबारी में पांच निहत्थे लोग मारे गए। लगभग 2500 लोगों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ आवाज उठाने के लिए जेल भेजा गया था। लक्ष्मण नायक पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें फांसी पर लटका दिया गया। फांसी पर लटकाए जाने के दौरान, उन्होंने कुछ शब्द कहे थे "आज़ादी आएगी। बापू ने कहा है कि भारत मुक्त होगा। मैं एक स्वतंत्र भारत में फिर से पैदा होऊंगा"।

कई लोगों को प्रताड़ित किया गया था और 30 से अधिक को ब्रिटिश सरकार ने ढेंकनाल, नयागढ़, नीलगिरी और तालचर जैसे रियासतों में मृत्युदंड दिया गया था। विश्व युद्ध के दौरान 1939 में आदिवासियों के खिलाफ एक और जघन्य अपराध किया गया था जब ब्रिटिशर्स अपने युद्ध के लिए

सुंदरगढ़ जिले से आदिवासियों की भर्ती करना चाहते थे, जब सुंदरगढ़ के आदिवासी लोगों ने विरोध किया तो उन्हें घेर लिया गया और गोली मार दी गई। लोग कहते हैं कि 400 से अधिक आदिवासी लोग ब्रिटिश गोलियों के शिकार हो गए।

भारत में ब्रिटिश शासन को चुनौती देने वाले भारत छोड़ो आंदोलन का संकल्प नकारात्मक नहीं था। बल्कि इसमें कहा गया है कि "भारत के अविच्छेद्य स्वतंत्रता और स्वाधीनता के अधिकार को साबित करने के लिए, सबसे व्यापक स्तर पर अहिंसक आंदोलन की शुरुआत की जानी चाहिए, ताकि देश शांतिपूर्ण संघर्ष के अंतिम बीस वर्षों में जमा की गई सम्पूर्ण गैर-हिंसक शक्ति का उपयोग कर सके। इस तरह के संघर्ष को अनिवार्य रूप से गांधीजी के नेतृत्व में होना चाहिए और समिति उनसे नेतृत्व करने और उठाए जाने वाले कदमों में देश का मार्गदर्शन करने का अनुरोध करती है"।

इसने लोगों को यह भी निर्देश दिया कि इस आंदोलन में भाग लेने वाले प्रत्येक पुरुष और महिला को अपने लिए काम करना चाहिए। प्रत्येक भारतीय जो स्वतंत्रता चाहता है और उसके लिए प्रयास करता है, उसे अपना स्वयं का मार्गदर्शक होना चाहिए जो उसे उस कठिन मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है जहां कोई विश्राम स्थान नहीं है और जो अंततः भारत की स्वतंत्रता और मुक्ति की ओर ले जाता है। और इसने तय किया "जब सत्ता आती है तो सत्ता अकेले कांग्रेस के लिए नहीं होगी लेकिन यह भारत के सभी लोगों की होगी"। ऐसी प्रतिबद्धता थी जो उस संकल्प में निहित थी जो हमारे गणतंत्र का मैग्ना कार्टा बन गया ।

आज हम भारत छोड़ो आंदोलन के 75वें वर्ष का जश्न मना रहे हैं, जो भारत के लोगों के स्वतंत्रता के लिए अटूट आग्रह को प्रदर्शित करता है। पांच वर्ष बाद भारत स्वतंत्रता का 75वां वर्ष मना रहा होगा । 1942 से 1947 तक के पांच साल जैसा कि मैंने पहले कहा था कि तपस्या के पांच साल थे। 2017 से 2022 तक के पांच वर्ष इस देश से गरीबी, अज्ञानता, सांप्रदायिकता, आतंकवाद, कुपोषण को दूर करने के हमारे प्रयास का वर्ष होगा। यह हमारे देश को महान, समृद्ध बनाने के लिए

09.08.2017

विकास के लिए प्रतिबद्ध होने और एक सकारात्मक पंक्ति में स्वयं को संकल्पित करने का समय है जहां इस देश के प्रत्येक नागरिक को लगेगा कि यह देश उनका है।

09.08.2017

[हिन्दी]

माननीय अध्यक्ष : कुछ अन्य माननीय सदस्यों ने इस महत्वपूर्ण विषय पर बोलने की अनुमति मांगी थी, आप सभी जानते हैं कि समय का अभाव है। मैं जानती हूं कि आप सभी के भाव इसमें साथ हैं, इसलिए मैं इन सभी के नाम बोलकर, इसमें सम्मिलित कर देती हूं। श्री तारिक अनवर, श्री प्रेम सिंह चन्दूमाजरा, श्री जय प्रकाश नारायण यादव, डा. अरुण कुमार, श्री उपेन्द्र कुशवाहा, श्री ई. टी. मोहम्मद बशीर, श्री कौशलेन्द्र कुमार, श्री सी.एन.जयदेवन, श्री प्रेम दास राई, श्री विजय कुमार हाँसदाक, कुंवर हरिवंश सिंह, श्री जोस के. मणि, श्री असादुद्दीन ओवैसी और श्री भगवंत मान जी, सभी छोटे-छोटे दलों के जितने भी लीडर्स हैं, मैंने आपको एलाऊ किया था कि आप अपने भाषण सभापटल पर ले कर सकते हैं, अगर किया हो तो भी स्वागत है, नहीं तो मैं आप सभी की भावनाओं को इसमें सम्मिलित करती हूं।

अब मैं आपके सामने एक संकल्प पढ़ती हूं :

"आज के दिन 75 वर्ष पूर्व सन् 1942 में, हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं सभी स्वतंत्रता सेनानियों ने सम्पूर्ण स्वराज्य की संकल्पना साकार करने के लिए अंग्रेजो भारत छोड़ो आन्दोलन का उद्घोष किया। 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। सन् 1942 से सन् 1947 के इन पांच सालों में, पिछले अनेकानेक वर्षों से चलने वाले स्वतंत्रता संग्राम का महान संकल्प सिद्ध हुआ। आज 9 अगस्त, 2017 को भारत छोड़ो आन्दोलन के 75वें साल में हम संकल्प लेते हैं कि सशक्त, समृद्ध, स्वच्छ तथा वैभवशाली भारत के निर्माण के लिए एवं भ्रष्टाचारमुक्त, सुशासनयुक्त, विज्ञान एवं तकनीक में उन्नत, सबके विकास के लिए संकल्पित, सद्भाव एवं राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत, लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति दृढ़संकल्पित राष्ट्र की संकल्पना को फलीभूत करने के लिए हम सतत प्रतिबद्ध एवं समर्पित रहेंगे। 125 करोड़ देशवासियों के हम सभी जनप्रतिनिधि यह संकल्प करते हैं कि सभी देशवासियों को साथ लेकर, आज से पांच साल बाद आने वाले स्वतंत्रता के 75वें

वर्ष में यानी सन् 2022 तक, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तथा सभी स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों के भारत का निर्माण करने के लिए राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करेंगे।"

मुझे आशा है कि सभा इस संकल्प पर सहमत है।

अनेक माननीय सदस्य: जी, हां।

माननीय अध्यक्ष : एक प्रकार से हमने पूरे समाज के लिए अपने भाव उद्धृत किए, अब जैसा मैंने शुरू में कहा, दुख तो है ही, मगर कभी-कभी काम भी करना ही पड़ता है।

———————

09.08.2017

अपराह्न 1.24 बजे

निधन संबंधी उल्लेख

[हिन्दी]

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, मुझे सभा को अपने साथी श्री सांवर लाल जाट के दुखद निधन की सूचना देनी है।

श्री सांवर लाल जाट राजस्थान के अजमेर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले वर्तमान सदस्य थे। वह नवम्बर, 2014 से जुलाई, 2016 तक जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय में राज्य मंत्री रहे। श्री सांवर लाल जाट 16वीं लोक सभा के दौरान जल संसाधन समिति और वित्त समिति के सदस्य रहे। इससे पूर्व वह राजस्थान विधान सभा के पांच बार सदस्य रहे। उन्होंने राजस्थान सरकार में कैबिनेट मंत्री और राज्य मंत्री के रूप में भी कार्य किया। श्री सांवर लाल जाट का 9 अगस्त 2017 को 62 वर्ष की आयु में दिल्ली में निधन हो गया । हम इस मित्र के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं तथा मैं अपनी एवं सभा की ओर से शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूँ। अब सभा दिवंगत आत्मा के सम्मान में कुछ देर मौन खड़ी रहेगी।

अपराह्न 1.25 बजे

(तत्पश्चात सदस्यगण थोड़ी देर मौन खड़े रहे।)

09.08.2017

* प्रश्नों के लिखित उत्तर

(तारांकित प्रश्न संख्या 321 से 340

अतारांकित प्रश्न संख्या 3681 से 3910)

* प्रश्नों और उनके उत्तरों के लिए ग्रंथालय में रखी गई वाद-विवाद के हिन्दी संस्करण की मास्टर-प्रति का संदर्भ लें। प्रश्नों और उनके उत्तरों के संबंध में अधिक जानकारी हेतु आप इस लिंक पर जाए। https://sansad.in/ls/hi/questions/questions-and-answers

इस लिंक के खुलने के बाद लोक सभा का चयन करें, फिर सत्र का चयन करें तत्पश्चात फिल्टर में जाकर वाद-विवाद की तारीख का चयन करने के पश्चात् इसे लागू करें।

09.08.2017

[अनुवाद]

माननीय अध्यक्ष: सभा गुरुवार, 10 अगस्त, 2017 को पूर्वाह्न 11 बजे समवेत होने के लिए स्थगित होती है।

<u>अपराह्न 1.26 बजे</u>

तत्पश्चात लोक सभा गुरुवार, 10 अगस्त, 2017 / 19 श्रावण, 1939 (शक)

के पूर्वाह्न ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।

———————

इंटरनेट

लोक सभा की सत्रावधि के प्रत्येक दिन के वाद-विवाद का मूल संस्करण, अंग्रेजी संस्करण और हिन्दी संस्करण भारतीय संसद की निम्नलिखित वेबसाइट पर उपलब्ध हैं*:*

https://sansad.in/ls

लोक सभा की कार्यवाही का सीधा प्रसारण

लोक सभा की संपूर्ण कार्यवाही का संसद टी.वी. चैनल पर सीधा प्रसारण किया जाता है। यह प्रसारण सत्रावधि में प्रतिदिन प्रातः 11.00 बजे लोक सभा की कार्यवाही शुरू होने से लेकर उस दिन की कार्यवाही समाप्त होने तक होता है।

© 2017 प्रतिलिप्यधिकार लोक सभा सचिवालय

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों (सत्रहवां संस्करण) के नियम 379 और 382 के अन्तर्गत प्रकाशित